संस्करण-24

वर्ष:2016-17

भारत सरकार

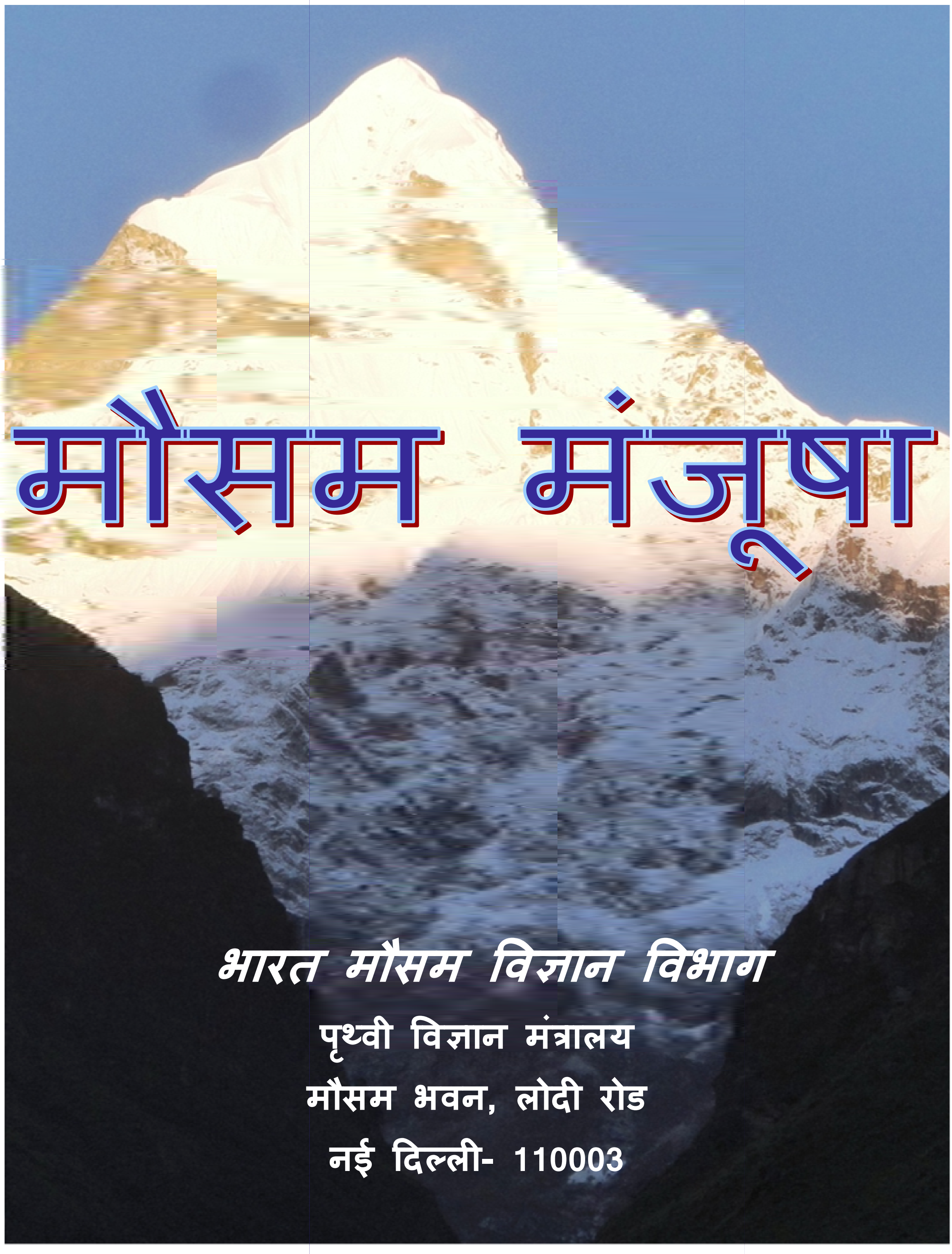

मौसम मंजूषा

भारत मौसम विज्ञान विभाग

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय

मौसम भवन, लोदी रोड

नई दिल्ली- 110003

हार्दिक बधाई

महामहिम राष्ट्रपति महोदय से पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ एस. के.पेशिन वैज्ञानिक"जी" मौसम मंजूषा -22 में प्रकाशित उनके लेख "अंटार्कटिका पर ओज़ोन" को राजभाषा विभाग द्वारा हिंदीतर भाषी वर्ग में '*राजभाषा गौरव सम्मान*' *(तृतीय)* से सम्मानित किया गया ।

महामहिम राष्ट्रपति महोदय से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री रामहरि शर्मा,वैज्ञानिक सहायक |मौसम मंजूषा -22 में प्रकाशित उनके लेख "वायुमंडल की सैर" को राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी भाषी वर्ग में '*राजभाषा गौरव सम्मान*' *(तृतीय)* से सम्मानित किया गया ।

भारत सरकार

भारत मौसम विज्ञान विभाग

संस्करण-24 वर्षः2016-17

मौसम–मंजूषा

भारत मौसम विज्ञान विभाग

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय

मौसम भवन, लोदी रोड

नई दिल्ली-110003

आवरण पृष्ठ- नीलकंठ पर्वत, बद्रीनाथ, उत्तराखंड

(छायाकार : श्री कैलाश भिंडवार, मौसम विज्ञानी- "बी")

मौसम मंजूषा

भारत मौसम विज्ञान विभाग

की

विभागीय हिंदी गृह पत्रिका

प्रमुख संरक्षक

डॉ. के. जे रमेश

मौसम विज्ञान के महानिदेशक

संरक्षक

श्री एस. के राय भौमिक

मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक (प्रशासन एवं भंडार)

संपादक

सुश्री रेवा शर्मा

वरिष्ठ हिंदी अधिकारी

सह संपादक

श्रीमती सरिता जोशी

हिंदी अधिकारी

टंकण सहयोग

श्री उमाशंकर

उच्च श्रेणी लिपिक

पत्र व्यवहार का पता

संपादक - ' मौसम मंजूषा ', भारत मौसम विज्ञान विभाग

हिंदी अनुभाग, कक्ष सं- 612, उपग्रह मौसम भवन

लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

प्रकाशक

हिंदी अनुभाग, भारत मौसम विज्ञान विभाग

(मौसम मंजूषा में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण रचनाकार के हैं । भारत मौसम विज्ञान विभाग का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।)

डॉ हर्ष वर्धन
DR. HARSH VARDHAN

मंत्री
विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान
भारत सरकार
नई दिल्ली- 110001
MINISTER
SCIENCE & TECHNOLOGY AND EARTH SCIENCE
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI – 110001

जनवरी 2017

संदेश

भारत मौसम विज्ञान विभाग की हिंदी गृह पत्रिका ‘’मौसम-मंजूषा’’ के 24वें संस्करण को देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है । विभाग द्वारा किए जा रहे वैज्ञानिक एवं तकनीकी किस्म के कार्यों को हिंदी भाषा में बखूबी व्यक्त किया गया है । मैं मानता हूँ कि ज्ञान विज्ञान के विषयों को हिंदी भाषा में सरलता के साथ अभिव्यक्त किया जा सकता है और यह इस पत्रिका ने प्रमाणित किया है । यह जानकर मुझे और भी खुशी हुई कि ‘’मौसम-मंजूषा’’ के दो लेखों को महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा 14 सितम्बर, 2016 को हिंदी दिवस के अवसर पर ‘राजभाषा गौरव’ पुरस्कार प्रदान किया गया । हार्दिक बधाई ।

मैं आशा करता हूँ ‘’मौसम-मंजूषा’’ भविष्य में भी इसी प्रकार नए कीर्तिमान स्थापित करती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित

(डॉ. हर्ष वर्धन)

वाई एस चौधरी
Y S CHOWDARY

राज्य मंत्री
विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान
भारत सरकार
नई दिल्ली- 110001
MINISTER OF STATE FOR
SCIENCE & TECHNOLOGY AND EARTH SCIENCE
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI - 110001

जनवरी 2017

संदेश

''मौसम-मंजूषा'' के 24वें संस्करण के प्रकाशन पर बहुत-बहुत बधाई । हिंदी गृह पत्रिका ''मौसम-मंजूषा'' में साहित्य की विभिन्न विधाएं देखने को मिल रही हैं । हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन को भी इस मंच से प्रोत्साहन मिल रहा है । मुझे खुशी है कि विभाग के लोग हिंदी में अपनी रचनाएं लिख रहे हैं ।

महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा ''मौसम-मंजूषा'' के लेखों को 'राजभाषा गौरव' पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाना हम सबके लिए गौरव की बात है ।

मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ ।

हार्दिक शुभकामनाएं

वाई. एस. चौधरी

(वाई.एस चौधरी)

डॉ. एम राजीवन
Dr. M. RAJEEVAN

सचिव
भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
पृथ्वी भवन , लोदी रोड, नई दिल्ली
110003

SECRETARY
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF EARTH SCIENCES
PRITHVI BHAVAN, LODHI ROAD,NEW DELHI - 110003

दिसंबर 2016

संदेश

भारत मौसम विज्ञान विभाग की विभागीय हिंदी गृह पत्रिका ''मौसम-मंजूषा'' के 24वें संस्करण के प्रकाशन के अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई । भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रचार प्रसार एवं उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करते हुए विभाग आगे बढ़ रहा है । जनता को दी जाने वाली मौसम से जुड़ी विभिन्न सेवाएं जनता की भाषा में दी जा रही हैं । यही ज्ञान विज्ञान की सार्थकता है कि वह जन जन तक उनकी भाषा में पहुँचे ।

मुझे खुशी है कि महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्‌वारा ''मौसम-मंजूषा'' में प्रकाशित लेखों ''अंटार्कटिक में ओज़ोन'' और ''वायुमंडल की सैर'' को ''राजभाषा गौरव पुरस्कार'' (तृतीय) प्रदान किए गए । हम सबके लिए यह अत्यंत गर्व की बात है ।

हार्दिक बधाई

एम. राजीवन

(डॉ. एम. राजीवन)

महानिदेशक
भारत मौसम विज्ञान विभाग
मौसम भवन, लोदी रोड
नई दिल्ली-110003

महानिदेशक महोदय की कलम से

भारत मौसम विज्ञान विभाग के स्थापना दिवस के अवसर पर ''मौसम-मंजूषा'' के नवीन संस्करण के प्रकाशन पर बहुत-बहुत बधाई । मुझे खुशी है कि विभाग के लोग हिंदी के लेखन कार्य में उत्साहपूर्वक रूचि ले रहे हैं और मौसम विभाग द्वारा किए जा रहे वैज्ञानिक और तकनीकी किस्म के कार्यों को भी हिंदी में लिखने का कार्य कर रहे हैं । मैं सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ ।
मुझे खुशी है कि वर्ष 2014 से ''मौसम-मंजूषा'' को लगातार महामहिम राष्ट्रपति जी के करकमलों से पुरस्कार मिल रहा है ।

अनेकानेक शुभकामनाएं

के. जे. रमेश

(डॉ. के. जे. रमेश)

मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक
(प्रशासन एवं भंडार)
मौसम भवन, लोदी रोड
नई दिल्ली-110003

संदेश

''मौसम-मंजूषा'' का 24वाँ संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत है । मुझे यह देखकर बहुत खुशी हो रही है कि हमारे विभाग के हिंदी भाषी के साथ साथ हिंदीतर भाषी लोग भी हिंदी के लेखन कार्य में सक्रिय भूमिका निभाने लगे हैं । हिंदी निस्संदेह एक ऐसी सम्पर्क भाषा है जिससे पूरा देश जुड़ा हुआ है । गुरूदेव रविन्द्रनाथ ठाकुर, बंकिम चंद्र, शरत चंद्र या विमल मित्र केवल बंगाल तक सीमित नहीं रहे तो इसकी वजह यही रही कि हिंदी भाषा में अनूदित इनके साहित्य को पूरे देश ने पढ़ा । हमारे देश के साहित्यकार चाहे वे दक्षिण से हों या उत्तर से , पश्चिम से या पूर्व से किंतु हिंदी में अनूदित उनके साहित्य के माध्यम से वे पूरे देश के साहित्यकार हो जाते हैं । इसी प्रकार भारत की दूसरी भाषाओं में अनुवाद होने से हिंदी साहित्य देश के कोने कोने तक पहुँच जाता है। ज्ञान की ज्योति से पूरा देश जगमगा उठता है ।

मैं ''मौसम-मंजूषा'' के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ ।

हार्दिक शुभकामनाएं

(एस.के.राय भौमिक)

संपादकीय

एक बार फिर बंगाल की खाड़ी में अति भीषण तूफान उठा और भारत के पूर्वी तट से टकराया.......एक बार फिर तटीय आंध्रप्रदेश, उत्तरी तमिलनाडु और उसके समीपवर्ती दक्षिणी कर्नाटक के अंदरूनी भागों को भिगो कर चला गया तूफान .... एक बार फिर मौसम विभाग के समक्ष चुनौतीपूर्ण परिस्थितियाँ निर्मित हुई और एक बार फिर मौसम विज्ञानियों के समक्ष मुश्किल घड़ी आ खड़ी हुई...... एक बार फिर उपग्रह, रेडार की तीक्ष्ण गिद्धदृष्टि को परखने की घड़ी आई और इस बार तीक्ष्ण गिद्धदृष्टि थी अति भीषण चक्रवातीय तूफान 'वरदा' के ऊपर। वरदा के बनने की स्थितियाँ उसके विकसित होने और उसकी तीव्रता, प्रचंडता, मार्ग और उसकी एक एक हरकत पर भारत मौसम विज्ञान विभाग के उपग्रह व रेडार ने पैनी नज़र बनाए रखी। परिणामस्वरूप सटीक पूर्वानुमान और इस अति भीषण चक्रवात के और उसके पथ प्रदर्शित करते हुए चित्र इनसेट 3 डी से मिले, रेडार से इमेजिज़ मिली। दक्षिणी अंडमान सागर में एक अति भीषण चक्रवातीय तूफान बन रहा है इसकी जानकारी इसके तट से टकराने से नौ दिन पूर्व ही मिल गई।

आपदाएं तो इस पृथ्वी पर कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में आती ही हैं उन पर कोई वश नहीं। लेकिन उन आपदाओं का निडरता के साथ सामना करना और उसके द्वारा होने वाले नुकसान में निरंतर कमी लाना, यही उद्देश्य है इनके पूर्वानुमान का। जितना बड़ा भीषण तूफान उतनी ही बड़ी परीक्षा। अंततः तूफान गुज़र गया।

कठिन से कठिन परिस्थितियों में काम करने का जज्बा, कर्तव्यनिष्ठा, प्रकृति के दाँव पेच समझने के लिए निरंतर हो रहे शोध कार्य, कुल मिलाकर यही संकेत देते हैं कि मानव ने कभी हार नहीं मानी। उसने अपनी अनंत यात्रा जारी रखी है। फिर वह यात्रा भारत वर्ष की भाषा हिंदी को उसका गौरव दिलाने की ही क्यों न हो। वर्ष 2016 में मौसम मंजूषा में प्रकाशित दो वैज्ञानिक लेखों को हिंदी दिवस के अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा पुरस्कार मिलना एक ऐसा ही मील का पत्थर है। देश की राजभाषा में वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन करना कोई सरल कार्य तो नहीं है, लेकिन यह काम निरंतर चल रहा है। विमानन के प्रचालन में मौसम पूर्वानुमान से जुड़ा लेख हो या

फिर डार्क मैटर,विभाग के कार्मिक सजग होकर देश की भाषा हिंदी को उन्नति की ओर ले जा रहे हैं। हिंदी का प्रचार प्रसार ऐसे छोटे छोटे कार्यों द्वारा विभाग में हो रहा है । इसी की एक छोटी सी झलक है मौसम मंजूषा का 24वें संस्करण। तो लीजिए पढ़िए, गुनिए और बताएँ मौसम मंजूषा का यह संस्करण आपको कैसा लगा । इसकी प्रतिक्रिया पत्र के माध्यम से मिले तो अच्छा लगेगा और साथ ही हमें पत्रिका को और बेहत्तर बनाने के लिए मार्गदर्शन भी मिलेगा। तूफान में भी आगे बढ़ने का जज़्बा जिस विभाग में हो तो वह क्या नहीं कर सकता।

(रेवा शर्मा)

अनुक्रमणिका

• *वैज्ञानिक व तकनीकी बौछार*	
विमानन सुरक्षा के लिए मौसम सेवाएं ❖ *आर. बी. एस. नारायण*	11
रेडार को जानें ❖ *के. के. देवांगन*	23
आपदा प्रबंधन और मौसम पूर्वानुमान ❖ *पोषण लाल देवांगन*	27
डार्क मैटर ❖ *अशोक कुमार कश्यप*	33
विमानन मौसम विज्ञान ❖ *जगदम्बा प्रसाद*	38
• *साहित्यिक बहार*	
सभ्यता का रहस्य ❖ प्रेमचंद	48
• *यादों के झरोखे से*	
घाघ की कहावतें ❖ *पी. प्रसाद*	54
द्रव्यों की व्याख्या ❖ *जयानंद भट्ट*	58
• *काव्य फुहार*	
स्वामी विवेकानंद ❖ *सुमन चट्टोपाध्याय*	60
करगिल के वीर ❖ *पूनम सिंह*	60
मेट्रो रेल ❖ *कालूराम शर्मा*	61
मैं गीत सुनाता हूँ ❖ नीलोत्पल चतुर्वेदी	62
बदरी ❖ *अवधेश प्रसाद*	62
अपनी बात ❖ *स्वप्ना मित्रा*	63
'मैं गधा हूँ' ❖ *आर.बी.एस नारायण*	64
'देश में मेरे गणतंत्र है' ❖ *आर.डी. मेश्राम*	64
संस्कृत भाषा ❖ *मिलन प्रसाद भट्टाचार्य*	65
भर दे हुँकार ❖ *अपूर्वा सिंहरौल*	66
नन्हा पाखी ❖ *सुषमा सिंह*	67
सातवाँ पे कमीशन ❖ *कृष्ण कुमार गुप्ता*	68
याद बहुत आओगे ❖ सरिता जोशी	69
• *यात्रा वृत्तांत*	
श्रवणबेलगोला, बेलूर और हेलबेड ❖ डॉ के. वी बालसुब्रहमण्यन	70
प्लीज टॉक इन ऑफिशियल लैंग्वेज ❖ एम. अनुराधा	75
• *सामान्य लेख*	
जीवन की सार्थकता ❖ *एम.आर. कालवे*	86
उन्हें कहें, जाने के लिए ❖ *प्रकाश चिंचोले*	93
मच्छरों का महासम्मेलन ❖ *रेवा शर्मा*	95
सफेद शेर की कहानी- मेरी जुबानी ❖ *डॉ.गुरुदत्त मिश्र*	98
• *हिंदी दिवस रिपोर्ट*	101
• *खास खबर*	128
• *संसदीय राजभाषा समिति - निरीक्षण*	130
• *आपकी पाती मिली*	138

वैज्ञानिक व तकनीकी बौछार

विमानन सुरक्षा के लिए मौसम सेवाएं

❖ आर. बी. एस. नारायण

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। नए-नए लोगों से मिलना, देशाटन पर जाना, नवीनतम खोज करना आदि जैसी प्रवृत्ति उसमें सदैव से ही रही है। इसी क्रम में परिवहन मानवीय जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है । सभ्यताओं के विकास के लिए आवश्यक व्यापार को यह सक्षम बनाता है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर लोगों, जानवरों और माल की आवाजाही के लिए परिवहन आवश्यक है । परिवहन की विधि देखें तो वायु, रेल, सड़क, पानी, केबल, पाइप लाइन और अंतरिक्ष आदि कई प्रकार के आवागमन के साधन इसमें शामिल हैं। अनादिकाल से मानव बैल गाड़ी, घोड़ा गाड़ी, रिक्शा, साइकिल,कार,बस, ट्रक,रेल गाड़ी, हवाई जहाज़, लिफ़्ट, ट्रॉली, ट्राम, मेट्रो, जल यान, नाव, राकेट इत्यादि संसाधनों का उपयोग कर अपनी परिवहन की जरूरतों को पूरा करता आया है ।

वायु परिवहन

जहाँ तक वायु परिवहन का सवाल है, हवाई जहाज ने तो यात्रा को और भी अधिक सुखद व तीव्र बना दिया है। आज हम आकाश में उड़ान भर सकते हैं तथा बहुत ही कम समय में एक शहर से दूसरे शहर तक पहुँच सकते हैं। हवाई जहाज के माध्यम से हम एक हजार किमी या इससे भी अधिक की दूरी मात्र एक-दो घंटे के समय में तय कर सकते हैं। इसमें यात्रा इतनी सुखद व आरामदायक होती है कि हमें थकान का आभास ही नहीं होता। निस्संदेह विमान जैसे यातायात के नवीनतम साधनों को विकसित कर मनुष्य ने यात्रा को अत्यंत सुखद व रोमांचकारी बना दिया है। यात्रा में लगने वाले वर्षों के समय को उसने दिनों व घंटों में सीमित कर दिया है । यातायात के नीवनतम साधनों ने विश्व को एक छोटे से गाँव के रूप में परिवर्तित कर दिया है। आज हमें वास्तविक दूरी का आभास ही नहीं होता है। सबसे तेज गति और किसी भी प्रकार की भौगोलिक बाधाएं पार करने की क्षमता इस दृष्टि से आज वायु परिवहन सबसे ज्यादा पसंदीदा यातायात का साधन है। यात्री एवं माल परिवहन के अलावा देश की रक्षा के लिए भी वायु यातायात का विकास अनिवार्य है। आपातकाल में वायु यातायात की सुविधा निर्णायक भूमिका निभाती है। हिमालय के सुदूरवर्ती क्षेत्रों तक या फिर दूर दराज के क्षेत्र तक जल्द से जल्द पहुँचना हो, वायु यातायात का ही सहारा लिया जाता

❖ मौसम कार्यालय -मुंबई में मौसम विज्ञानी "ए" के पद पर कार्यरत हैं

है। वायु परिवहन द्वारा डाक सामग्री भी तीव्रता से गंतव्य तक पहुंचायी जा सकती है। भारत जैसे भौगोलिक दृष्टि से विविधता वाले तथा विशाल देश में वायु परिवहन जैसे तीवग्रामी साधन का महत्व स्वतः स्पष्ट है। पश्चिमी देशों एवं दक्षिणी पूर्व एशिया के बीच संगम-स्थल की भांति स्थित हमारा देश वायु परिवहन की दृष्टि से विश्व में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

वायु परिवहन में आने वाली समस्याएं

हवाई जहाज को परिवहन का सबसे सुरक्षित जरिया माना जाता है। लेकिन फिर भी हवाई यात्रा में घबराहट तो बनी ही रहती है, क्योंकि कभी कभार मौसम इस तरह से जान सांसत में डाल देता है । मौसम अच्छा हो तो हवाई यात्रा के दौरान ऐसा लगता है जैसे जमीन पर ही आराम से कुर्सी पर बैठे हैं । बस थोड़ी आवाज आती रहती है । लेकिन अगर मौसम खराब हो तो हवाई यात्रा सांस फूला देती है । आए दिन सैकड़ों हवाई जहाज खराब मौसम का सामना करते हैं । आम तौर पर बादलों के पार जाने या ऊंचाई पर अचानक तूफान का सामना होने पर विमान भी हिचकोले खाने लगता है। कभी कभार यह हिचकोले इतने ताकतवर होते हैं कि यात्रियों को अपना अंत दिखाई पड़ने लगता है । ट्रेनिंग में पायलटों को सिखाया जाता है कि वे बहुत खराब मौसम या ताकतवर तूफान में घुसने का जोखिम न उठाएं तथा उड़ान से पहले मौसम विभाग से संपर्क कर जानकारी ले लें । लिहाजा जब कभी हवाई यात्रा के दौरान आप भी हिचकोलों से घबरायें, तो इस बात को याद रखें कि अनुभवी पायलट, बेहतरीन मशीन और मौसम विभाग से प्राप्त सेवा आपको सुरक्षित मंजिल तक पहुंचा देगी । आपकी सुरक्षित यात्रा हेतु, मौसम विभाग के अधिकारी एक जांबाज़ सीमा सुरक्षा बल के सिपाही की तरह चौबीसों घंटे, रात और दिन चील की तरह मौसम के मिजाज पर अपनी पैनी नजर एवं निगरानी रखने का काम करते हैं । इसकी जानकारी समय समय पर हर विमान चालाक को बताने की व्यवस्था करते हैं ।

वायु परिवहन में बाधा डालने वाले तत्वों पर विचार किया जाए तो पहली समस्या है हवाई जहाज में तकनीकी खराबियां । इसके लिए उच्चतम कोटि के उपकरण एवं अनुभवी अभियांत्रिकी का उपयोग कर इसका निवारण किया जा सकता है। दूसरी बाधा है मानवीय गलतियां । उसे भी, अच्छी तरह से प्रशिक्षित एवं अनुभवी कर्मचारियों की तैनाती द्वारा सुलझाया जा सकता है । तीसरी समस्या आजकल आतंकवाद की है जिसे प्रशिक्षित सुरक्षाबल एवं उच्च तकनीक का उपयोग कर काबू पाया जा सकता है। अंत में एक ऐसी समस्या है जो इंसान के बस में नहीं है, वह है ख़राब मौसम । ऐसा देखा गया है की करीब करीब 80 से 90 प्रतिशत हवाई दुर्घटनाएं खराब मौसम के चलते ही हुई हैं । अब क्योंकि इंसान प्रकृति पर

विजय तो नहीं पा सकता , इसलिए हमारे वायु परिवहन को मौसम के अनुरूप चलाने में ही समझदारी है । हर प्रस्थान या आगमन के पहले मौसम पूर्वानुमान एवं वर्तमान मौसम का पूरा अभ्यास करना जरुरी हो जाता है ताकि हमारे हवाई यातायात सुरक्षित हों ।

भारतीय नागरिक उड्डयन इतिहास

15 अक्टूबर 1932 को भारतीय विमानन इतिहास का वह दिन था जिस दिन टाटा एयरलाइन ने (जो बाद में एयर इंडिया बनी) अपनी पहली उड़ान भरी थी एवं इस वर्ष 2016 में हम भारतीय विमानन इतिहास की 84वीं वर्षगांठ मना रहे हैं । भारत में वायु परिवहन की शुरुआत सन 1911 में हुई, जब इलाहाबाद से नैनी के बीच विश्व की सर्वप्रथम विमान डाक सेवा आरंभ की गई। 1933 में इंडियन नेशनल एयरवेज कंपनी की स्थापना हुई। 1953 में सभी वैमानिक कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण कर उन्हें दो नवनिर्मित निगमों के अधीन रखा गया । 24 अगस्त, 2007 को सार्वजनिक क्षेत्र की विमानन कंपनियाँ एयर इंडिया एवं इंडियन एयरलाइन्स का विलय हो गया। कंपनी का नाम “एयर इंडिया”रखा गया। भारत में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा प्राधिकरण जीवीके / जीएमआर जैसी कम्पनी के साथ मिलकर देश के चार बड़े हवाई अड्डों- मुम्बई, कोलकाता, दिल्ली और चेन्नै का प्रबंधन करता है जबकि राष्ट्रीय हवाई अड्डा प्राधिकरण 86 देशी हवाई अड्डों और रक्षा हवाई अड्डों पर असैनिक उड़ान पट्टियों का प्रबंध करता है। नागर विमानन के विकास और नियमन के लिए राष्ट्रीय नीतियां तथा कार्यक्रम तैयार करने, नागरिक हवाई यातायात के विकास एवं विस्तार के लिए योजनाएं बनाने और उन्हें लागू करने की जिम्मेदारी नागर विमानन मंत्रालय एवं नागर विमानन महानिदेशालय की है। इसके कार्यों में हवाई अड्डा सुविधाओं, हवाई यातायात सेवाओं के अलावा उड्डयन सुरक्षा, विमानों से यात्रियों तथा सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने आदि कार्यों की देख-रेख भी शामिल हैं। भारतीय अंतरराष्ट्रीय विमानपतन प्राधिकरण तथा राष्ट्रीय विमानपतन प्राधिकरण के विलय के परिणामस्वरूप 1 अप्रैल, 1995 को भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण अस्तित्व में आया,जो भारतीय वायु सीमा क्षेत्र में वायु यातायात के प्रभावी नियंत्रण हेतु वैमानिक संचार सेवाएं तथा सुरक्षित व कार्यक्षम वायु यातायात सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए उत्तरदायी है।

विमानन मौसम सेवा के उद्देश्य एवं नेटवर्क

राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय विमानन सेवा को मौसम संबंधी जानकारी एवं पूर्वानुमान देने हेतु भारतीय मौसम विज्ञान विभाग राष्ट्रीय अधिकृत सेवा प्रदाता है। डब्लूएमओ (WMO) और

इकाओ (ICAO) के दिशानिर्देशों के अनुसार यह सेवा प्रदान की जाती हैं। इन सेवाओं का उद्देश्य सुरक्षा और नेविगेशन की दक्षता में योगदान करने के लिए है । यह उद्देश्य ऑपरेटरों, विमानन यातायात सेवा (ATC), एयरफील्ड प्रबंधन और अन्य उपयोगकर्ता एजेंसियों को आवश्यक मौसम की जानकारी उपलब्ध कराने के द्वारा हासिल की जाती है ।

इकाओ (ICAO) के अठारह अनुलग्नक में से अनुबंध 3 के अन्तर्गत निर्धारित मानकों के अनुसार मौसम सेवा प्रदान की जाती हैं। भारत में हाल के कुछ सालों में निजी एयरलाइन्स के आने के बाद विमानन उद्योग में बड़ा उछाल देखा गया। भारतीय घरेलू विमानन क्षेत्र के बड़े खिलाड़ी एयर इंडिया जैसे राष्ट्रीय वाहक को अन्य निजी ऑपरेटर जेट एयरवेज, एयर इंडिगो, इंडिगो एयरलाइन्स, गो एयर आदि के आने बाद प्रतिस्पर्धा करनी पड़ी ।

भारत में स्थित कुछ मुख्य हवाईअड्डे

अन्ना अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	चेन्नै	तमिलनाडु
इन्दिरा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	नई दिल्ली	दिल्ली
कालीकट अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	कोझीकोड	केरल
कोचीन अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	कोच्चि	केरल
गोपीनाथ बारडोली अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	गुवाहटी	असम
चौधरी चरण सिंह अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	लखनऊ	उत्तर प्रदेश
छत्रपति शिवाजी अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	मुम्बई	महाराष्ट्र
सवाई मानसिंह अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट	जयपुर	राजस्थान
त्रिवेन्द्रम अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	तिरुअनन्तपुरम	केरल
दाबोलिम अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	गोवा	गोवा
देवी अहिल्याबाई होल्कर अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	इंदौर	मध्य प्रदेश
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	कोलकाता	पश्चिम बंगाल
बाबा साहेब अम्बेडकर अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	नागपुर	महाराष्ट्र
मंगलुरु अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	मंगलुरु	कर्नाटक
राजीव गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	हैदराबाद	तेलंगाना
लाल बहादुर शास्त्री अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	वाराणसी	उत्तर प्रदेश
वीर सावरकर अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा पोर्ट ब्लेयर	पोर्ट ब्लेयर	अंडमान निकोबार
शेख अलआलम अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	श्रीनगर	जम्मू कश्मीर
श्री गुरु रामदास जी अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	अमृतसर	पंजाब
सरदार वल्लभभाई पटेल अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	अहमदाबाद	गुजरात

विमानन सेवा के लिए खतरा पैदा करने वाले मौसमी तत्व

आधुनिक वायुयान को सबसे पहले राइट बंधुओं ने बनाया था। अमेरिका के हटिंगटन स्थित यूनाइटेड ब्रेदेन चर्च में बिशप के पद पर कार्यरत विल्वर और ओरविल के पिता ने बचपन में उन्हें एक खिलौना हेलीकॉप्टर दिया था जिसने दोनों भाइयों को असली उड़न-यंत्र बनाने के लिए प्रेरित किया। आखिर में 17 दिसम्बर 1903 को उन्होंने अपने वायुयान का परीक्षण किया। परीक्षण में जब विमान बार बार गिर जाता , तब छोटे भाई ने बड़े भाई से कहा , "हमें सुबह सुबह उड़ान भरनी चाहिए क्योंकि तब पवन शांत होती है"। भाई ने भी माना" काम विंड " होनी चाहिए। " क्रॉस विंड या स्ट्रांग विंड " से अभियान सफल नहीं होगा। दूसरे दिन सुबह सुबह विमान उड़ाया गया और सफल परिक्षण किया गया। बस उसी दिन से " विमान मौसम सेवा " का श्रीगणेश हो चुका था। राइट ब्रदर्स ने वायु परिवहन में पवन,

दृश्यता , तापमान आदि मौसमी तत्वों का महत्व समझ लिया था। आज भी ये मौसमी तत्व वायु परिवहन में बाधा डालने का काम करते हैं ।

पवन दिशा एवं गति

पवन की दिशा एवं गति, सतही हो या फिर ऊपरी, विमान परिचालन में काफी महत्व रखती हैं। विमान को उड़ान भरने या उतारते समय सामने से आने वाली हेड विंड जरुरी होता है, ताकि उड़ान भरते समय जहाज को थ्रस्ट मिले या फिर उतारते समय ब्रेकिंग एक्शन के लिए विंग फ्लैप्स में अवरोध निर्माण हो। उसी प्रकार ऊपरी उड़ान स्तर पर विमान को आगे धकेलने हेतु पीछे से आने वाली टेल विंड जरुरी होती है। इससे ईंधन बचत तो होती ही है पर साथ में पर्यावरण को कार्बन से बचाया जा सकता है। ईंधन बचत से हमारी विदेशी मुद्रा की भी बचत होती है ।

दृश्यता

विमान चालक को उड़ान भरते या उतारते समय रनवे पूरी तरह दिखाई देना जरूरी होता है। कई बार विभिन्न कारणों से यह दृश्यता कम हो जाती है और विमान को इसके बढ़ने तक या तो ऊपर ही फेरे लगाने पड़ते हैं या फिर पास वाले कोई दूसरे हवाईअड्डे की ओर प्रस्थान करना पड़ता है ।

कोहरा या धुंध

इसकी वजह से कई बार दृश्यता कम होती है एवं यातायात में बाधा उत्पन्न होती है ।

आंधी तूफान

यह साधारणतया क्युमिलोनिम्बस नामक बादलों की वजह से होता है। इस प्रकार के बादल विमानन के लिए सबसे घातक होते हैं । इससे दृश्यता कम होती है तथा गर्जन और बिजली चमकती है। भारी वर्षा भी होती है। सतह हवा तेज होती है। यह कम दबाव का क्षेत्र

और संवहनी बादल के साथ जुड़ा हुआ है। जहाज अपड्राफ्ट एवं डाउनड्राफ्ट के चक्कर में हिचकोले खाने लगता है। दुर्घटना होने की ज्यादा सम्भावना इसी में होती है।

वर्षा - यह मॉनसून के मौसम /पश्चिमी विक्षोभ के समय होता है जिससे सतह दृश्यता कम हो जाती है।

धूल तूफान- यह पश्चिमी विक्षोभ या प्रेरित संचलन के साथ जुड़े भारत में होने वाली एक मौसम घटना है जो दृश्यता बहुत कम कर देता है। नमी की कमी के कारण संवहनी बादल के साथ जुड़े होने की वजह से इसमें मजबूत सतह हवा, धूल भरी आंधी आदि जन्म लेती है।यह परिघटना क्युमिलोनिम्बस बादल विकसित होने के कारण साधारणतः दोपहर में घटती है ।

मूसलाधार बारिश- ठोस बर्फ गेंदों के रूप में या फिर भारी वर्षा के कारण इससे उड़ान संचालन में बाधा उत्पन होती है ।

बर्फबारी- यह बर्फ पाउडर का रूप है, जो सर्दियों के मौसम के दौरान जम्मू-कश्मीर के ऊपर पश्चिमी विक्षोभ के दौरान होती है ।

प्रक्षोभ- साफ हवा अशांत हो या फिर संवहनी बादलों की वजह से हो , इस प्रकार की हवा अशांत हवा हवाई जहाज के लिए घातक हो सकती है ।

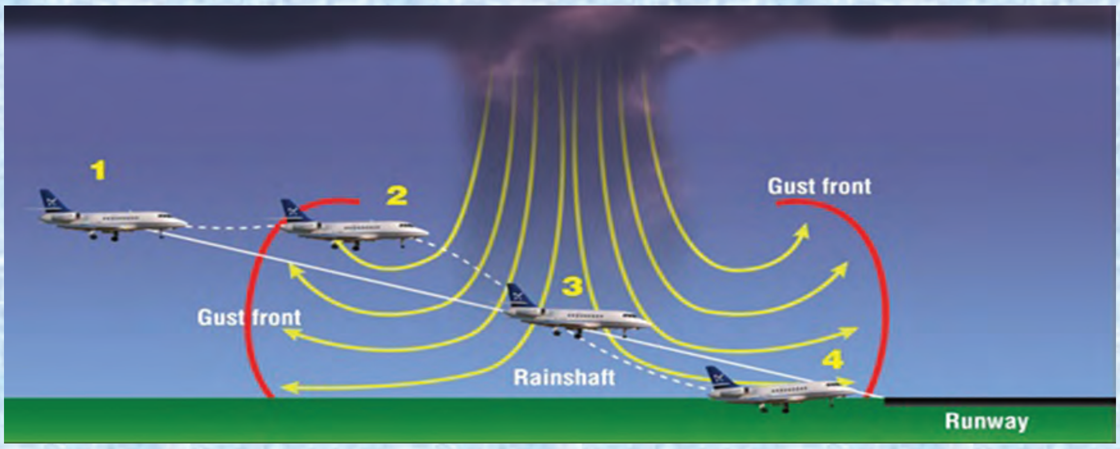

बादल- बादल कई प्रकार के होते हैं। इसमें से कम ऊंचाई वाले बादल जैसे स्ट्रेटस आदि दृश्यता कम कर सकते हैं तो मध्यम ऊंचाई वाले बादल जैसे कुमिलोनिम्बस, विमानन के लिए सबसे घातक होते हैं। इससे दृश्यता कम होती है तथा गर्जन और बिजली चमकती है। भारी वर्षा भी होती है। सतह हवा तेज होती है। यह कम दबाव का क्षेत्र और संवहनी बादल के साथ जुड़ा हुआ है। दुर्घटना होने की सबसे ज्यादा सम्भावना इसी में होती है ।

तापमान- इंजन दक्षता या उसके सक्षम कार्य करने हेतु तापमान का कम होना अति आवश्यक है। तापमान बढ़ने पर हवा का घनत्व कम हो जाता है और परिणामस्वरूप जहाज में लोड कम करना पड़ता है। माना जाता है की तापमान 1 डिग्री भी बढ़ जाए तो विमान से कई किलो भार कम करना होता है ।

हवा का दबाव ; लाप्लास फार्मूला के अनुसार , हम जैसे जैसे ऊपर की और जाते हैं , वैसे हवा का दबाव कम होता है । इसी नियम पर आधारित अल्टीमीटर यंत्र विमान में होता है जिससे हर वैमानिक अपनी सही ऊंचाई का मापन करता है । अगर समुद्र को सन्दर्भ माने तो इस प्रकार उस हवा के दबाव को क्यूएनएच (QNH) कहा जाता है और स्टेशन लेवल की तुलना में इसे क्यू एफ ई (QFE) कहा जाता है।

भारत मौसम विभाग द्वारा विमानन मौसम सेवाएं

नागरिक उड्डयन के लिए मौसम विज्ञान सेवा भारत मौसम विज्ञान विभाग, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रदान की जाती हैं । इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेदारी विभाग प्रमुख की होती है। मौसम विज्ञान के महानिदेशक, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, लोदी रोड,नई दिल्ली के देख रेख में ये सेवाएं प्रदान की जाती हैं। मौसम विज्ञान सेवा चेन्नै, दिल्ली, कोलकाता और मुंबई उड़ान सूचना क्षेत्र (FIR) के भीतर प्रदान की जाती है। चेन्नै, कोलकाता, मुंबई और नई दिल्ली स्थित चार प्रमुख अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर चार मौसम वैज्ञानिक निगरानी कार्यालय (MWO), 18 हवाई अड्डा मौसम विज्ञान कार्यालय (AMO) और 51 एरोनॉटिकल मौसम विज्ञान स्टेशनों (AMS) के नेटवर्क के माध्यम से मौसम विमानन सेवाओं की आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। चार एमडब्ल्यूओ की जिम्मेदारी उनके संबंधित उड़ान सूचना क्षेत्रों में मौसम स्थितियों पर लगातार निगरानी और इन मार्गों पर होने वाली खतरनाक मौसमी परिघटना जैसे कि गरज के साथ तूफान, उष्णदेशीय चक्रवात, विक्षोभ, ज्वालामुखी राख आदि हेतु सिग्मैट (महत्वपूर्ण मौसम वैज्ञानिक चार्ट) तैयार करने की है, जो कि विमान के संचालन की सुरक्षा को प्रभावित कर सकते है। एएमओ अपने हवाई अड्डों, विमान क्षेत्रों और उनके संबद्ध वैमानिक मौसम विज्ञान केंद्र से प्रचालित होने वाली उड़ानों के लिए पूर्वानुमान, चेतावनियां, वर्तमान मौसम प्रेक्षणों और अन्य प्रासंगिक जानकारी तैयार करने के लिए अपने विमान अड्डों पर नजर बनाए रखता है। एएमएस मुख्य रूप से वर्तमान मौसम प्रेक्षणों की आपूर्ति करता है। संबद्ध एएमओ द्वारा उनकी पूर्वानुमान की जरूरतों को पूरा किया जाता है। पट्टियों पर दृश्यता सीमा की निरंतर

निगरानी (RVR) सहित अति आधुनिक स्वचालित मौसम प्रेक्षण प्रणाली (AWOS) या फिर इंटीग्रेटेड ऑटोमेटिक मेट ऑब्ज़र्विंग सिस्टम (IAAMS) जैसे अत्याधुनिक प्रणाली के माध्यम से हवाई अड्डे (विशेष रूप से रनवे पर दृश्यता) क्षेत्र के भीतर मौसम और दृश्यता की स्थितियों हेतु मॉनीटरिंग प्रणाली शुरु की गई है। महत्वपूर्ण कोहरे पूर्वानुमान उत्पादों के साथ सर्दियों के महीनों के दौरान हवाई अड्डे पर मापी गई वास्तविक आर वी आर की स्थितियां विभाग की वेबसाइट पर अपलोड की जाती हैं। उत्तर भारत के हवाई अड्डों के लिए बदलती दृश्यता स्थितियों का पूर्वानुमान देने के लिए गतिशील-सांख्यिकीय मॉडल के एक फ्रेम वर्क पर कार्य किया गया है ।

मौसम सेवाएं के प्रारूप

मेटार (METAR) - हर आधे घंटे में वर्तमान मौसम की टिप्पणियाँ जारी की जाती हैं जिन्हें मेटर / स्पेसी कहा जाता है । इसमें ट्रेंड भविष्यवाणियां भी संलग्न होती हैं जिसमें अगले दो घंटों का संक्षिप्त पूर्वानुमान होता है। इसमें सतह हवा, दृश्यता, वर्तमान मौसम, बादल, हवा और ओस-बिंदु तापमान और वायुमंडलीय दबाव आदि जानकारियां कोड भाषा में शामिल रहते हैं ।

टाफर्स (TAFORs) - अगले 30 या 9 घंटों के लिए टर्मिनल हवाई अड्डा पूर्वानुमान (TAF) जारी किए जाते हैं। ये पूर्वानुमान हर तीन या छह घंटे में जारी किए जाते हैं और 9 या 30 घंटे के लिए मान्य हैं। इनमें सतह हवा, दृश्यता, मौसम, बादल और तापमान आदि का पूर्वानुमान होता है ।

मौसम विवरण (Met briefing)- अपनी उड़ान योजना के साथ पायलटों की सहायता के लिए, मौसम संबंधी ब्रीफिंग दी जाती है। ऊपरी स्तर का मौसम, ऊपरी हवाओं और ऊपरी हवा का तापमान आदि अक्सर मौसम संबंधी चार्ट के रूप में दिया जाता है । हवाई मार्ग पर कोई खतरनाक मौसम की जानकारी, गंतव्य हवाई अड्डा के बारे में मौसम विवरण और संभाव्य विकल्पों के लिए पूर्वानुमान से संबंधित चेतावनी के विवरण शामिल लिए जाते हैं। विश्व एरिया पूर्वानुमान प्रणाली (WAFC) के तहत, लंदन स्थित केंद्र ऊपरी हवाओं, ऊपरी हवा का तापमान, दिशा, गति और अधिकतम हवाओं की ऊंचाई और ऊंचाइयों और तापमान आदि का पूर्वानुमान के लिए जिम्मेदार है। ऊपरी हवा और तापमान के लिए ग्रिड बिंदुओं पर आधारित ये पूर्वानुमान मौसम चार्ट 6, 12, 18, 24, 30 और 36 घंटे के लिए मान्य होते हैं। ये चार्ट उड़ान स्तर 50 (850hPa), 100 (700hPa), 140 (600 hPa), 180 (500hPa), 240 (400hPa), 300 (300hPa), 340 (250hPa), 390 (200hPa) और 450 (150hPa) के लिए

उपलब्ध लिए जाते हैं। महत्वपूर्ण मौसम घटना का पूर्वानुमान भी 0000, 0600, 1200 और 1800 यूटीसी निर्धारित समय पर जारी किए जाते हैं। लंदन, द्वारा तैयार ये चार्ट एक दिन में चार बार जारी किए जाते हैं । इस प्रकार के चार्ट सैटेलाइट वितरण प्रणाली के द्वारा या इन्टरनेट प्रणाली द्वारा लन्दन से प्राप्त किए जाते हैं।

इसके अलावा, लघु अंतर एवं राष्ट्रीय उड़ानों हेतु ये चार्ट चेन्नै केंद्र द्वारा तैयार किया जाता है। हवाई मार्ग मौसम पूर्वानुमान, हवाईअड्डा पूर्वानुमान, स्थानीय पूर्वानुमान और प्रवृत्ति के पूर्वानुमान, भविष्यवाणी सुविधाओं वाले, हवाई अड्डा मौसम विज्ञान कार्यालय द्वारा जारी किए जाते हैं। छोटे वैमानिकी मौसम विज्ञान केंद्र जहाँ इस प्रकार की मौसम भविष्यवाणी की सुविधा नहीं है, उनके लिए संलग्न मुख्य हवाई अड्डा मौसम विज्ञान कार्यालय द्वारा जारी किए जाते हैं। सभी हवाई अड्डा मौसम विज्ञान कार्यालय जहाँ पर मौसम भविष्यवाणी की सुविधा हैं वहां, उड़ान संचालन कर्मियों की जानकारी हेतु प्रत्याशित मौसम की स्थिति जानकारी उपलब्ध है। मौसम विवरण के तौर पर सतह और ऊपरी हवा के संक्षिप्त चार्ट, मौसम संबंधी रिपोर्ट, गंतव्य एवं वैकल्पिक स्टेशनों के पूर्वानुमान, सिग्मेट, एरेप, मौसम रेडार से प्राप्त जानकारी और उपग्रह बादल मानक चित्र आदि सामान्य रूप से मौसम संबंधी कार्यालयों में उपलब्ध कराया जाता है। इस विषय पर चाहें तो परामर्श के लिए भी अधिकारी उपलब्ध होते हैं। छोटे स्टेशनों पर संलग्न वैमानिकी मौसम विज्ञान केंद्र जहां भविष्यवाणी की सुविधा उपलब्ध है वहां से ये मौसम विवरण जानकारी प्राप्त कर प्रदान की जाती है। विवरण के साथ ऊपरी पवन चार्ट, हवाई अड्डा पूर्वानुमान, उड़ान पूर्व सतही पवन एवं तापमान डेटा आदि की आपूर्ति की जाती है । मुम्बई, चेन्नै, कोलकाता एवं दिल्ली इन मुख्य मौसम कार्यलयों को मौसम निगरानी की अतिरिक्त जिम्मेवारी दी गई है। इन कार्यलयों को सिग्मेट के रूप में आंधी, चक्रवात, पवन अपरूपण, धूल भरी आंधी, ज्वालामुखी राख, कपासीवर्षी बादल का समूह, बर्फ़बारी आदि विमान सेवा में बाधा पैदा करने वाले मौसमी तत्वों के बारे में चेतावनी जारी करना होता है और जानकारी सम्बंधित इकाईयों को उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी है।

पवन अपरूपण (wind shear) चेतावनी:- हवाई पथ पर पवन दिशा में अचानक बदलाव, मार्ग में क्यूम्यूलोनिम्बस जैसे बादल , या पवन गति में स्तर के साथ बदलाव , विमान को प्रभावित कर सकते हैं । कभी कभी ये सब 500 से 1600 फीट की ऊंचाई पर पाया जाता है। इससे बचने हेतु विंड शियर चेतावनी जारी की जाती है।

सिग्मेट (SIGMET) चेतावनी: उड़ान के दौरान, महत्वपूर्ण मौसम की जानकारी जो विमान के लिए घातक हो सकती है,चेन्नै, दिल्ली, कोलकाता और मुंबई द्वारा जारी किए जाते हैं और इन्हें सिग्मेट कहा जाता है। ये उड़ान में विमान के प्रसारण के लिए उड़ान सूचना केंद्र (एफआईसी) और क्षेत्र नियंत्रण केंद्र (एसीसी) ,एटीएस इकाइयों को आपूर्ति की जाती है। उड़ान जानकारी क्षेत्र (FIR) में जब हवाई मार्ग पर चक्रवात या क्यूम्यूलोनिम्बस बादलों का जमघट या फिर वोल्कानिक राख आदि हो तो ये विमान संचालन की सुरक्षा को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए सुरक्षा के उपाय के तौर पर अपने उड़ान जानकारी क्षेत्र (FIR) के लिए सिग्मेट चेतावनी जारी की जाती है । इस जानकारी को तुरंत विमान चालक तक पहुंचाने की व्यवस्था की जाती है ।

हवाई अड्डा चेतावनी: हवाई अड्डा चेतावनी में सतही हवाओं, उष्णकटिबंधीय चक्रवातों, गरज, तूफान, धूल तूफान/ रेत तूफान, ओलावृष्टि, ठंड, बर्फ, वर्षा आदि की सूचना जारी की जाती हैं। इसके अलावा, ग्लाइडर्स, हल्के विमान और हेलीकाप्टरों के लिए चेतावनी जारी की जाती है जब हवा की गति 17 नाट या अधिक तक पहुंच जाने की उम्मीद होती है, जमीन पर खड़े विमान को प्रभावित कर सकें या हवाई अड्डा सुविधाएं और सेवाएं के लिए बाधा पैदा कर सकें, इस प्रकार की हवाई अड्डा चेतावनी भविष्यवाणी और मौसम की स्थिति की संक्षिप्त जानकारी हवाई अड्डा मौसम कार्यालय द्वारा जारी किए जाते हैं। चेतावनी, एअर लाइन ऑपरेटरों और अन्य एजेंसियों जैसे विमानपत्तन प्राधिकरण की विभिन्न इकाइयों को आपूर्ति की जाती है।

एरिया पूर्वानुमान : हवाईअड्डा और 100 नॉटिकल मील एरिया के लिए एरिया फोरकास्ट या लोकल फोरकास्ट भविष्यवाणियां जारी की जाती हैं ।उपग्रह मौसम चित्र या रेडार चित्र-वायु यातायात नियंत्रकों को इन चित्रों के द्वारा आसपास के मौसम की सही जानकारी दी जाती है ।

वोल्मेंट प्रसारण - उड़ान के दौरान आपातस्थिति में विमान चालक की जानकारी हेतु हर आधे घंटे में एक रेडियो प्रसारण किया जाता है जिसे वोल्मेंट प्रसारण कहते हैं। इसमें मुख्य हवाईअड्डों के वर्तमान मौसम की जानकारी, हवाईअड्डा पूर्वानुमान, एचऍफ़ फ्रीक्वेंसी (High Frequency radio) पर कोलकाता और मुंबई से प्रसारित किया जाता है।

ऑन लाइन मौसम विवरण - आजकल सभी प्रकार की आवश्यक मौसम विवरण की जानकारियां ऑन लाइन नेट पर उपलब्ध कराई गई हैं। कोई भी पंजीकृत इकाई इसे आसानी से प्राप्त कर सकता है ।

वायु यातायात की समस्याएं एवं समाधान

सुरक्षा से जुड़े मामलों के साथ ही उड़ानों में होने वाली देरी भारत में वायु यातायात से जुडी एक मुख्य समस्या है। कई बार यह देरी ख़राब मौसम की वजह से होती है । भारत, अंतरराष्ट्रीय नागर विमानन संगठन का सदस्य होने के नाते भारत मौसम विज्ञान विभाग को संगठन के दिशानिर्देशों के अनुरूप वैमानिकों के लिए उच्च कोटि की मौसम सेवा प्रदान करना अनिवार्य है। इसमें मौसम संबंधी जानकारी पूर्वानुमान आदि दिए जाते हैं। भारत मौसम विभाग दो प्रकार की मौसम की जानकारियां उपलब्ध करता है । ये सभी सेवाएं डीजीसीए की देखरेख में प्रदान की जाती हैं। इसी कड़ी में भारत मौसम विभाग को भी भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण तथा अन्य एजेंसियों के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर आगे बढ़ते हुए आधुनिक तकनीक एवं नवीनतम उपकरणों का उपयोग कर उच्च कोटि की मौसम सेवा प्रदान करनी है। यह नियामक ही नहीं किन्तु हम जैसे विभागीय अधिकारियों की एक सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी भी है ताकि हम देशवासियों और हर प्रवासी को आरामदेह वायु परिवहन सेवा देने में अपना योगदान दे सकें । इस संबंध में कई आधुनिक उपकरण जैसे रेडार, ए डब्लू ओ एस, आर वी आर दृष्टि जैसे यंत्र , ऑटोमेटिक मेसेज स्विचन सिस्टम जैसे कंप्यूटर नेटवर्क द्वारा जल्द से जल्द मौसम की जानकारी उपलब्ध कराना, सेवा में उन्नति के तौर पर आजकल ऑन लाइन मौसम सेवा आदि देकर विभाग एवं सम्बंधित अधिकारी अपनी पूरी जिम्मेदारी निभा रहे हैं ।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय,
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।

❖ ***कबीरदास***

वैज्ञानिक व तकनीकी बौछार

रेडार को जानें

❖ के. के. देवांगन

मनुष्य सदैव अपने देश के सीमाओं की दुश्मन से रक्षा करने के लिए सजग रहा है। प्राचीनकाल में युद्ध क्षेत्र सीमित होता था, परन्तु आज युद्ध क्षेत्र सीमा से बंधा नहीं है। युद्ध में आज वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है। आज विज्ञान ने लड़ाई को एक नया मोड़ दे दिया है, जिसमें धनुषबाण आदि का स्थान बंदूक व तोप के गोलों और राकेट, मिसाइल, परमाणु तथा प्रक्षेपास्त्रों ने ले लिया है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि मानव प्रहरियों का स्थान बहुत हद तक यांत्रिक प्रहरियों ने ले लिया है जो मानव से कहीं अधिक सजग, त्रुटिहीन और सक्षम है। आधुनिक प्रहरियों में यहां हम बात करेंगे रेडार की।

रेडार का उपयोग द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान प्रारंभ हुआ। रेडार शब्द "रेडियो डिटेक्शन एंड रेंजिंग" (RADIO DETECTION AND RANGING) के प्रथम अक्षरों से बना है। यह एक ऐसा यंत्र है जिसकी सहायता से रेडियो तरंगों का उपयोग दूर की वस्तुओं का पता लगाने तथा उनकी स्थिति, अर्थात दिशा और दूरी ज्ञात करने के लिए किया जाता है। रेडार द्वारा अधिक दूरी की वस्तुओं की स्थिति जैसे समुद्र पर तैरते जहाज, उड़ते वायुयान द्वीप, सागरतट, बादल आदि का सही पता लगाया जा सकता है । कोहरा , धुंध , वर्षा , हिमपात अथवा अंधेरा इनमें से कोई भी इसमें बाधक नही होता।

❖ मौसम केंद्र -भोपाल में मौसम विज्ञानी "ए" के पद पर कार्यरत हैं

सन 1986 में रेडियो तरंगों के आविष्कारक हाइनरिख हेर्टस ने ठोस वस्तुओं से इन तरंगों का परावर्तन होना सिद्ध किया था। इस सिद्धांत के आधार पर पता लगाने का विचार रेडियो के आविष्कारक मारकोनी (1874-1937) के मन में विचार आया था, लेकिन रेडार का वास्तविक आविष्कारक 1930 के दशक में ही संभव हो पाया। असल में रेडार का आविष्कारक, युद्ध में दुश्मनों के दिखाई पड़ने या उनको आवाज सुनाई देने से पहले ही उनके बारे में चेतावनी देने की वजह से हुआ। किन्तु द्वितीय विश्वयुद्ध में ही रेडार का प्रमुख रुप से उपयोग आरंभ हुआ।

इंग्लैंड के दो वैज्ञानिकों पी.ई.पोलार्ड एवं डब्लू. ए. एल.ब्यूटमेंट ने ध्वनि के परावर्तन यानी प्रतिध्वनि के सिद्धांत से जहाजों का पता लगाने के लिए परीक्षण के तौर पर संकेत भेजने के उद्देश्य से एक सेट का निर्माण किया। सन 1936 में एक फ्रांसीसी जहाज नारमंडो में समुद्र में तैरती बर्फीली चट्टानों की चेतावनी देने के लिए रेडार की तरह का एक उपकरण लगाया गया। लेकिन उपयोगिता की दृष्टि से पहला रेडार द्वितीय विश्व युद्ध से पहले रॉबर्ट वॉटसन (1892-1973) के नेतृत्व में ब्रिटिश वैज्ञानिकों के एक दल ने किया। प्रतिध्वनि यानी आवाज के गूंजने की प्रकिया से तो हम सब परिचित है। ध्वनि तरंगे किसी पहाड़ी या इमारत से टकराकर वापस हम तक पहुंचती है और हमे प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है। अगर ताली की आवाज जैसी संक्षिप्त और तीव्र ध्वनि उत्पन्न हो जाए तो आवाज जिस चीज से टकराकर लौट रही है उसकी दूरी का पता लगाया जा सकता है। इसके लिए ध्वनि की गति का पता होना जरुरी है। रेडार में इसी सिद्धांत का प्रयोग किया जाता है, मगर इसमें ध्वनि तरंगों के बजाय रेडियो तरंगों का उपयोग होता है। ध्वनि तरंगों की तुलना में रेडियो तरंगे कही अधिक तेज गति से संचरण करती है, साथ ही वे ज्यादा दूरी तक जा सकती है। किसी वस्तु की दिशा का पता शॉर्टवेव की बहुत छोटी तरंग भेजकर उसको परावर्तित तरंग के माध्यम से किया जाता है। इसके लिए दैर्शिक एंटिना यानी जो एंटीना अपनी तरंगों को किसी खास दिशा में ही प्रेषित करता है, का उपयोग किया जाता है जो रेडियो तरंगों के छोटे स्पंदनों को लगातार प्रेषित करता रहता है। अगर स्पंदनों की इस प्रवाह के मार्ग में कोई वस्तु आ जाती है तो रेडियो तरंगें परावर्तित होकर वापस ट्रांसमीटर में लौट जाती है जहां रिसीवर के जरिए इन्हें ग्रहण किया जाता है। यह रिसीवर ट्रांसमीटर के साथ ही लगा रहता है। रेडियो तरंग के वस्तु से टकरा कर लौटने में लगे समय के आधार पर दूरी की गणना कर ली जाती है। रेडियो तरंगो की गति 1,86,000 मील प्रति सेकण्ड है, इसलिए समय ज्ञात होने पर परावर्तक वस्तु की दूरी सरलता से मापी जा सकती है। रेडार में लगे उच्च दिशापरक एंटीना से

परावर्तक, अर्थात लक्ष्य वस्तु की दिशा का ठीक-ठीक पता चल जाता है। दूरी और दिशा मालूम हो जाने से यथार्थ स्थिति ज्ञात हो जाती है।

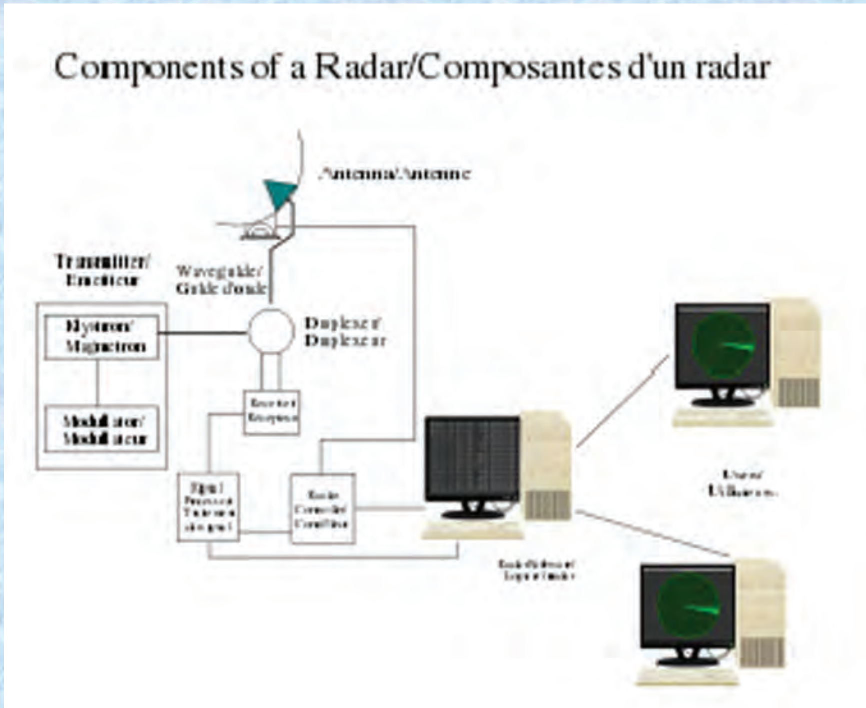

रेडार का उपयोग जमीन के अन्दर वस्तुओं का पता लगाने में भी किया जाता है। उदाहरण के लिए पानी और गैस आदि की प्रवाह लाइनों में खराबी का पता इसके जरिए किया जा सकता है इसी तरह पुरातत्वशास्त्री पुराने ज़माने में जमीन में दबी वस्तुओं का पता रेडार से लगा सकते हैं। इनकी मदद से जमीन के नीचे 20 मीटर तक की गहराइयों में प्राचीन इमारतों आदि का पता लगाया जा सकता है। दुश्मन के रेडार की निगाह में आने से बचने वाले उपकरण और प्रणालियाँ भी विकसित की जा चुकी है। इसके लिए विमानों आदि को इस आकार का बनाया जाता है, जिससे रेडियो तरंगे बहुत कम परावर्तित हो पाती है। इसके अलावा उनमें ऐसे पदार्थों का लेप भी किया जाता है जो रेडियो तरंगो को अवशोषित कर लेते है। इसके अलावा इलेक्ट्रानिक तरीके से भी रेडियो तरंगों को बेअसर किया जाता है। बहुत छोटे लक्ष्यों का पता लगाने के लिए खास तरह के रेडार विकसित किए गए है। मौसम विज्ञान और खगोल- शास्त्र में भी इनका उपयोग अब होने लगा है। ट्रैकिंग रेडार नाम के एक अन्य प्रकार के उपयोग वायुमंडल की ऊपरी परतों के बारे में किया जाता है।

रेडार के अनेक उपयोग है। इसने नौका जहाज या वायुयान चालन को अधिक सुरक्षित बना दिया है, क्योंकि इसके द्वारा चालकों को दूर स्थित पहाड़ों, हिमशैलों अथवा अन्य रुकावटों का पता चल जाता है । रेडार से वायुयानों को पृथ्वी तल से अपनी सही ऊँचाई ज्ञात होती

रहती है तथा रात्रि में हवाई अड्डों पर उतरने में बड़ी सहूलियत होती है । 10 जनवरी 1946

को संयुक्त राज्य अमरीका के सैनिक संकेत दल ने रेडार द्वारा सर्वप्रथम चंद्रमा से संपर्क स्थापित किया। रेडियो संकेत को चंद्रमा तक आने जाने में 4,45,000 मील की यात्रा करनी पड़ी और 2.4 सेकंड समय लगा।

आज रेडार की उपयोगिता का दायरा काफी बढ़ चुका है ....

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि
जहां काम आवे सुई, कहा करे तरवारि ।

वृक्ष कबहूँ नहीं फल भखैं, नदी न संचै नीर
परमारथ के कारने, साधुन धरा सरीर ।

❖ *रहीम*

वैज्ञानिक व तकनीकी बौछार

आपदा प्रबंधन और मौसम पूर्वानुमान

❖ पोषण लाल देवांगन

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। इतिहास साक्षी है कि आदिकाल में मानव जंगलों में वन्य पशुओं की तरह विचरण करता था। धीरे-धीरे उसने मस्तिष्क का उपयोग करना सीखा और रहन-सहन, खान-पान, उत्सव त्योहार, आवागमन, सुरक्षा आदि के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन लाया । अब स्थिति यहाँ तक आ गई है कि उसे अपने द्वारा मस्तिष्क और मेहनत से अर्जित संसाधनों, विनिर्माण यहाँ तक कि स्वयं की अस्तित्व की सुरक्षा की चिंता सताने लगी है। आपदाएं कभी पूर्व-सूचना देकर नहीं आती, किन्तु इनके घटने की संभावना के कारणों की पर्याप्त अध्ययन से इनकी रौद्रता व नुकसान में कमी की जा सकती है। सुरक्षा के विभिन्न उपायों में आधुनिकीकरण भी सुनिश्चित लिए जा रहे हैं। आपदा प्रबंधन भी इसी प्रकार जान-माल, संसाधनों, विनिर्माण आदि की सुरक्षा का आधुनिक उपाय है। इसके तहत शासकीय, अर्द्धशासकीय या अशासकीय संगठनों द्वारा आपदा की स्थिति में जान-माल के हानि को न्यूनतम लिए जाने का भरसक प्रयत्न किया जाता है । आधुनिक तकनीक, आपदा प्रबंधन में आपदा पूर्व सावधानियों के प्रचार-प्रसार के अलावा राहत व बचाव के विभिन्न उपाय व प्रसाधनों का समावेश होती है। हम जानते हैं कि आपदा पूर्व जानकारी व सावधानियों के लिए पूर्वानुमान की आवश्यकता होती है, इसलिए मौसम संबंधी पूर्वानुमान भी आपदा प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण अंग है ।

मौसम पूर्वानुमान से जन-समूह को निकट संभावित मौसमी आपदाओं की पूर्व सूचना दी जाती है ताकि उससे प्रभावित होने वाले लोगों को आपदा की प्रचंडता के बारे में बताया जा सके । आपदा प्रबंधन के तहत घटना-दुर्घटनाओं की स्थिति में सावधानी, राहत एवं बचाव की विधियों की जानकारी दी जाती है । इस जानकारी का प्रचार-प्रसार शासकीय व अशासकीय समाचार पत्रों, इलेक्ट्रानिक माध्यमों सामुदायिक केन्द्रों आदि जन संचार माध्यमों से किया जाता है । कालान्तर में प्राकृतिक संसाधनों में परिवर्तन या रूपांतरण होता रहता है। हमें ज्ञात है कि ऐतिहासिक काल में पृथ्वी पर पाए जाने वाले कई जीवधारी का अब अस्तित्व मिट गया है। यह प्रकृति की परिवर्तनशीलता का ही परिणाम है । मानव द्वारा प्रकृति का उचित-अनुचित दोहन किया जाता रहा है। अपने जीवनानुकूल वातावरण के निर्माण के लिए प्राकृतिक स्त्रोतों

❖ मौसम केंद्र- रायपुर में मौसम विज्ञानी "बी" के पद पर कार्यरत हैं

से प्राप्त तत्वों का आवश्यकतानुसार रुपान्तरण किया जाता है। ज्वालामुखी, भूकंप, सुनामी, मौसमी परिघटनाएं, मॉनसून, ज्वार-भाटा आदि एक ओर जहां प्राकृतिक रूपांतरण हैं वहीं दूसरी ओर वनों की कटाई, शहरीकरण, विभिन्न सभ्यताओं का विकास, अंतरराष्ट्रीय युद्ध, कल-कारखानाओं के विकास आदि कृत्रिम रूपांतरण के रूप हैं। रूपान्तरण प्राकृतिक या कृत्रिम जैसा भी हो पर सार्वत्रिक रूप से लाभदायी या हानिकारक नहीं होता है। ये रूपांतरण किसी वर्ग विशेष के लिए अत्यंत लाभदायी होता है तो दूसरी ओर यह किसी अन्य वर्ग के लिए उतना ही हानिकारक भी होता है । प्राकृतिक संसाधनों में ये प्राकृतिक या कृत्रिम रूपान्तरण लाभकारी होने पर उस क्रिया को विकास का नाम दे दिया जाता है और इसके विपरीत जब यही रूपांतरण हानिकारक होता है तो उसे आपदा से परिभाषित किया जाता है। अत: आपदाएं प्राकृतिक या कृत्रिम घटना या दुर्घटना होती है, जिसमें प्राकृतिक स्त्रोतों से प्राप्त संसाधनों का हानिकारक रूपांतरण सुनिश्चित होता है ।

आपदाओं को हम उस घटना-दुर्घटना के रूप में देखते हैं जिसके तहत असीमित संख्या में जान-माल की हानि परिलक्षित होती है। यूं तो हम आपदाओं के भिन्न-भिन्न रूपों से दो-चार होते रहते हैं किन्तु कुछ प्रमुख आपदाएं और उनके प्रबंधन में मौसम पूर्वानुमान की भूमिका निम्नानुसार है:-

भौगोलिक आपदाएं

प्रकृति सर्वोपरि है। हमें प्रकृति के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। कभी पेड़-पौधों की शीतल छाया या यूं कहें कि धरती, जल, अग्नि, आकाश और वायु के नियंत्रित प्रदाय के द्वारा यह दया और ममता की साक्षात प्रतिमूर्ति बनती है तो कभी इन्हीं तत्वों की अनियंत्रित उपलब्धता से ज्वालामुखी, भूकंप, सुनामी, दावानल, बड़वानल, भारी वर्षा, अल्पवर्षा, सूखापन, आंधी-तूफ़ान, समुद्री तूफ़ान (चक्रवात), टोरनाडो, जलीय टोरनाडो, शीतलहर, भीषण-लू, बर्फबारी, मेघ-विस्फोट, भू-स्खलन, हिम-स्खलन आदि भयानक रौद्र रूप में समष्टि को ही काल कवलित करने की अपार शक्ति स्वरूपा बन जाती है। कौन नहीं जानता कि अप्रैल 2001 में गुजरात के कच्छ में आये भयंकर भूकंप, जून 2013 में उत्तराखंड में हुए मेघ विस्फोट और भयंकर भूस्खलन और सितम्बर 2014 में कश्मीर में हुई इसी तरह की प्राकृतिक घटना में हजारों की संख्या में जाने गईं और संपति का नुकसान हुआ। प्रकृति का ये अनियंत्रित स्वरुप मानव के नियंत्रण से बाहर होती है और यह अपार जन-समूह का विनाश करती हैं । ये भौगोलिक आपदाएं होती हैं ।

ऊपर वर्णित भौगोलिक घटनाओं में से ज्वालामुखी, भूकंप, सुनामी आदि भूगर्भीय घटनाएँ हैं ।

इनकी पर्याप्त व सटीक पूर्वानुमान की उपलब्धता वर्तमान तक नहीं है किन्तु घटना के पश्चात इनकी सतत निगरानी और तकनीकी रिकार्डिंग के आधार पर संगत प्रभावितों को इनकी भयानकता और निकट भविष्य में पुनः संभावना व दुष्प्रभाव के संभावित क्षेत्र की सूचना विभिन्न माध्यमों से दी जाती है। जैसे ज्वालामुखी से निकलने वाले लावा के बहाव की दिशा व क्षेत्र तथा उससे उत्पन्न गर्मी (तापमान) के दुष्प्रभाव वाले क्षेत्र के साथ ही मौसम में संभावित बदलाव और उसकी भयानकता का पूर्वानुमान तथा भूकंप या सुनामी की स्थिति में आसपास के क्षेत्र में अंशकालिक सिस्मोग्राफ स्थापित कर प्रतिदिन रिकॉर्डिंग से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर दुर्घटना की पुनरावृत्ति का पूर्वानुमान किया जाता है ताकि इन जानकारियों के आधार पर पर्याप्त सावधानी बरती जा सके तथा प्रभावितों को दुष्प्रभाव के क्षेत्र से सुरक्षित क्षेत्रों में लाया जा सके ।

प्राकृतिक रूप से घटित होने वाली घटनाएँ भारी वर्षा, अल्पवर्षा, सूखापन, आंधी-तूफ़ान, समुद्री तूफ़ान (चक्रवात), टोरनाडो, जलीय टोरनाडो, शीतलहर, भीषण-लू, बर्फबारी, मेघ-विस्फोट, भू-स्खलन, हिम-स्खलन आदि भू-स्तरीय मौसम संबंधी आपदाएं हैं। ये आपदाएं भी अत्यधिक मात्रा में जन-समूह का विनाश करती है। भारत मौसम विज्ञान विभाग के अलावा, मौसम से सम्बंधित विभिन्न स्वैच्छिक संगठनों, शोधकर्ताओं और विचारकों के द्वारा तापमान में उतार-चढ़ाव, वर्षा होने या न होने की स्थिति, वायु दिशा व गति, बादलों की स्थिति, वायु में आर्द्रता आदि के आधार पर भारी वर्षा, अल्पवर्षा, सूखापन, आंधी-तूफ़ान, समुद्री तूफ़ान (चक्रवात), टोरनाडो, जलीय टोरनाडो, शीतलहर, भीषण-लू, बर्फबारी, मेघ-विस्फोट, भू-स्खलन, हिम-स्खलन आदि आपदाजनक परिघटनाओं के पूर्वानुमान किया जाता है । ज्ञातव्य है कि देश में वर्ष 2015 की मानसूनी वर्षा के अप्रैल में जारी पूर्वानुमान में देश में 88% वर्षा की संभावना व्यक्त की गई थी । इसके कारण देश के कृषक समुदाय के साथ-साथ आर्थिक आचार-व्यवहार में संलग्न संगठन भी चिंतित हो गया था । इन्हीं पूर्वानुमानों के आधार पर ही आपदा प्रबंधन के तहत आपदा की स्थिति में सावधानी, राहत और बचाव की व्यवस्था की जाती है । समुद्री चक्रवात की स्थिति में हजारों लोगों को समुद्र के तटीय क्षेत्रों से अस्थायी रूप से हटाकर अन्यत्र बसाया जाना, भयंकर सूखा की स्थिति में शासकीय स्तर पर राहत कार्यों के क्रियान्वयन से भुखमरी और पलायन की समस्या से निजात दिलाया जाना, उष्ण-लहर या शीतलहर की स्थिति में जीवानानुकूल वातावरण के निर्माण की उचित व्यवस्था करना, चक्रवात, भू-स्खलन या हिमस्खलन की स्थिति में बेघर लोगों को बसाए जाने की उचित व्यवस्था किया जाना आदि राहत और बचाव कार्यों की तैयारियाँ मौसम

पूर्वानुमानों के आधार पर ही लिए जाते हैं ।

जैविक आपदाएं

जैव-मंडल के प्रत्येक जीवधारी प्रकृति की कठपुतली मात्र है । जीवधारियों के विकास व अन्य क्रियाकलाप उनके लिए प्रकृति की अनुकूलता या प्रतिकूलता पर पूर्णतया निर्भर होता है । वैज्ञानिक शोध व निष्कर्ष से हमें ज्ञात है कि जुरासिक काल में पृथ्वी पर पाए जाने वाले विशालकाय प्राणी "डायनासोर" सैकड़ों वर्षों से विलुप्त हो चुके है। इतना ही नहीं, आधुनिकीकरण की महामारी से अनेक जीव-जंतु भी विलुप्तता के कगार पर हैं। इसके विपरीत टीबी, कैंसर, हैजा, डेंगू, स्वाइन फ्लू, चिकुन-गुनिया आदि नई-नई बीमारियों के जीवाणु स्वतः पनपते जा रहे हैं । इसी तरह पशु-पक्षियों, फसलों आदि में भी नई-नई बीमारियाँ प्रस्फुटित हो रही हैं। इस बात में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वर्तमान में गुमनाम जीवधारी किसी भयंकर महामारी के चपेट में आकार विलुप्त हुए होंगे। इन परिवर्तनों का कारण चाहे जो भी हो पर ये घटनाएँ भूतकाल में हुए सामूहिक विनाश को इंगित करती हैं। अतएव भयंकर बीमारी आदि जैविक कारणों से घटित होने वाली आपदाएँ इस वर्ग में आती हैं ।

राजनीतिक आपदाएं

आतंकवादी हमले को भी इसी दुष्परिणाम के रूप में देखा जा रहा है । विभिन्न देशों के बीच राजनीतिक या राजनयिक कारणों से युद्ध होने से राजनीतिक आपदाएं निर्मित होती हैं। इसके अलावा कई देशों में आतंरिक राजनीतिक कारणों से भी आतंकवाद-अलगाववाद रूपी आपदाएँ बनी हुई हैं । इन आपदाओं में भी जान-माल की अपार क्षति सुनिश्चित होती है । अनेक घर परिवार टूट कर बिखर जाते हैं, हजारों बेघरबार होते हैं । इन सब कारणों से निर्मित आपदाएँ राजनीतिक आपदाओं के वर्ग में आती हैं ।

इन आपदाओं की स्थिति में भी सामूहिक विनाश व पलायन के साथ-साथ महामारी के प्रकोप और मौसम संबंधी प्रतिकूलता से राहत और बचाव कार्यों में बाधा पहुँचती है । समुचित प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता संबंधी मौसम पूर्वानुमान के उपयोग से इन आपदाओं की प्रकोप में कुछ कमी लाई जा सकती है।

सामुदायिक आपदाएं

पर्यटन, मेला, उत्सव, जुलूस, राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय खेल-कूद प्रतियोगिताएं आदि भीड़-भाड़ वाले कार्यक्रमों में संसाधनों व व्यवस्था की कमी से होने वाली दुर्घटना सामुदायिक आपदाएं कहलाती हैं । बिगड़ते मौसम, आतंकवादी गतिविधि या अन्य प्राकृतिक-कृत्रिम कारणों से कई बार ऐसे कार्यक्रमों में प्रतिबन्ध की स्थिति बन जाती है जो आपदा का कारण निरुपित होते

हैं । एक ओर जहाँ अमरनाथ यात्रा को कई बार मौसम कारणों से रोक दिया जाता है या कुछ ही दिनों के लिए ही रखा जाता है तो दूसरी ओर अप्रिय घटना की संभावना को देखते हुए समुद्री क्षेत्रों में पर्यटन, मत्स्योद्योग आदि को अस्थायी रूप से प्रतिबंधित भी किया जाता है। इतना ही नहीं राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय खेल-कूद में अनेक अवसर पर मौसम कारणों से बाधा पहुँचती है। कोहरा, भारी बर्फबारी, भारी वर्षा, गरज चमक वाली भीषण मौसम के कारण पर्यटन के विभिन्न माध्यमों पर अस्थायी तौर पर रोक लगा दी जाती है। कहने का अर्थ यह है कि सामुदायिक कार्यक्रमों के सफल आयोजन के लिए मौसम पूर्वानुमान की अनदेखी करना आपदा प्रबंधन के तहत उचित नहीं है। मौसम पूर्वानुमानों के द्वारा ऐसी कार्यक्रमों में दुर्घटनाओं की संभावनाएं कम की जा सकती हैं।

औद्योगिक आपदाएं

कल-कारखानों, खदानों, रेल, बस, वायुयान आदि में दुर्घटनाजन्य आपदाएँ इस वर्ग में आती हैं । ऐसे स्थलों पर मशीनों, उपकरणों आदि में पुरानापन या अपेक्षाकृत निम्न स्तरीय कल-पुर्जों के उपयोग से खराबी आने, मौसम की प्रतिकूलता, महत्वपूर्ण चालक-परिचालकों की असावधानी या अपर्याप्त प्रशिक्षण आदि के कारण जानलेवा दुर्घटनाएँ हो जाती हैं । अनेकों बार सुनाने में आता है कि कारखानों में जहरीली गैस लीक होने के कारण अनेकों काल-कवलित हो जाते हैं । कौन नहीं जानता है कि वर्ष 1984 में भोपाल की कंपनी यूनियन कार्बाइड में हुए गैस त्रासदी में हजारों लोगों की मृत्यु हुई और कई हजार लोग शारीरिक विकलांगता के चपेट में आये थे। उन दिनों कंपनी में शेष बची मिथाईल आईसो सायानाईड गैस को न्युट्रलाईज किए जाने के लिए आपदा प्रबंधन के तहत ही आसपास के क्षेत्र में चार-पाँच स्थानों पर अस्थायी मौसम वेधशाला स्थापित कर प्रत्येक घंटे में तापमान और वायु दिशा व गति की जानकारी व तापमान आधारित वायु दिशा का पूर्वानुमान जारी लिए जाने की व्यवस्था की गई थी ताकि गैस लीक होने की स्थिति में वायु प्रवाह वाले क्षेत्र में उचित सावधानियाँ बरते जाने का प्रबंध यथासमय किया जा सके।

यह भी सर्वविदित है कि नागरिक उड्डयन संबंधी सम्पूर्ण क्रिया-कलाप आपदा प्रबंधन के तहत ही मौसम आंकड़ों व पूर्वानुमानों पर निर्भर होता है । विमानों की उड़ान के लिए प्रस्तावित मार्ग की मौसम संबंधी औपचारिकताएं पूरी की जाती है। इसके तहत विभिन्न ऊंचाई पर वायु की दिशा व गति, तापमान, आपदाजनक बादलों की उपस्थिति आदि के आंकड़े व पूर्वानुमान ज्ञात किए जाते हैं। वायुयान की उड़ान बहते पानी में नौकायन के सामान ही होता है । इसमें वायुयान के उड़ान की दिशा उपरी वायु प्रवाह की दिशा से बहुत अधिक

प्रभावित रहती है । इसी प्रकार वायुयान के उड़ान भरने या उतरने के समय तापमान, वायु गति और सतही दृश्यता आदि की जानकारी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अतएव उड़ान संबंधी व्यवस्था में मौसम संबंधी निराकरण अत्यंत आवश्यक होती है।

आज का मानव मौसम संबंधी सूचनाओं, पूर्वानुमानों का अनेक क्षेत्र में अनुप्रयोग करने लगा है। मौसम की उपयोगिता निवास के स्थलों का चुनाव, खान-पान, वस्त्रधारण, पर्यटन, तीज-त्यौहार, खेल-कूद, सामुदायिक कार्यक्रमों, स्वास्थय संबंधी क्रिया-कलाप, पशु-पालन, यातायात के साधनों के चुनाव, फसलोत्पादन आदि में किया जा रहा है। इनके साथ ही आपदा प्रबंधन में भी मौसम पूर्वानुमानों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। अत: यह कहना गलत नहीं होगा कि आपदा प्रबंधन और मौसम पूर्वानुमान एक दूसरे के सहचरी हैं ।

बादल भिगो गए रातोंरात

❖ *नागार्जुन*

मॉनसून उतरा है
जहरी खाल की पहाड़ियों पर

बादल भिगो गए रातोंरात
सलेटी छतों के
कच्चे-पक्के घरों को
प्रमुदित हैं गिरिजन

सोंधी भाप छोड़ रहे हैं
सीढ़ियों की
ज्यामितिक आकृतियों में
फैले हुए खेत
दूर-दूर...दूर-दूर
दीख रहे इधर-उधर
डाँड़े के दोनों ओर
दावानल-दग्ध वनांचल
कहीं-कहीं डाल रहीं व्यवधान

चीड़ों कि झुलसी
पत्तियाँ
मौसम का पहला
वरदान
इन तक भी पहुँचा है

जहरी खाल पर
उतरा है मानसून
भिगो गया है
रातोंरात सबको
इनको, उनको,
हमको, आपको
मौसम का पहला
वरदान
पहुँचा है सभी तक...

साहित्य में मौसम से जुड़ी सुंदर अभिव्यक्तियाँ

वैज्ञानिक व तकनीकी बौछार

डार्क मैटर

❖ अशोक कुमार कश्यप

डार्क मैटर यानि श्याम पदार्थ या ऐसा पदार्थ जो दिखाई नहीं देता, मगर अपनी मौजूदगी का पुरजोर अहसास कराता है। अभी तक की खोजों से पता चला है कि ब्रहमांड में 90% से भी ज्यादा डार्क मैटर है। यानि जो कुछ भी द्रव्य या पदार्थ हमें दिखाई दे रहा है पूरे ब्रहमांड में, वो सब 10% से भी कम है।

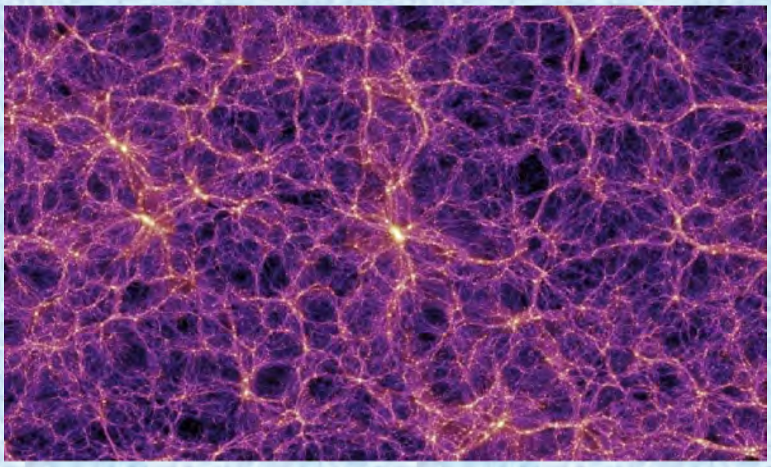

डार्क मैटर का जाल

दरअसल ब्रहमांड में कोई भी वस्तु हमको तभी दिखाई देती है जब वो किसी भी प्रकार के विकिरण का उत्सर्जन करती है या दूसरे शब्दों में कहा जाए तो, वो वस्तु जो प्रकाश छोड़ती है या परावर्तित करती है या फिर प्रकाश अवशोषित करती है हमें दिखाई देती है। डार्क मैटर किसी भी प्रकार का विकिरण उत्सर्जित नहीं करता और ना ही प्रकाश छोड़ता, अवशोषित करता या परावर्तित करता है। लेकिन यह सभी वस्तुओं पर एक जबरदस्त गुरुत्वाकर्षण बल यानि खिंचाव आरोपित करता है। जिससे कि उसके अस्तित्व का हमें पता चलता है। यह ऐसे ही है जैसे हमारी भावनाएं। स्नेह, प्यार, गुस्सा, नफरत आदि जो दिखाई नहीं देती मगर महसूस हो जाती हैं। जैसे कभी कभी किसी जगह कुछ ना होते हुए भी अनजाना सा डर महसूस होता है और कहीं हम अपने आपको बहुत सुरक्षित महसूस करते हैं जबकि दूर दूर तक कोई नहीं होता, जैसे कि कोई आध्यात्मिक बारिश हो रही हो।

डार्क मैटर ना तो ठोस है ना द्रव और ना ही गैस। सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह किसी भी दृश्य पदार्थ से कोई क्रिया नहीं करता है। मगर डार्क मैटर को ही पूरे ब्रहमांड को मौजूदा सांचे में ढालने और हरेक सितारे की साज संभाल का जिम्मेदार माना जाता है । यह ब्रहमांड के कोने कोने में हर जगह

❖ मुख्यालय के कृषि मौसम प्रभाग में मौसम विज्ञानी "ए" के पद पर कार्यरत हैं

मौजूद है। यहाँ तक कि ये दृश्य पदार्थ के परमाणुओं के भीतर भी मौजूद है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यह मूलभूत कणों (न्यूट्रोन, प्रोटोन, इलैक्ट्रोन तथा क्वार्क, लैपटॉन, ग्लूऑन) से नहीं बना, जिनसे हाइड्रोजन, हीलियम, कार्बन आदि तत्व बने हैं। यह एक्सिऑन, न्यूट्रिनो, अचर न्यूट्रिनो आदि से बना माना जाता है। यही कारण है कि वर्ष 1970 से ही इसे पकड़ने की या पहचानने की कोशिश की जा रही है मगर अभी तक 100% दावे के साथ इसे पहचाना नहीं जा सका है।

इस गहन ब्रह्माण्ड में एक खास ताकत और काम कर रही है जिसे देखना या महसूस करना भी मुमकिन नहीं है। लेकिन ये सभी ब्रह्मांडीय पिंडों, सितारों, आकाशगंगाओं को एक दूसरे से दूर धकेल कर गति प्रदान करती है। इस ताकत का नाम है डार्क एनर्जी। माना जाता है कि इस यूनिवर्स में 74% डार्क एनर्जी, 21% डार्क मैटर और सिर्फ 5% के लगभग दृश्य पदार्थ है।

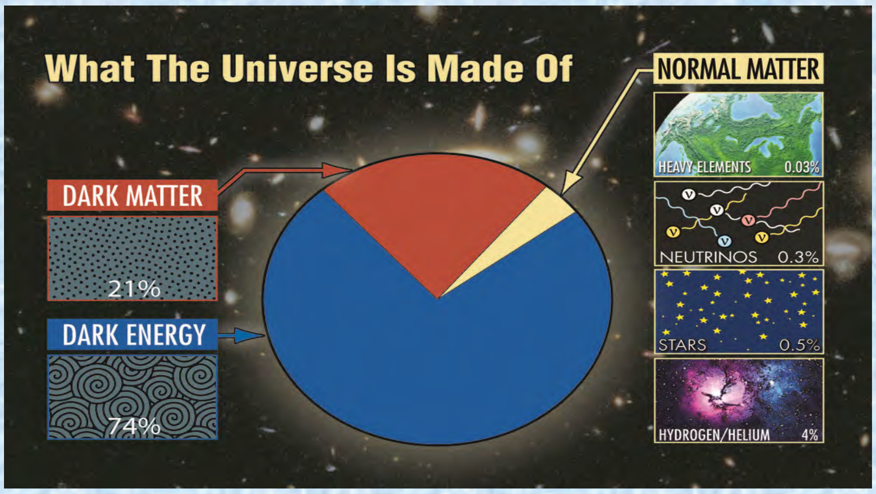

ब्रह्मांड का पदार्थ

डार्क मेटर यानि श्याम पदार्थ की निम्नलिखित श्रेणियाँ हो सकती हैं-

1. बायरानीक श्याम पदार्थ 2. अबायरानीक श्याम पदार्थ 3. अत्यधिक गर्म श्याम पदार्थ 4. गर्म श्याम पदार्थ 5. शीतल श्याम पदार्थ

अत्यधिक गर्म श्याम पदार्थ में कण सापेक्ष गति से गतिमान रहते हैं। न्यूट्रिनो इसी तरह का कण है। इस कण का द्रव्यमान कम होता है और विद्युत् चुम्बकीय बल तथा प्रबल आणविक बल का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। प्रयोग बताते हैं कि न्यूट्रिनो श्याम पदार्थ या डार्क मैटर का बहुत छोटा हिस्सा है।

शीतल श्याम पदार्थ जिसके कण सापेक्ष गति नहीं करते हैं। ये बड़े द्रव्यमान वाले पिंड जैसे श्याम विवर को गुरुत्वीय वक्रता के आधार पर अलग कर सकते हैं। सामान्य बायरोनिक पदार्थ वाले पिंड जैसे भूरे वामन या माचो (MACHO भारी तत्वों के अत्यंत घनत्व वाले पिंड) भी हैं । मगर ये कुल श्याम पदार्थ का छोटा सा हिस्सा हैं।

वर्ष 1930 के आस पास कैलिफोर्निया इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी के स्विस एस्ट्रोनॉमर 'फ्रिट्स विकी' कोमा क्लस्टर में मौजूद आकाशगंगाओं की गति का अध्ययन कर रहे थे। उन्होंने देखा कि आकाशगंगा के केंद्र के चारों ओर घूमते सितारों की रफ़्तार बहुत ज्यादा थी, जबकि उनके पदार्थों के वजन के मुताबिक ये रफ़्तार काफी कम होनी चाहिए थी। इसका मतलब था की इन आकाशगंगाओं में कोई ऐसी चीज मौजूद थी जो दिखाई भले नहीं दे रही थी मगर सितारों की रफ़्तार पर जोरदार असर डाल रही थी। विकी ने इस अदृश्य ताकत का नाम 'डार्क मैटर' रखा। इसके बाद वर्ष 1970 में वाशिंगटन की एक युवा वैज्ञानिक 'वेरा रूबिन' ने भी अद्भुत खोज की। न्यूटन और आइंस्टीन के एक खास सिद्धान्त के मुताबिक किसी भी केंद्र की परिक्रमा कर रहे सबसे नजदीक के पिंड की गति उसी केंद्र की परिक्रमा कर रहे सबसे दूर के पिंड से ज्यादा होती है। मिसाल के तौर पर सूर्य की परिक्रमा कर रहे सबसे नजदीकी बुद्ध ग्रह की गति दूर प्लूटो की गति से कई गुना ज्यादा है । फिजिक्स के नियम पूरे ब्रह्माण्ड में एक समान लागू होते हैं। परंतु वेरा रूबिन ने अपने ऑब्जर्वेशन में पाया कि आकाशगंगाओं में सबसे बाहर की तरफ मौजूद सितारों की गति और केंद्र के नजदीक परिक्रमा कर रहे सितारों की गति एक समान थी। तो क्या न्यूटन और आइंस्टीन के सिद्धांत गलत थे ? वेरा रूबिन के नतीजों को हबल और फ्रिट्स विकी की खोज से मिलाकर देखा गया तो एक बार फिर ये बात सामने आई कि आकाशगंगाओं में कोई ऐसी चीज मौजूद है, जो नजर नहीं आती मगर वो हर सितारे पर भरपूर असर डाल रही है। इसी की वजह से सभी सितारे एक समान गति से केंद्र की परिक्रमा कर रहे हैं। ये अदृश्य चीज ही डार्क मैटर या श्याम पदार्थ है। आइंस्टीन के ग्रेविटेशनल लेंसिंग सिद्धांत के अनुसार शून्य में गुरुत्वाकर्षण का असर इतना अधिक होता है कि एक सीधी रेखा में चलने वाली प्रकाश की किरण भी मुड़ जाती है। अंतरिक्ष में मौजूद ऑब्जर्वेटरी हब्बल के माध्यम से वैज्ञानिकों ने देखा तो रोमांच से भर उठे। सुदूर आकाशगंगाओं से आती रोशनी जैसे ही सितारों के आस पास से गुजरती है वो गोलाकार रूप में मुड़ जाती है। सवाल ये है कि क्यों ? जवाब मिला डार्क मैटर में। सितारों के चारो तरफ डार्क मैटर का जबरदस्त गुरुत्वाकर्षण है। जो प्रकाश को भी मुड़ने पर मजबूर कर देता है।

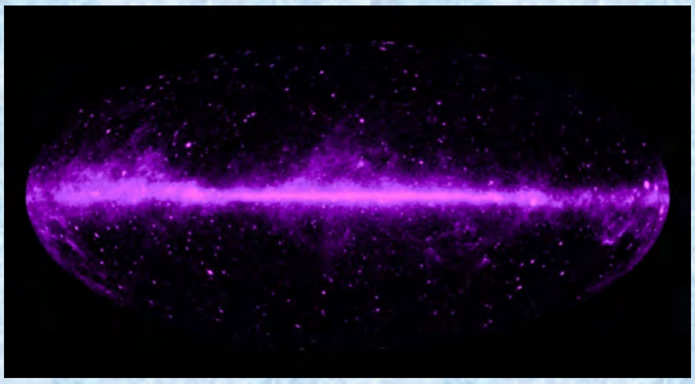

हमारी आकाशगंगा

ब्रहमांड का ये सबसे बड़ा रहस्य वर्ष 1920 तक छिपा रहा। मगर विज्ञान ने जब ऐसी तकनीक विकसित की जिससे आसमान के पार झाँका तो दूसरी आकाशगंगाओं के बारे में भी पता चला। हब्बल ने पहली बार बताया कि हमारा ब्रहंमाड जितना हम सोचते हैं उससे कहीं ज्यादा विशाल है। हमारी आकाशगंगा तो मात्र इसका छोटा सा हिस्सा है। आज हम दावे के साथ कह सकते हैं कि हमारी आकाशगंगा जैसी करोड़ों अरबों आकाशगंगाएं हैं और हरेक आकाशगंगा में अरबों सितारे तथा ब्लैक होल हैं। जो सूर्य जैसे या उससे भी बड़े हो सकते हैं और हरेक सितारे का अपना अलग सौर परिवार है और उस सौर परिवार में हमारी पृथ्वी जैसे या उससे छोटे और बड़े कितने ही ग्रह हैं। इससे समझा जा सकता है कि इस जगत में हमारी स्थिति क्या है।

ब्रहमांड की आकाशगंगाएँ

बिगबैंग थ्योरी के अनुसार लगभग 14 अरब वर्ष पहले शून्य में हुए ऊर्जा के विस्फोट से जन्मे दृश्य पदार्थ तथा डार्क मैटर। शुरू में दृश्य पदार्थ के नाम पर सिर्फ इलेक्ट्रॉन और प्रोटोन ही थे और डार्क मैटर का गुरुत्वाकर्षण बल मकड़ी के जाले के समान सब जगह फैला था और इस खिंचाव ने ही शुरुआती कणों को एक दूसरे के करीब आने पर मजबूर किया और नए नए पदार्थ बने और बनीं आकाशगंगाएं, सितारे, ग्रह। और इस तरह हो गई शुरुआत इस सृष्टि की। इस प्रकार डार्क मैटर के कण आपस में तो जुड़ नहीं पाते, मगर दृश्य पदार्थ को कुछ नया रचने के लिए मजबूर करते हैं। ये पूरे ब्रहमांड में स्याह घने बादल की तरह फैले हैं।

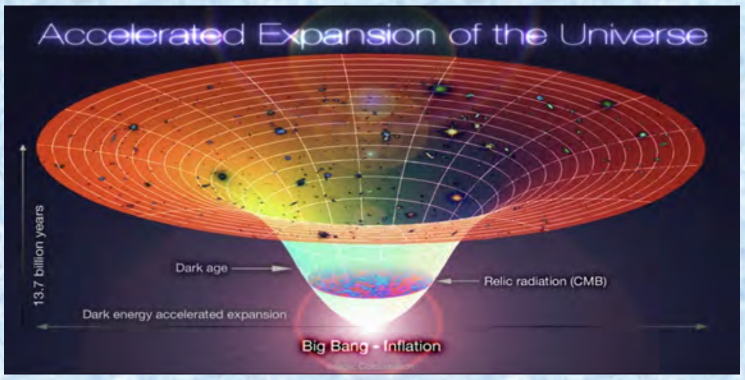

बिग बैंग

डार्क मेटर के बारे में सबसे ज्यादा सनसनीखेज खुलासा तब हुआ जब इस बात के सबूत मिले कि डार्क

मैटर दूर आकाशगंगाओं पर ही असर नहीं डालता बल्कि वो हमारी पृथ्वी के आर पार से गुजरता हुआ हमारे चारों ओर भी मौजूद है। इतना ही नहीं हमें ये भी पता चला कि हमारी पृथ्वी और चन्द्रमा के बीच डार्क मैटर का एक बहुत बड़ा बादल मौजूद है, जिसकी वजह से चन्द्रमा पर पृथ्वी के अलावा गुरुत्वाकर्षण का एक अतिरिक्त खिंचाव भी काम कर रहा है। ऐसा माना जाता है कि डार्क मैटर को वीकली इंटरेक्टिव मैसिव पार्टिकल्स (WIMPs), एक्सिओन्स और माचोज जैसे नायाब और अनोखे कण मिलकर बनाते हैं। डार्क मैटर जब सूर्य को भेदता है तो एक और अनोखे कण न्यूट्रिनोज को जन्म देता है। ऐसा ही तब भी होता है जब यह पृथ्वी के दहकते हुए कोर से गुजरता है। वर्ष 2009 में अमेरिका के 'मिनिसोटा' राज्य में स्थित, बंद पड़ी, कुछ लोहे की पुरानी खानों में जमीन से लगभग एक किलोमीटर नीचे स्थापित किए गए कुछ सेंसरों ने डार्क मेटर के दो कणों को पकड़ा था। ये सेंसर जर्मेनियम के बने हैं क्योंकि जर्मेनियम के अणुओं के बीच खाली जगह बहुत कम होती है। ये सेंसर परम शून्य तापमान पर यानि (- 273 ०C) डिग्री सेंटीग्रेड पर रखे गए हैं जिससे ये तापमान में हल्के से हल्के अंतर को भी पहचान लेते हैं। यह इस सिद्धांत पर कार्य करते है कि आमतौर पर डार्क मैटर सामान्य पदार्थ से कोई क्रिया नहीं करता, परंतु बेहद दुर्लभ मौकों पर इसके कण (WIMPs) सामान्य पदार्थ के नाभिक से टकरा जाते हैं और जब भी ऐसा होता है, जर्मेनियम में कम्पन होता है और उसका तापमान बढ़ जाता है जिसे ये सेंसर माप लेते हैं। गहराई में ये सेंसर इसलिए रखे हैं कि कॉस्मिक किरणें भी वहां न पहुँच पाएं लेकिन पिछले चालीस वर्षों में सिर्फ एक बार घटी इस घटना के अलावा कोई और सबूत अभी तक हाथ नहीं लगा है। हिग्स बोसॉन (ईश्वरीय कण) की खोज करने वाली सर्न प्रयोगशाला की महामशीन (लार्ज हैड्रान कोलाइडर) से भी डार्क मैटर को पहचानने की खोज हो रही है। सर्न की एक थ्योरी के अनुसार डार्क मैटर के कण इतने छोटे हो सकते हैं कि पकड़ में न आ पाएं। वैसी हालत में अगर ये अपने साथ कुछ ऊर्जा भी ले उड़ते हों तो इनके अस्तित्व के बारे में बहुत जल्दी पता लग जाएगा।

एक अनुमान ये है कि डार्क मैटर मृत तारों से बना हो सकता है क्योंकि हर गैलेक्सी या आकाशगंगा के अरबों खरबों तारों में से कुछ अपना जीवन काल पूरा करके कृष्ण विवर यानि ब्लैक होल, न्यूट्रॉन तारा या बुझा हुआ तारा बनकर आकाशगंगा के आस पास जमा हो जाते हैं और चमकते नहीं इसलिए दिखते नहीं। केवल गुरुत्वबल के द्वारा ही अपने अस्तित्व का आभास कराते हैं। अनुमान ये भी है कि डार्क मैटर हमें ज्ञात परमाणुओं वाले मूलकणों की तरह किन्ही अज्ञात कणों से मिलकर बना होना चाहिए। इसके मूलकण हमें बता सकते हैं कि समय हमेशा आगे की तरफ ही क्यों चलता है ? इन्हीं से सुपरसिमेट्री वाले सिद्धांत कि ब्रहमांड के हर कण और मूलकण का एक जुड़वा प्रतिरूप भी होता है जिसकी जानकारी मिलेगी। इससे बहुत सी अज्ञात बिमारियों का पता व इलाज संभव हो सकेगा।

वैज्ञानिक व तकनीकी बौछार

विमानन मौसम विज्ञान

❖ *जगदम्बा प्रसाद*

सन 1903 में राइट बंधुओं (Wright Brothers) की पहली उड़ान से ही यह अनुभव किया गया था कि विमान प्रचालन (Aircraft Operation) में मौसम एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्राचल है। हमेशा से ही मौसम, विमानन के क्षेत्र में प्रथम श्रेणी की चुनौती रहा है और आज भी है। वायु नौवहन (Air Navigation) की सुरक्षा, मितव्ययता, नियमितता, एवं दक्षता की दिशा में योगदान करने के लिए विश्व के सभी देश विश्व मौसम संगठन (WMO) तथा अंतरराष्ट्रीय नागर विमानन संगठन (ICAO) के द्वारा प्रदत्त मानकों एवं दिशानिर्देशों के अनुसार अपने राष्ट्रीय मौसम विज्ञान सेवाओं के अंतर्गत मौसम प्रेक्षण लेने, पूर्वानुमान करने, निगरानी एवं चेतावनी प्रणाली को स्थापित करने और अनुरक्षण करने के लिए कानूनी तौर पर बाध्य हैं। भारत में भारत मौसम विज्ञान विभाग एकमात्र राष्ट्रीय एजेंसी है जो विमानन मौसम विज्ञान (Aviation Meteorology) से संबंधित सभी मामलों के लिए जिम्मेदार है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा विमानन सेवाएं प्रदान करने के मुख्य उद्देश्य

- सभी वैमानिकी उपयोगकर्ताओं को वर्तमान मौसम प्रेक्षण (Current Weather Observations) उपलब्ध कराना।
- विमानन वेधशालाओं के संजाल का रखरखाव तथा विमानन की दृष्टि से मौसम संबंधी खतरों के लिए पूर्वानुमान एवं चेतावनी जारी करना।
- उड़ान की योजना के लिए मौसम संबंधी सेवायें प्रदान करना।
- विमानक्षेत्र जलवायु विज्ञान तैयार करना तथा उपलब्ध कराना।
- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन की आवश्यकताओं के अनुसार विमानचालकों (Aviators) को उत्पादों के विकीर्णन (Dissemination) में प्रक्रियाओं एवं प्रारूपों का अनुपालन करना।
- विमानन उद्योग में तकनीकी आवश्यकताओं के उत्तरोत्तर विकास के लिए उत्तरदायी होना।
- विमानन मौसम विज्ञान में क्षमता निर्माण के लिएमानव संसाधन का विकास करना।

❖ मुख्यालय के केंद्रीय विमानम मौसम प्रभाग में मौसम विज्ञानी "बी" के पद पर कार्यरत हैं

- विमानन मौसम विज्ञान एवं तात्कालिक अनुमान(Aviation Meteorology & Now-casting) के क्षेत्र में अनुसंधान (Research) एवं अन्वेषण (Investigation) कार्य का दायित्व लेना तथा प्रोत्साहित करना।
- क्षेत्रीय पूर्वानुमानकर्ताओं के मध्य परिसंचरित करने के लिए समय-समय पर प्रचालन नियमावली (Periodical operational manual) प्रकाशित करना।
- सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि सुरक्षित, दक्ष, एवं किफायती वायुयान प्रचालन हेतु विमानन उद्योग का समर्थन करना।

विमानन मौसम विज्ञान संगठन

भारत मौसम विज्ञान विभाग विमानन सेवाओं की आवश्यकताओं को 04 मौसम निगरानी कार्यालयों (MWOs) {चेन्नै, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई),18 विमान क्षेत्र मौसम विज्ञान कार्यालयों (जिसमें उपर्युक्त 04 मौसम निगरानी कार्यालय सम्मिलित हैं) तथा 58 वैमानिक मौसम स्टेशनों के संजाल के माध्यम से पूरा करता है। इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय नागर विमानन संगठन का उष्णकटिबंधीय परामर्शी केंद्र (TCAC), नई दिल्ली में स्थित है जो कि उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की अवस्थिति, आगे बढ़ने की दिशा एवं गति का पूर्वानुमान, केंद्रीय दाब और अधिकतम सतही पवन से संबंधित परामर्श सूचना मौसम निगरानी केंद्रों (MWOs), विश्व क्षेत्रीय पूर्वानुमान केंद्रों (WAFCs) तथा अंतरराष्ट्रीय ऑपमेट डाटा बैंकों (International OPMET data banks) को उपलब्ध कराता है।

केंद्रीय विमानन मौसम प्रभाग (CAMD) भारत में विमानन मौसम सेवाओं का प्रधान कार्यालय है। यह कार्यालय विमानन के तकनीकी पहलुओं के लिए अंतरराष्ट्रीय नागर विमानन संगठन (ICAO), विश्व मौसम संगठन (WMO), एअरलाइंस, महानिदेशक नागर विमानन (DGCA) तथा भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (Airport Authority of India, AAI) के साथ संपर्क भी स्थापित करता है। प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पूर्ति मौसम विज्ञान प्रशिक्षण संस्थान (MTI), पुणे करती है। एअरपोर्ट मौसम उपकरणों का संस्थापन एवं अनुरक्षण (Installation & Maintenance) उपमहानिदेशक (सतह उपकरण), पुणे के द्वारा किया जाता है। विमानन के लिए दूरसंचार आवश्यकताओं का प्रबंधन नई दिल्ली में कार्यरत दूरसंचार प्रभाग (ISSD) तथा भा.वि.प्रा. के दूरसंचार एकक द्वारा किया जाता है। भारत में विमानन मौसम सेवाओं से संबंधित दिशानिर्देश, केंद्रीय विमानन मौसम प्रभाग, भारत मौसम विज्ञान विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तक ”भारत में विमानन के लिए मौसम से संबंधित प्रक्रिया नियमावली 2012” में दिया गया है।

हितग्राही एवं उपयोगकर्ता एजेंसियाँ

- महानिदेशक नागर विमानन (DGCA)
- भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (AAI)
- राष्ट्रीय एवं अतरराष्ट्रीय सिविल एअरलाइनों के परिचालक
- रक्षा सेवाएँ
- आफशोर आपरेशन (ONGC)
- चार्टर्ड उड़ान तथा हेलीकॉप्टर सेवाओं सहित हवाई सर्वेक्षण
- तलाशी एवं बचाव अभियान तथा आपदा प्रबंधन
- खेल एवं मनोरंजन, ग्लाइडर, गर्म वायु- गुब्बारे आदि

भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा जारी पूर्वानुमान तथा चेतावनियाँ

- अवतरण (TREND) एवं उत्प्रस्थान (TAKE- OFF) पूर्वानुमान
- टर्मिनल विमानक्षेत्र पूर्वानुमान (TAF)
- मार्ग पूर्वानुमान
- विमानक्षेत्र चेतावनी
- स्थानीय/क्षेत्रीय पूर्वानुमान
- सिग्मेट चेतावनी (उष्णकटिबंधीय चक्रवात तथा ज्वालामुखीय राख के उत्सर्जन तथा इनके अलावा अन्य विशिष्ट मौसम घटनाओं जैसे तड़ित झंझावात, कपासी वर्षा, प्रक्षोभ, हिम, पर्वतीय तरंग, धूल एवं रेत भरी आँधी आदि हेतु)

विमानन मौसम सेवाएँ

निम्न विमानन मौसम सेवाएँ प्रदान की जाती हैं:-

- वर्तमान मौसम प्रेक्षण
- उड़ान की विभिन्न अवस्थाओं जैसे क्रूज तथा अवतरण हेतु पूर्वानुमान
- सिग्मेट सहित विभिन्न चेतावनियाँ
- संक्षेपण एवं प्रलेखन (Briefing and Documentation)
- उड़ान नियोजन डाटा तथा पूर्वानुमान
- विमानन जलवायवी सूचना (Aviation Climatological Information)

भारत मौसम विज्ञान विभाग के विमानन मौसम संगठन का चार्ट

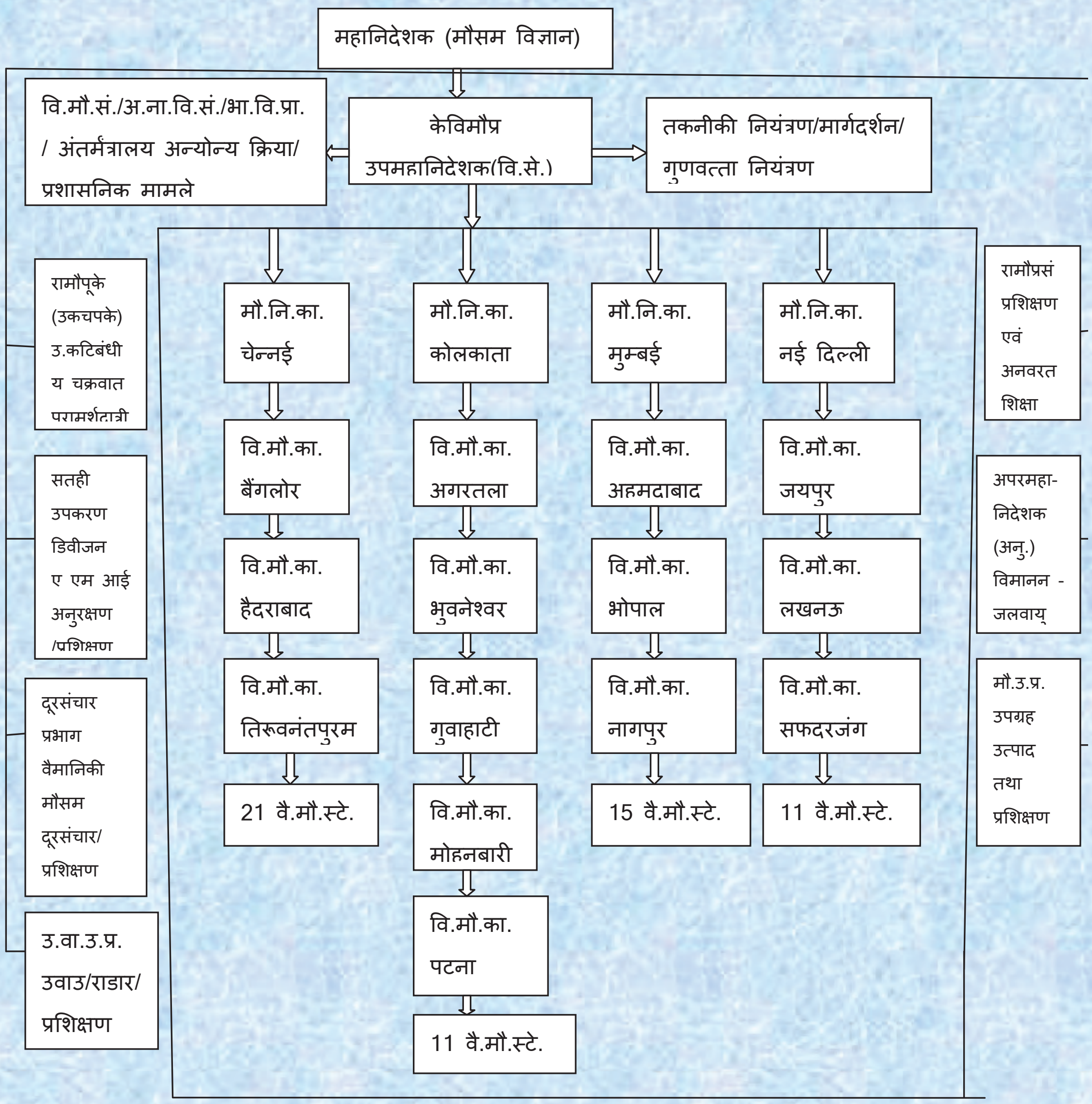

संक्षिप्ती: वि.मौ.सं. - विश्व मौसम संगठन, अ.ना.वि.सं. - अतरराष्ट्रीय नागर विमानन संगठन, भा.वि.प्रा. - भारतीय विमानपत्तन प्राधिकारण, के.वि.मौ.प्र. - केंद्रीय विमानन मौसम प्रभाग, वि.से. - विमानन सेवायें, रा.मौ.पू.के. - राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केंद्र, ए.एम.आई. - एअरपोर्ट मौसम उपकरण, उ.वा.उ.प्र. - उपरितन वायु उपकरण प्रभाग, रा.मौ.प्र.सं. - राष्ट्रीय मौसम प्रशिक्षण संस्था, मौ.उ.प्र. - मौसम उपग्रह प्रभाग, मौ.नि.का. - मौसम निगरानी कार्यालय, वि.मौ.का. - विमानक्षेत्र मौसम कार्यालय, वै.मौ.स्टे. - वैमानिक मौसम स्टेशन, अनु. - अनुसंधान, उ.क.च.प.के. - उष्णकटिबंधीय चक्रवात परामर्शदात्री केंद्र ।

मौसम निगरानी कार्यालयों (Meteorological Watch Offices) की जिम्मेदारियाँ:-

- अपने उड़ान सूचना परिक्षेत्र में उड़ान प्रचालन को प्रभावित करने वाली मौसम परिस्थितियों की सतत निगरानी रखना।

- अपने उड़ान सूचना परिक्षेत्र से संबंधित सिग्मेट (SIGMET) तथा अन्य सूचनायें तैयार करना।
- सिग्मेट सूचना (सार्थक मौसम सूचना) का आदान-प्रदान पड़ोसी देशों के अन्य मौसम निगरानी कार्यालयों के साथ करना।
- सिग्मेट सूचना तथा अन्य मौसमीय सूचना के साथ अन्य मौसम निगरानी कार्यालयों के सिग्मेट संदेशों को सहयोगी वायु यातायात सेवा इकाइयों को प्रदान करना।
- उनके सिग्मेट सूचना को भारत में अन्य पूर्वानुमान कार्यालयों को प्रेषित करना।
- पूर्व- ज्वालामुखीय उत्सर्जन क्रिया, ज्वालामुखीय विस्फोट तथा ज्वालामुखीय मेघ से सम्बंधित प्राप्त सूचना जिसके लिए सिग्मेट सम्बंधित उड़ान सूचना केंद्रों/क्षेत्र नियंत्रण केंद्रों तथा इससे सम्बंधित ज्वालामुखीय मेघ परामर्शी केंद्र को पहले जारी नहीं किया गया है, को प्रदान करना।

विमानक्षेत्र मौसम कार्यालयों (Aerodrome Meteorological Office)की जिम्मेदारियाँ:-

- पूर्वानुमानों जैसे विश्व क्षेत्रीय पूर्वानुमान तंत्र (World Area Forecast System) के द्वारा निर्गत उत्पाद तथा उड़ानों के प्रचालन के लिए उनके सभी विमानक्षेत्रों (Aerodromes) से अन्य सुसंगत सूचना (relevant information) को तैयार तथा/अथवा प्राप्त करना।
- स्थानीय मौसम परिस्थितियों के पूर्वानुमानों को तैयार तथा/अथवा प्राप्त करना।
- उनके स्थानीय विमानक्षेत्र तथा साथ-साथ अन्य विमानक्षेत्रों, जहाँ उनसे सम्बंधित वैमानिक मौसम स्टेशन हैं, के लिए मौसम परिस्थितियों पर सतत निगरानी रखना।
- उड़ान कर्मी दल के सदस्यों (flight crew members) तथा/अथवा अन्य उड़ान प्रचालनों के कार्मिक (flight operations personnel) के लिए संक्षेपण (briefing), परामर्श (consultation) और उड़ान प्रलेखन (flight documentation) का प्रावधान।
- वैमानिक उपभोक्ताओं को अन्य मौसम सूचना जैसे घंटे/आधे घंटे पर वर्तमान मौसम प्रेक्षण तथा स्पेशल रिपोर्ट, आर.वी.आर. प्रेक्षण, अपेक्षित तत्वों के लिए अनुरोध पर अवतरण/उत्प्रस्थान रिपोर्ट, दाब आँकड़े, रेडार तथा उपग्रह प्रेक्षण, अपने तथा अन्य उड़ान सूचना परिक्षेत्र के सिग्मेट, अन्य स्टेशनों के मेटार जैसा उचित हो, निम्न स्तर के पवन अपरूपण तथा ताप-व्युत्क्रमण, उपलब्ध एअरमैन रिपोर्ट(AIREP's),वोलमेट (VOLMET), एटीआईएस (ATIS), वीओआर (VOR) आदि ब्राडकास्ट के लिए मौसम सूचना उपलब्ध कराना।
- उपलब्ध मौसम सूचनाओं को डिस्प्ले करना।

- मौसम सूचनाओं का अन्य मौसम कार्यालयों के साथ विनिमय (Exchange) करना।
- अवतरण और उत्प्रस्थान पूर्वानुमानों को जारी करना।
- उड़ान प्लानिंग सूचना की आपूर्ति ।
- सुसंगत विमानक्षेत्रों (Relevant Aerodromes) के विमानक्षेत्र चेतावनियों का प्रदाय।
- उड़ानों के प्रचालन के लिए उनके अंतर्गत आने वाले वैमानिक मौसम स्टेशनों को अपने विमानक्षेत्र से पूर्वानुमानों की आपूर्ति।
- विमानक्षेत्र चेतावनी अपने स्थानीय विमानक्षेत्र तथा उनके अंतर्गत आने वाले अन्य वैमानिक मौसम स्टेशनों के लिए जारी करना।
- पूर्व- ज्वालामुखीय उत्सर्जन क्रिया, ज्वालामुखीय विस्फोट तथा ज्वालामुखीय राख मेघ से सम्बंधित प्राप्त सूचना इससे सम्बंधित वायु-यातायात सेवायें एकक, वैमानिक सूचना सेवा एकक, अन्य मौसम निगरानी कार्यालयों तथा विमानक्षेत्र मौसम कार्यालयों को उपलब्ध कराना।

वैमानिक मौसम स्टेशनों (Aviation Meteorological Stations) की जिम्मेदारियाँ:-

- उनके अपने स्टेशन के वर्तमान मौसम प्रेक्षणों तथा उन अन्य स्टेशनों जिनके लिए वर्तमान मौसम प्रेक्षणों की आवश्यकता है, सम्बंधित स्टेशनों से प्राप्त करके वैमानिक उपभोक्ताओं को प्रदान करना।
- उनसे सम्बंधित विमानक्षेत्र मौसम कार्यालय से पूर्वानुमानों को प्राप्त करके उनके अपने स्टेशन से आरम्भ होने वाली उड़ानों के लिए प्रलेखन उपलब्ध कराना।
- उनसे सम्बंधित विमानक्षेत्र मौसम कार्यालय से उनके अपने स्टेशन के लिए टर्मिनल एरोड्रम फोरकस्ट (TAF) तथा विमानक्षेत्र चेतावनी (Aerodrome Warning) प्राप्त करके वैमानिक उपभोक्ताओं को प्रदान करना।
    - पूर्व- ज्वालामुखीय उत्सर्जन क्रिया, ज्वालामुखीय विस्फोट, तथा ज्वालामुखीय राख मेघ से सम्बंधित प्राप्त सूचना को वैमानिक उपभोक्ताओं को प्रदान करना।
    - सिग्मेट (SIGMET) जब और जैसे प्राप्त हो, की आपूर्ति करना।
    -

विमान उड़ान की विभिन्न अवस्थाओं में मौसम विभाग द्वारा प्रदत्त मौसम सेवाएं

क्रमांक	उड़ान की विभिन्न अवस्थाएँ	प्रदत्त मौसम सेवाएँ
1	उड़ान के पूर्व की योजना	उत्प्रस्थान आँकड़े, टर्मिनल विमानक्षेत्र पूर्वानुमान(गंतव्य/वैकल्पिक स्थानों के लिए), आरोहण तथा अवरोहण आँकड़े, पवन तथा तापमान, मार्ग तथा स्तर पूर्वानुमान, सार्थक मौसम पूर्वानुमान ।
2	उत्प्रस्थान	मेटार/स्पेसी (METAR/SPECI), उत्प्रस्थान आँकड़े, विमानक्षेत्र-चेतावनी ।
3	उड़ान समाप्ति पर	आरोहण आँकड़े, चढ़ाई क्षेत्र में सार्थक मौसम, निम्न स्तर पवन अपरूपण सूचना, मौसम रेडार तथा उपग्रह सूचना ।
4	उड़ान स्तर	विभिन्न उड़ान स्तरों के पवन एवं तापमान का पूर्वानुमान, सार्थक मौसम सूचना, सिग्मेट चेतावनी, उपग्रह सूचना ।
5	उतरते समय	टर्मिनल विमानक्षेत्र पूर्वानुमान (गंतव्य/ वैकल्पिक स्थानों के लिए), अवतरण पूर्वानुमान (trend forecast), अवरोहण आँकड़े, निम्न स्तर पवन अपरूपण सूचना, मौसम रेडार तथा उपग्रह सूचना ।
6	अवतरण	मेटार/स्पेसी (METAR/SPECI), विमानक्षेत्र - चेतावनी ।

सुरक्षित विमान प्रचालन के लिए आवश्यक है कि वैमानिकी मौसम पूर्वानुमानकर्ताओं को विमान के मार्ग में तथा सतह पर घटित होने वाले उन मौसम परिघटनाओं, जो कि विमानन के लिए अत्यधिक खतरनाक सिद्ध होते हैं, का पूर्वानुमान भी अपने टर्मिनल एवं मार्ग पूर्वानुमानों में शामिल करना चाहिए। प्रमुख खतरनाक मौसम परिघटनाएँ निम्नवत हैं-

- निम्न मेघ छादन (low cloud ceilings)
- प्रतिबंधित दृश्यताएँ (क्षैतिज तथा ऊर्ध्व दोनों)
- तड़ित झंझावात
- मेघहीन तथा मौसम संबंधित प्रक्षोभ
- वायुयान हिमन
- ओला
- निम्न सतहों पर प्रबल पवन तथा पवन अपरूपण(क्षैतिज तथा ऊर्ध्व दोनों)
- उष्णकटिबंधीय चक्रवात

मार्ग में घटने वाले प्रबल संकटकारी मौसम को किसी विशिष्ट उड़ान सूचना परिक्षेत्र में

संकटपूर्ण मौसम से सम्बंधित सार्थक मौसम चेतावनियों को अन्य वैमानिक पूर्वानुमानों से जोड़कर समाहित किया जा सकता है। दो महत्वपूर्ण परिघटनाओं उष्णकटिबंधीय चक्रवात तथा ज्वालामुखीय राख उत्सर्जन से सम्बंधित सार्थक मौसम चेतावनियों को जारी करने के लिए परामर्श केंद्रों से परामर्शी (Advisories) जारी किए जाते हैं।

प्रेक्षण - सुविधाएँ

अंतरराष्ट्रीय नागर विमानन संगठन के अनुबंध-3 में उल्लिखित लोकेशनों पर एअरपोर्ट मौसम उपकरण संस्थापित लिए जाते हैं :-

- ट्रांसमीसोमीटर : दृश्यता तथा रन- वे दृश्य दूरी की निगरानी (monitoring) के लिए प्रयुक्त होता है।
- मेघतलमापी (Ceilometer) : अवतरण एवं उत्प्रस्थान परिक्षेत्र में निम्न मेघों की ऊँचाई तथा ऊर्ध्व दृश्यता के मापन के लिए प्रयुक्त होता है।
- वर्तमान मौसम यंत्र निकाय (CWIS): पवन दिशा, पवन गति, तापमान तथा ओसांक के सतत निगरानी (monitoring) के लिए प्रयुक्त होता है।
- क्यू.एन.एच.(QNH)/क्यू.एफ.ई.(QFE) की सतत निगरानी हेतु बैरोमीटर प्रयुक्त होते हैं।
- दूरस्थ सूचक पवनयंत्र (Distant indicating wind equipment): इस यंत्र के द्वारा छोटे एअरपोर्ट पर पवन दिशा तथा पवन गति की सतत निगरानी की जाती है।

इसके अतिरिक्त अन्य प्रेक्षण माध्यम (tools) जैसे डाप्लर मौसम रेडार तथा भारतीय मौसम उपग्रह 'कल्पना' के उत्पाद तमाम मौसम प्राचलों विशेषकर निम्न स्तर पवन अपरूपण से सम्बंधित महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराते हैं।

वैमानिक पूर्वानुमान के माध्यम

विभिन्न वैमानिक पूर्वानुमानों को जारी करने हेतु सूचनाएँ:-

- पारम्परिक वेधशालाओं, स्वचालित मौसम स्टेशनों, तथा जलयान रिपोर्टों (ship reports) से प्राप्त सतही प्रेक्षण आँकड़े
- एअरपोर्ट रेडार प्रेक्षण
- उपग्रह प्रेक्षण
- पायलट बैलून तथा रेडियोसोंडे/रेडियोविंड आरोहणों से प्राप्त उपरितन वायु प्रेक्षण।
- एअरक्राफ्ट रिपोर्ट जैसे पायलट रिपोर्ट (PIREPS), एअररिपोर्ट (AIREPS), एअरक्राफ्ट मेटियरोलोजिकल डाटा रिले (AMDAR) रिपोर्ट आदि।
- संख्यात्मक मौसम प्रागुक्ति निदर्श (Numerical Weather Prediction Model)|

- भूमंडलीय, प्रादेशिक मौसम तथा स्थानीय मध्य मापक्रम (local meso-scale) प्रतिरूप।
- प्रतिरूप आधारित विमानन पूर्वानुमान एल्गोरिथ्म्स (जैसे पवन अपरूपण, हिमन, प्रक्षोभ के प्रागुक्ति हेतु एल्गोरिथ्म्स)।
- भारत में विमानन मौसम कार्यालय अंतरराष्ट्रीय नागर विमानन संगठन (ICAO) के विश्व क्षेत्रीय पूर्वानुमान निकाय (WAFS) के संख्यात्मक मौसम प्रागुक्ति (NWP) उत्पाद का उपयोग लम्बी दूरी के अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय उड़ानों के संक्षेपण तथा प्रलेखन में करते हैं।

बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2013-17) के दौरान "विमानन मौसम सेवाओं के संवर्धन" प्रोग्राम के परिपालन हेतु कुल रूपये 115.00 करोड़ का प्रावधान हुआ है। इस प्रोग्राम के उद्देश्य निम्नवत हैं :-

- भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के साथ मिलकर विमानन क्षेत्र में उभरती माँग को पूरा करने हेतु अतिरिक्त आधुनिक उपकरणों को संस्थापित एवं चालू करके विमानन मौसम सेवाओं का संवर्धन तथा उन्नयन करना।
- आईसीएओ (ICAO), डब्ल्यूएमओ (WMO), और डीजीसीए (DGCA) के द्वारा परिभाषित प्रतिमानकों (Norms) के अनुसार सभी एअरपोर्ट पर हवाई प्रचालनों को सुरक्षित बनाये रखने के उद्देश्य से वर्तमान में मौजूद एअरपोर्ट मौसम उपकरणों की रिपेयरिंग, अनुरक्षण, तथा उन्नयन के प्रावधान को पूरा करना।
- हवाई प्रचालनों की सुरक्षा एवं दक्षता हेतु महत्वपूर्ण निर्णय, जैसे उड़ानों का अवतरण, उत्प्रस्थान, तथा घुमाव (Diversion), सुनिश्चित करने हेतु समेकित रूप में वास्तविक समय पर सतत वर्तमान मौसम प्रेक्षण साथ ही साथ किसी स्थान तथा समय विशेष पर सटीक मौसम पूर्वानुमान/चेतावनी सभी उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराना एवं विमानन मौसम विज्ञान मे प्रशिक्षण और अनुसंधान तथा विकास की सुविधा प्रदान करना।
- भारत सरकार की ग्रीनफील्ड पालिसी के अंतर्गत आईसीएओ (ICAO) के निर्देशों के अनुसार प्रस्तावित नवीन ग्रीनफील्ड एअरपोर्टों पर भविष्य की आपरेशनल मौसम जरूरतों को पूरा करना।

गतिविधियाँ

- भविष्य में निर्मित होने वाले एअरपोर्टों पर नवीन विमानन मौसम कार्यालय (AMOs) तथा वैमानिक मौसम स्टेशनों (AMSs) की व्यवस्था के साथ 56

एअरपोर्ट (जिसमें 10 नवीन ग्रीनफील्ड एअरपोर्ट शामिल हैं) के रन वे लोकेशन पर एअरपोर्ट मौसम उपकरणों जिसमें विमानन मौसम प्रेक्षण निकाय (AWOS) शामिल हैं, की स्थापन्न प्रक्रिया। जिनमें से 8 विमानन मौसम प्रेक्षण निकाय स्थापित हो चुके हैं।

- एअरक्राफ्ट मिटिओरोलॉजिकल डाटा रिले (AMDAR) की कार्यान्वयन प्रक्रिया।
- कुछ अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर रन वे दृश्य दूरी (Runway Visual Range) को मापने के लिए 20 अतिरिक्त ट्रांसमीसोमीटर स्थापन्न प्रक्रिया। जिसके अंतर्गत सभी 20 ट्रांसमीसोमीटर(दृष्टि) विभिन्न अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर स्थापित किए जा चुके हैं।
- एअरपोर्ट मौसम कार्यालय (AMO) गुवाहाटी की मौसम निगरानी कार्यालय MWO) के रूप में उन्नयन की प्रक्रिया।
- एअरपोर्ट मौसम उपकरणों (AMIs), जैसे ट्रांसमीसोमीटर, वर्तमान मौसम उपकरण निकाय (CWIS) आदि, के पुर्जों की व्यवस्था घरेलू प्रबंधन अथवा वार्षिक व्यापक प्रबंधन (Annual Comprehensive Maintenance) के द्वारा।
- लेजर सीलोमीटरों की रिपेयरिंग, उन्नयन, संस्थापन तथा प्रचालन (commissioning) एवं वार्षिक व्यापक प्रबंधन की प्रक्रिया।
- आठ एअरपोर्ट पर मौजूद अत्यधिक परिष्कृत समेकित स्वचालित विमानन मौसम निकायों (highly sophisticated integrated automatic Aviation Meteorological systems) के वार्षिक व्यापक प्रबंधन की प्रक्रिया।
- विमानन सुरक्षा के उन्नयन/संवर्धन से सम्बंधित अन्य गतिविधियाँ, गुणवत्ता प्रबंधन तंत्र (QMS) का परिपालन, एअरपोर्ट मौसम कार्यालयों का आईएसओ (ISO) प्रमाणन। इस प्रक्रिया के अंतर्गत अब तक कुछ एअरपोर्ट मौसम कार्यालय तथा केंद्रीय विमानन मौसम प्रभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली युनाइटेड रजिस्ट्रार आफ सिस्टम्स के द्वारा ISO 9001:2008 सर्टीफिकेट प्राप्त कर चुके हैं।

विमान प्रचालन को अत्यधिक प्रतिस्पर्धी तथा सर्वसुलभ बनाने हेतु भारत सरकार ने नई विमानन नीति की उद्घोषणा की है जिसके अंतर्गत छोटे एवं मझोले शहरों तक हवाई यातायात की सुविधा पहुँचाना है। विश्व मौसम संगठन तथा अंतरराष्ट्रीय नागर विमानन संगठन के दिशानिर्देश में हितग्राही एजेंसियों के साथ मिलकर हमारा प्रयास यही होगा कि *"प्रत्येक हवाई उड़ान सुरक्षित एवं मितव्ययी हो।"*

साहित्यिक बहार

सभ्यता का रहस्य

❖ प्रेमचंद

यों तो मेरी समझ में दुनिया की एक हज़ार एक बातें नहीं आती—जैसे लोग प्रात:काल उठते ही बालों पर छुरा क्यों चलाते हैं ? क्या अब पुरुषों में भी इतनी नजाकत आ गई है कि बालों का बोझ उनसे नहीं सँभलता? एक साथ ही सभी पढ़े-लिखे आदमियों की आँखें क्यों इतनी कमज़ोर हो गई है? दिमाग की कमज़ोरी ही इसका कारण है या और कुछ? लोग खिताबों के पीछे क्यों इतने हैरान होते हैं ? इत्यादि—लेकिन इस समय मुझे इन बातों से मतलब नहीं। मेरे मन में एक नया प्रश्न उठ रहा है और उसका जवाब मुझे कोई नहीं देता। प्रश्न यह है कि सभ्य कौन है और असभ्य कौन ? सभ्यता के लक्षण क्या हैं ? सरसरी नजर से देखिए, तो इससे ज़्यादा आसान और कोई सवाल ही न होगा। बच्चा-बच्चा इसका समाधान कर सकता है। लेकिन जरा गौर से देखिए, तो प्रश्न इतना आसान नहीं जान पड़ता। अगर कोट-पतलून पहनना, टाई-हैट कालर लगाना, मेज पर बैठकर खाना खाना, दिन में तेरह बार कोको या चाय पीना और सिगार पीते हुए चलना सभ्यता है, तो उन गोरों को भी सभ्य कहना पड़ेगा, जो सड़क पर बैठकर शाम को कभी-कभी टहलते नजर आते हैं; शराब के नशे से आँखें सुर्ख, पैर लड़खड़ाते हुए, रास्ता चलनेवालों को अनायास छेड़ने की धुन ! क्या उन गोरों को सभ्य कहा जा सकता है ? कभी नहीं। तो यह सिद्ध हुआ कि सभ्यता कोई और ही चीज़ है, उसका देह से इतना सम्बन्ध नहीं है जितना मन से।

> *प्रेमचंद हिन्दी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक हैं । प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया जिसने पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया। इनकी अधिकतर कहानियाँ मे निम्न व मध्यम वर्ग का चित्रण है।*

मेरे इने-गिने मित्रों में एक राय रतनकिशोर भी हैं। आप बहुत ही सहृदय, बहुत ही उदार, बहुत शिक्षित और एक बड़े ओहदेदार हैं। बहुत अच्छा वेतन पाने पर भी उनकी आमदनी खर्च के लिए काफ़ी नहीं होती। एक चौथाई वेतन तो बँगले ही की भेंट हो जाती है। इसलिए आप बहुधा चिंतित रहते हैं। रिश्वत तो नहीं लेते—कम-से-कम मैं नहीं जानता, हालाँकि कहने वाले

कहते हैं—लेकिन इतना जानता हूँ कि वह भत्ता बढ़ाने के लिए दौरे पर बहुत रहते हैं, यहाँ तक कि इसके लिए हर साल बजट की किसी दूसरे मद से रुपये निकालने पड़ते हैं। उनके अफसर कहते हैं, इतने दौरे क्यों करते हो, तो जवाब देते हैं, इस ज़िले का काम ही ऐसा है कि जब तक खूब दौरे न किए जाएँ रिआया शांत नहीं रह सकती। लेकिन मजा तो यह है कि राय साहब उतने दौरे वास्तव में नहीं करते, जितने कि अपने रोजनामचे में लिखते हैं। उनके पड़ाव शहर से पचास मील पर होते हैं। खेमे वहाँ गड़े रहते हैं, कैंप के अमले वहाँ पड़े रहते हैं और राय साहब घर पर मित्रों के साथ गप-शप करते रहते हैं, पर किसी की मजाल है कि राय साहब की नेकनीयती पर सन्देह कर सके। उनके सभ्य पुरुष होने में किसी को शंका नहीं हो सकती।

एक दिन मैं उनसे मिलने गया। उस समय वह अपने घसियारे दमड़ी को डाँट रहे थे। दमड़ी रात-दिन का नौकर था, लेकिन घर रोटी खाने जाया करता था। उसका घर थोड़ी ही दूर पर एक गाँव में था। कल रात को किसी कारण से यहाँ न आ सका। इसलिए डाँट पड़ रही थी।

राय साहब—जब हम तुम्हें रात-दिन के लिए रखे हुए हैं, तो तुम घर पर क्यों रहे ? कल के पैसे कट जायेंगे।

दमड़ी—हजूर, एक मेहमान आ गये थे, इसी से न आ सका।

राय साहब—तो कल के पैसे उसी मेहमान से लो।

दमड़ी—सरकार, अब कभी ऐसी खता न होगी।

राय साहब—बक-बक मत करो।

दमड़ी—हजूर......

राय साहब—दो रुपये जुरमाना।

दमड़ी रोता चला गया। रोजा बख्शाने आया था, नमाज़ गले पड़ गई । दो रुपये जुरमाना ठुक गया। खता यही थी कि बेचारा कसूर माफ कराना चाहता था।

यह एक रात को गैरहाज़िर होने की सज़ा थी ! बेचारा दिन-भर का काम कर चुका था, रात को यहाँ सोया न था, उसका दण्ड ! और घर बैठे भत्ते उड़ानेवाले को कोई नहीं पूछता ! कोई दंड नहीं देता। दंड तो मिले और ऐसा मिले कि ज़िंदगी-भर याद रहे; पर पकड़ना तो मुश्किल है। दमड़ी भी अगर होशियार होता, तो जरा रात रहे आकर कोठरी में सो जाता। फिर किसे खबर होती कि वह रात को कहाँ रहा। पर गरीब इतना चंट न था।

दमड़ी के पास कुल छः बिस्वे ज़मीन थी। पर इतने ही प्राणियों का खर्च भी था। उसके दो लड़के, दो लड़कियाँ और स्त्री, सब खेती में लगे रहते थे, फिर भी पेट की रोटियाँ नहीं मयस्सर

होती थीं। इतनी ज़मीन क्या सोना उगल देती ! अगर सब-के-सब घर से निकल मज़दूरी करने लगते, तो आराम से रह सकते थे; लेकिन मौरूसी किसान मज़दूर कहलाने का अपमान न सह सकता था। इस बदनामी से बचने के लिए दो बैल बाँध रखे थे ! उसके वेतन का बड़ा भाग बैलों के दाने-चारे ही में उड़ जाता था। ये सारी तकलीफें मंजूर थीं, पर खेती छोड़कर मज़दूर बन जाना मंजूर न था। किसान की जो प्रतिष्ठा है, वह कहीं मज़दूर की हो सकती है, चाहे वह रुपया रोज ही क्यों न कमाये? किसानी के साथ मज़दूरी करना इतने अपमान की बात नहीं, द्वार पर बँधे हुए बैल हुए बैल उसकी मान-रक्षा किया करते हैं, पर बैलों को बेचकर फिर कहाँ मुँह दिखलाने की जगह रह सकती है !

एक दिन राय साहब उसे सरदी से काँपते देखकर बोले—कपड़े क्यों नहीं बनवाता ? काँप क्यों रहा है ?

दमड़ी—सरकार, पेट की रोटी तो पूरा ही नहीं पड़ती, कपड़े कहाँ से बनवाऊँ ?

राय साहब—बैलों को बेच क्यों नहीं डालता ? सैकड़ों बार समझा चुका, लेकिन न-जाने क्यों इतनी मोटी-सी बात तेरी समझ में नहीं आती।

दमड़ी—सरकार, बिरादरी में कहीं मुँह दिखाने लायक़ न रहूँगा। लड़की की सगाई न हो पायेगी, टाट बाहर कर दिया जाऊँगा।

राय साहब—इन्हीं हिमाकतों से तुम लोगों की यह दुर्गति हो रही है। ऐसे आदमियों पर दया करना भी पाप है। (मेरी तरफ फिर कर) क्यों मुंशीजी, इस पागलपन का भी कोई इलाज है ? जाड़ों मर रहे हैं, पर दरवाज़े पर बैल ज़रूर बाँधेंगे।

मैंने कहा—जनाब, यह तो अपनी-अपनी समझ है।

राय साहब—ऐसी समझ को दूर से सलाम कीजिए। मेरे यहाँ कई पुश्तों से जन्माष्टमी का उत्सव मनाया जाता था। कई हज़ार रुपयों पर पानी फिर जाता था। गाना होता था; दावतें होती थीं, रिश्तेदारों को न्योते दिये जाते थे, गरीबों को कपड़े बाँटे जाते थे। वालिद साहब के बाद पहले ही साल मैंने उत्सव बन्द कर दिया। फ़ायदा क्या ? मुफ़्त में चार-पाँच हज़ार की चपत खानी पड़ती थी। सारे कसबे में वावेला मचा, आवाजें कसी गयीं, किसी ने नास्तिक कहा, किसी ने ईसाई बनाया लेकिन यहाँ इन बातों की क्या परवा ! आखिर थोड़े ही दिनों में सारा कोलाहल शान्त हो गया। अजी, बड़ी दिल्लगी थी। कसबे में किसी के यहाँ शादी हो, लकड़ी मुझसे ले ! पुश्तों से यह रस्म चली आती थी। वालिद तो दूसरों से दरख्त मोल लेकर इस रस्म को निभाते थे। थी हिमाकत या नहीं ? मैंने फौरन लकड़ी देना बन्द कर दिया। इस पर भी लोग बहुत रोये-धोये, लेकिन दूसरों का रोना-धोना सुनूँ, या अपना फ़ायदा देखूँ। लकड़ी से

कम-से-कम 500) रुपये सलाना की बचत हो गई । अब कोई भूलकर भी इन चीजों के लिए दिक करने नहीं आता।

मेरे दिल में फिर सवाल पैदा हुआ, दोनों में कौन सभ्य है, कुल-प्रतिष्ठा पर प्राण देनेवाले मूर्ख दमड़ी; या धन पर कुल-मर्यादा को बलि देनेवाले राय रतन किशोर !

राय साहब के इजलास में एक बड़े मार्के का मुकदमा पेश था। शहर का एक रईस ख़ून के मामले में फँस गया था। उसकी जमानत के लिए राय साहब की खुशामदें होने लगीं। इज्जत की बात थी। रईस साहब का हुक्म था कि चाहे रियासत बिक जाय, पर इस मुकदमे से बेदाग़ निकल जाऊँ। डालियाँ लगाई गयीं, सिफारिशें पहुँचाई गयीं, पर राय साहब पर कोई असर न हुआ। रईस के आदमियों को प्रत्यक्ष रूप से रिश्वत की चर्चा करने की हिम्मत न पड़ती थी। आखिर जब कोई बस न चला, तो रईस की स्त्री से मिलकर सौदा पटाने की ठानी।

रात के दस बजे थे। दोनों महिलाओं में बातें होने लगीं। 20 हज़ार की बातचीत थी ! राय साहब की पत्नी तो इतनी खुश हुई कि उसी वक्त राय साहब के पास दौड़ी हुई आयी और कहनें लगी—ले लो, ले लो

राय साहब ने कहा—इतनी बेसब्र न हो। वह तुम्हें अपने दिल में क्या समझेंगी ? कुछ अपनी इज्जत का भी खयाल है या नहीं ? माना कि रकम बड़ी है और इससे मैं एकबारगी तुम्हारी आये दिन की फरमायशों से मुक्त हो जाऊँगा, लेकिन एक सिविलियन की इज्जत भी तो कोई मामूली चीज़ नहीं है। तुम्हें पहले बिगड़कर कहना चाहिए था कि मुझसे ऐसी बेहूदी बातचीत करनी हो, तो यहाँ से चली जाओ। मैं अपने कानों से नहीं सुनना चाहती।

स्त्री—यह तो मैंने पहले ही किया, बिगड़कर खूब खरी-खोटी सुनायीं। क्या इतना भी नहीं जानती ? बेचारी मेरे पैरों पर सर रखकर रोने लगी।

राय साहब—यह कहा था कि राय साहब से कहूँगी, तो मुझे कच्चा ही चबा जायेंगे ?

यह कहते हुए राय साहब ने गदगद होकर पत्नी को गले लगा लिया।

स्त्री—अजी, मैं न-जाने ऐसी कितनी ही बातें कह चुकी, लेकिन किसी तरह टाले नहीं टलती। रो-रोकर जान दे रही है।

राय साहब—उससे वादा तो नहीं कर लिया ?

स्त्री—वादा ? मैं रुपये लेकर सन्दूक में रख आयी। नोट थे।

राय साहब—कितनी जबरदस्त अहमक हो, न मालूम ईश्वर तुम्हें कभी समझ भी देगा या नहीं।

स्त्री—अब क्या देगा ? देना होता, तो दे न दी होती।

राय साहब—हाँ मालूम तो ऐसा ही होता है। मुझसे कहा तक नहीं और रुपये लेकर सन्दूक में दाखिल कर लिए ! अगर किसी तरह बात खुल जाय, तो कहीं का न रहूँ।

स्त्री—तो भाई, सोच लो। अगर कुछ गड़बड़ हो, तो मैं जाकर रुपये लौटा दूँ।

राय साहब—फिर वही हिमाकत ! अरे, अब तो जो कुछ होना था, हो चुका। ईश्वर पर भरोसा करके जमानत लेनी पड़ेगी। लेकिन तुम्हारी हिमाकत में शक नहीं। जानती हो, यह साँप के मुँह में उँगली डालना है। यह भी जानती हो कि मुझे ऐसी बातों से कितनी नफरत है, फिर भी बेसब्र हो जाती हो। अबकी बार तुम्हारी हिमाकत से मेरा व्रत टूट रहा है। मैंने दिल में ठान लिया था कि अब इस मामले में हाथ न डालूँगा, लेकिन तुम्हारी हिमाकत के मारे जब मेरी कुछ चलने भी पाये ?

स्त्री—मैं जाकर लौटाये देती हूँ।

राय साहब—और मैं जाकर ज़हर खाये लेता हूँ।

इधर तो स्त्री-पुरुष में यह अभिनय हो रहा था, उधर दमड़ी उसी वक्त अपने गाँव के मुखिया के खेत से जुआर काट रहा था। आज वह रात-भर की छुट्टी लेकर घर गया था। बैलों के लिए चारे का एक तिनका भी नहीं है। अभी वेतन मिलने में कई दिन की देर थी, मोल ले न सकता था। घर वालों ने दिन को कुछ घास छीलकर खिलायी तो थी, लेकिन ऊँट के मुँह में जीरा। उतनी घास से क्या हो सकता था। दोनों बैल भूखे खड़े थे। दमड़ी को देखते ही दोनों पूँछें खड़ी करके हुँकारने लगे। जब वह पास गया तो दोनों उसकी हथेलियाँ चाटने लगे। बेचारा दमड़ी मन मसोसकर रह गया। सोचा, इस वक्त तो कुछ हो नहीं सकता, सबेरे किसी से कुछ उधार लेकर चारा लाऊँगा।

लेकिन जब ग्यारह बजे रात उसकी आँखें खुलीं, तो देखा कि दोनों बैल अभी तक नाँद पर खड़े हैं। चाँदनी रात थी, दमड़ी को जान पड़ा कि दोनों उसकी ओर उपेक्षा और याचना की दृष्टि से देख रहे हैं। उनकी क्षुधा-वेदना देखकर उसकी आँखें सजल हो आयीं। किसान को अपने बैल अपने लड़कों की तरह प्यारे होते हैं। वह उन्हें पशु नहीं, अपना मित्र और सहायक समझता। बैलों को भूखे खड़े देखकर नींद आँखों से भाग गई । कुछ सोचता हुआ उठा। हँसिया निकाली और चारे की फ़िक्र में चला। गाँव के बाहर बाजरे और जुआर के खेत खड़े थे। दमड़ी के हाथ काँपने लगे। लेकिन बैलों की याद ने उसे उत्तेजित कर दिया। चाहता, तो कई बोझ काट सकता था; लेकिन वह चोरी करते हुए भी चोर न था। उसने केवल उतना ही चारा काटा, जितना बैलों को रात-भर के लिए काफ़ी हो। सोचा, अगर किसी ने देख भी लिया, तो उससे कह दूँगा, बैल भूखे थे, इसलिए काट लिया। उसे विश्वास था कि थोड़े-से चारे के लिए कोई

मुझे पकड़ नहीं सकता। मैं कुछ बेचने के लिए तो काट नहीं रहा हूँ; फिर ऐसा निर्दयी कौन है, जो मुझे पकड़ ले। बहुत करेगा, अपने दाम ले लेगा। उसने बहुत सोचा। चारे का थोड़ा होना ही उसे चोरी के अपराध से बचाने को काफ़ी था। चोर उतना काटता, जितना उससे उठ सकता। उसे किसी के फायदे और नुकसान से क्या मतलब ? गाँव के लोग दमड़ी को चारा लिये जाते देखकर बिगड़ते जरूर, पर कोई चोरी के इलजाम में न फँसाता, लेकिन संयोग से हल्के के थाने का सिपाही उधर जा निकला। वह पड़ोस के एक बनिये के यहाँ जुआ होने की खबर पाकर कुछ ऐंठने की टोह में आया था। दमड़ी को चारा सिर पर उठाते देखा, तो सन्देह हुआ। इतनी रात गये कौन चारा काटता है ? हो न हो, कोई चोरी से काट रहा है, डाँटकर बोला—कौन चारा लिए जाता है ? खड़ा रह!

दमड़ी ने चौककर पीछे देखा, तो पुलिस का सिपाही ! हाथ-पाँव फूल गये, काँपते हुए बोला—हुज़ूर, थोड़ा ही-सा काटा है, देख लीजिए।

सिपाही—थोड़ा काटा हो या बहुत, है तो चोरी। खेत किसका है ?

दमड़ी—बलदेव महतो का।

सिपाही ने समझा था, शिकार फँसा, इससे कुछ ऐंठँगा; लेकिन वहाँ क्या रखा था। पकड़कर गाँव में लाया और जब वहाँ भी कुछ हत्थे चढ़ता न दिखाई दिया तो थाने ले गया। थानेदार ने चालान कर दिया। मुकदमा राय साहब ही के इजलास में पेश किया।

राय साहब ने दमड़ी को फँसे हुए देखा, तो हमदर्दी के बदले कठोरता से काम लिया। बोले—यह मेरी बदनामी की बात है। तेरा क्या बिगड़ा, साल-छ: महीने की सज़ा हो जायेगी, शर्मिन्दा तो मुझे होना पड़ रहा है ! लोग यही तो कहते होंगे कि राय साहब के आदमी ऐसे बदमाश और चोर हैं। तू मेरा नौकर न होता, तो मैं हलकी सज़ा देता; लेकिन तू मेरा नौकर है, इसलिए कड़ी-से-कड़ी सज़ा दूँगा। मैं यह नहीं सुन सकता कि राय साहब ने अपने नौकर के साथ रिआयत की।

यह कहकर राय साहब ने दमड़ी को छ: महीने की सख्त कैद का हुक्म सुना दिया।

उसी दिन उन्होंने ख़ून के मुकदमे में जमानत ले ली। मैंने दोनों वृत्तान्त सुने और मेरे दिल में यह ख्याल और भी पक्का हो गया कि सभ्यता केवल हुनर के साथ ऐब करने का नाम है। आप बुरे-से-बुरा काम करें, लेकिन अगर आप उस पर परदा डाल सकते हैं, तो आप सभ्य हैं, सज्जन हैं, जेन्टिलमैन हैं। अगर आप में यह सिफ़त नहीं तो आप असभ्य हैं, गँवार हैं, बदमाश हैं। यह सभ्यता का रहस्य है।

यादों के झरोखे से

उत्तर प्रदेश में मौसम संबंधी घाघ की कहावतें एवं मौसम प्रणालियाँ

❖ पी. प्रसाद

प्रस्तावना:- जब भी इस प्रदेश का कृषक रबी एवम् खरीफ की फसलों के लिए जुताई या बुवाई करता है तो उसका ध्यान आकाश की ओर जाता है। आकाश में होने वाली गतिविधियों का अनुमान करके महाकवि घाघ की कहावतों को गुनगुनाया करता है। इन कहावतों में उसका अटूट विश्वास भी देखा गया है। खासतौर से खरीफ की फसल के लिए जैसे धान की फसल, मॉनसून वर्षा पर अधिक निर्भर करती है। इन पर मौसम संबंधी घाघ की कहावतें गावों, खेतों एवम् खलिहानों में किसान हमेशा दोहराया करता है।

यादों के झरोखे से

यह लेख मौसम मंजूषा के के सितंबर 1993 के अंक में प्रकाशित किया गया था।

❖ पी. प्रसाद, मौसम केंद्र लखनऊ में निदेशक के पद से सेवानिवृत्त हो चुके हैं।

वैसे कवि घाघ उत्तर प्रदेश में कन्नौज के आस-पास के रहने वाले थे। कुछ लोगों का कहना है कि वे मुगल बादशाहों के दरबार में रहकर कृषि एवम् मौसम संबंधी कविताएँ गा-गा कर उन्हें प्रसन्न किया करते थे। वे खगोल विधा के बड़े ज्ञाता थे। घाघ की कुछ कहावतें सिर्फ उत्तर प्रदेश के लिए ही प्रतीत होती हैं।

घाघ की कहावतें और मौसम प्रणालियाँ

मॉनसून वर्षा का दीर्घ अवधि पूर्वानुमान

माघ उखम जेठ का जाड़,
पहिले वर्षा भिग गई ताल।
कहे घाघ हम होय वियोगी,
कुआँ खोदिके धोई है धोबी।

अगर मध्य जनवरी से मध्य फरवरी काल में अधिक आर्द्रता से भरी गर्मी हो, अर्ध मई से अर्ध जून में, जो जेठ का समय होता है, इस काल में यदि ठंड या जाड़ा पड़ने लगे और इसी

काल में इतनी भारी वृष्टि हो जिससे ताल वगैरह वर्षा से उफन जाए तो घाघ कहते हैं कि उस साल सूखा पड़ने की सम्भावना है। मौसम विज्ञान की दृष्टि से जिस साल इस काल में पश्चिमी विक्षोभ या पछुआ हवाओं की मौसम प्रणालियाँ सक्रिय होती हैं तो मई में गर्मी व पड़कर वर्षा होती जिससे उस साल की मॉनसून वर्षा कम होती है और सूखा की सम्भावना बढ़ जाती है।

दिन को बद्दर रात निबद्दर,
बहै पुरवइया झब्बर-झब्बर।
घाघ कहे कोई होनी होई,
कुआँ खोद के धोबी धोई।

यदि मॉनसून काल में आकाश की ऐसी स्थिति हो, जहाँ दिन में खूब बादल बनें, रात में ये बादल लुप्त हो जाएं और पुरवा हवा जोर से बहे तो समझना चाहिए बारिश बहुत ही दूर है। मॉनसून वर्षा की स्थिति कमजोर है।

ऐसा देखा गया है कि जब भी बंगाल की खाड़ी में निम्नदाब/तूफान बनता है और दक्षिणी उड़ीसा के तट को पार करके उसका मुड़ाव पश्चिम-उत्तर- पश्चिम हो जाता है फिर मध्य प्रदेश से होकर उसके गमन की दिशा पश्चिम हो जाती है। जिससे वह गुजरात की ओर चला जाता है। ऐसी स्थिति में मध्य प्रदेश में खूब बारिश होती है। लेकिन उत्तर प्रदेश में पुरवइया हवा बड़ी तेज चलती है जिससे दिन में तो बादल दिखाई देते हैं लेकिन रात को ये बादल लुप्त हो जाते हैं। उत्तर प्रदेश, निम्नदाब तूफान के बर्हिमुखी प्रवाह जहाँ अपसरण प्रक्रिया होती है वह भाग पड़ता है जिससे पुरवइया हवा तेज चली है। ऐसे अवसर पर वर्षा की सम्भावना उत्तर प्रदेश में कम होती है।

दिन में गर्मी, रात में ओस,
कहै घाघ वर्षा सौ कोस।

यदि दिन में गर्मी पड़े और रात में ओस पड़े तो आने वाले समय में बारिश की सम्भावना नहीं रहती। मौसम विज्ञान के अनुसार वायुमंडल स्थिर है और स्थिर अवस्था में वर्षा की कोई सम्भावना नहीं रहती है। मौसम प्रणाली के अनुसार इस क्षेत्र में उच्चदाब या प्रति-चक्रवात है जिससे वहाँ की हवा में अवतलन के कारण दिन में उष्णता है और रात को आकाश साफ होने से ओस हो जाती है।

घट में पानी गरम है,
चिड़िया नहावे घूर।

अण्डा ले चींटी चढ़े,
तो वर्षा भरपूर।

यह कहावत मॉनसून काल के आने के पहले मई और जून में जब दिन में इतनी गर्मी पड़े कि घड़े में रखा पानी बहुत ही गरम हो जाए और गर्मी से व्याकुल चिड़िया धूल अपने ऊपर फैंके या धूल से स्नान करे और चीटियां अपने अण्डों को लेकर सुरक्षित स्थान पर चलने लगें तो समझना चाहिए उस दिन घनघोर बारिश होने वाली है। मौसम विज्ञान के अनुसार मई, जून में जब भी गर्जन के साथ बारिश होने वाली होती है तो दोपहर के बाद गर्मी बढ़ जाती है। हवा का दबाव कम हो जाता है। वायुमंडल अस्थिर हो जाता है, जिससे गर्जन के साथ बारिश खूब होती है।

माघ मा बादल लाल धरै,
सांची जाने पाघर परे।।

यदि फरवरी या मार्च के शुरूआत में बादल लाल रूप धारण करें तो समझिए कि उस दिन ओला पड़ने वाला है।

उत्तर प्रदेश में फरवरी एवम् मार्च के महीने में पश्चिमी विक्षोभ, जिनकी मासिक संख्या इन महीनों में बढ़ जाती है, के अंतर्गत वज्रपात मेघों में दोपहर के बाद आकाश में ऊर्ध्वाधर संवहन विस्तृत हो जाता है, जिनका रंग ऊपर की ओर आवर्तन द्वारा लाल हो जाता है। ये बादल अक्सर ओले लाते हैं।

मॉनसून काल में हवा की दिशाओं को परख कर पूर्वानुमान

सावन पछुआ सीक डुलावे,
सूखी नदियाँ नाव चलावे।

मध्य जुलाई से मध्य अगस्त का महीना सावन का होता है। अगर इस माह में पछुआ हवा हल्की बहे, तो समझिए नदियों में बाढ़ आने वाली है। अक्सर देखा गया है कि जब भी मॉनसून भंग की स्थिति आती है तो मैदानी क्षेत्रों में वर्षा रूक जाती है और उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्रों में वर्षा की मात्रा बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में मॉनसून द्रोणिका उत्तर की ओर सिमट कर हिमालय श्रृखंलाओं के दक्षिण सिरे के साथ लग जाती है। जिससे उत्तर प्रदेश के तराई इलाकों में पछुआ हवा की गति धीमी देखी गई है। इससे हिमालय से निकलने वाली नदियाँ वर्षा के पानी से भर जाती हैं और बाढ़ आने की सम्भावना बढ़ जाती है।11 अगस्त 1968 को मध्य क्षोभ मण्डलीय पश्चिमी- द्रोणी के प्रभाव में पंजाब के आसपास नीचे तल में एक हल्का चक्र बना जिससे उत्तर प्रदेश में नीचे तल में मॉनसून द्रोणी उत्तर की

ओर हिमालय के तराई इलाकों में सिमट गई। जिससे उत्तर प्रदेश के खास तौर से उत्तरी भाग में व्यापक वर्षा हुई।

पुरवा हवा पर घनघोर बारिश का पूर्वानुमान

जो पुरवा पुरवाई पावे,
झूरी नदिया नाव चलावे,
ओरी का पानी बडेरी जावे।

पुरवा हवा का महत्व मॉनसून काल में विभिन्न मौसम प्रणालियों में भिन्न होता है। जैसा कि मॉनसूनी अवदाब, जब मध्य प्रदेश से गुजरता हुआ पश्चिम दिशा में चला है तो उत्तर प्रदेश में बारिश नहीं होती सिर्फ पूर्वी हवा जोरों से चलती है। जबकि सितम्बर के महीने में, जिसे हम भादों कहते हैं, अगर उत्तर प्रदेश में पुरवा हवा जोरों से चले तो समझिए घनघोर बारिश होने वाली है। ऐसी स्थिति उस समय होती है जब अवदाब या निम्नदाब उत्तर प्रदेश में स्थित हो। निम्नदाब के सहचर में पुरवा हवा अभिसरण का काम करती है जिससे घनघोर बारिश होती है। 12 सितम्बर 1970 में गहरे अवदाब ने इलाहाबाद के निकट स्थित होकर पुरवा हवा के साथ उत्तर प्रदेश में घनघोर बारिश की इसलिए उत्तर प्रदेश के किसान मॉनसून काल में ऐसा कहते रहते हैं कि सावन का पछुआ और भादों का पुरवा घनघोर बारिश लाते हैं।

लेखक का सामना जब भी मॉनसून काल में उत्तर प्रदेश के अधिकारियों के साथ हुआ, चाहे वह कृषि विभाग हो, सचिवालय हो या समाचार सम्पादक या दूरदर्शन के निदेशक हों, घाघ की कहावतों को सुनना पड़ता था। इस संबंध में लेखक ने घाघ की कुछ कविताओं की मौसम प्रणालियों से तुलना की है और अंत में उपर्युक्त कहावतों को विशिष्ट मौसम प्रणालियों से चरितार्थ किया है।

ये कहावतें सिर्फ उत्तर प्रदेश में ही लागू हो सकती हैं। यहाँ के किसान घाघ की कहावतों से बहुत ही परिचित हैं। जब भी हवा के बहाव की दिशा, बादलों की दिशा, गति और आकाश की स्थिति बदली, घाघ की कहावतें लोगों के होंठों पर आ जाती है। हाँ यह ही नहीं, जीव-जन्तुओं के स्वभाव में परिवर्तन से भी मौसम संबंधी पूर्वानुमान घाघ की कहावतों में पाए जाते हैं।

यादों के झरोखे से

द्रव्यों की व्याख्या

❖ *जयानंद भट्ट*

क्रियागुणवत् समवायि कारण मिति द्रव्यलक्षणम (1)
पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाश कालो दिगात्मा मन इति द्रव्याणि (2)
(वैशेषिक दर्शन: अ.1/आ.1/सूत्र 1515)

व्याख्या

जिसमें क्रिया ग्रहण करने की शक्ति हो या गुण हो या किसी वस्तु का उपादान कारण हो सके उसको द्रव्य कहते हैं। (1)

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन ये नौ द्रव्य हैं। (2)

इन द्रव्यों में से पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और मन के पाँच द्रव्य परमाणु वाले, परिच्छिन्न अर्थात एकदेशी हैं। ये सक्रिय द्रव्य हैं जो कि क्रिया से प्रभावित होकर अपनी अवस्थाओं को परिणत करते हैं अर्थात् बदलते हैं जिस प्रकार पृथ्वी अर्थात् मिट्टी के अनेक परमाणुओं में संयोग विभाग रूपी क्रिया से घड़ा उत्पन्न हो जाता है। ये पाँच परिच्छिन्न द्रव्य ही किसी भी कार्यद्रव्य के उपादान कारण हो सकते हैं। अन्य जो चार द्रव्य (आकाश, काल, दिशा और आत्मा) हैं वे परमाणु रहित हैं, निष्क्रिय हैं तथा सर्वत्र विद्यमान होने से विभु अर्थात् व्यापक हैं इसलिए ये चार द्रव्य किसी भी कार्यद्रव्य के उपादान कारण नहीं हो सकते अर्थात् इनसे कोई कार्य उत्पन्न नहीं हो सकता।

यादों के झरोखे से

यह लेख मौसम मंजूषा के सितंबर 1993 के अंक में प्रकाशित किया गया था।

- *जयानंद भट्ट मौविमनि का कार्यालय से प्रशासनिक सहायक के पद से सेवानिवृत्त हो चुके हैं। सेवानिवृत्ति के पश्चात भी आध्यात्मिक अध्ययन एवं लेखन कार्य से जुड़े है। उनकी दो पुस्तकें 'ब्रहम ज्ञान' और 'ब्रहम चक्र" प्रकाशित हो चुकी हैं।*

जो द्रव्य परमाणुसहित (परिच्छिन्न) हैं उन्हें कारण द्रव्य कहते हैं और जो द्रव्य अनेक कारणद्रव्यों के संयोग से उत्पन्न होता है उसे कार्यद्रव्य (वस्तु) कहते हैं। कारण द्रव्य नित्य होते हैं और कार्यद्रव्य अनित्य होते हैं। उपादन ही समवाय कारण है, क्योंकि जिसका कार्य के साथ नित्य संबंध रहे वही समवाय कारण कहलाता है, उपादान कारण के अतिरिक्त और किसी कारण का कार्य के साथ नित्य संबंध नहीं रहता। जिस प्रकार एक घड़े के बहुत से कारण जैसे:- 1 कुम्हार 2 दोनों कपालों का संयोग 3 दण्ड और चाक आदि। परन्तु इनमें से घड़ा बनने पर सब कारण अलग हो जाते हैं केवल मिट्टी या दोनों कपालों का संयोग ही घड़े के साथ रहता है।

* कारण किसे कहते हैं?

ज्ञान के अतिरिक्त, कार्य के लिए जिसका होना अनिवार्य हो, उसके बिना किसी प्रकार कार्य न बन सके उसे कारण कहते हैं।

* कार्य किसे कहते हैं?

जो पूर्व विद्यमान न हो, कारण के संबंध से उत्पन्न होकर एक पृथक व्यक्ति को उत्पन्न करे उसको कार्य कहते हैं।

* नित्य किसे कहते हैं?

जो वस्तु अपनी सत्ता के लिए किसी अन्य द्रव्य की अपेक्षा नहीं रखती, जो उत्पन्न और नाश से रहित हो तथा सदा विद्यमान रहे वह नित्य कहलाती है।

* अनित्य किसे कहते हैं?

जो नित्य न हो वह अनित्य है। अर्थात् जो वस्तु सत्ता के लिए अन्य द्रव्य की अपेक्षा रखती हो, उत्पन्न और नाश होने वाली हो तथा सदा विद्यमान न रहे वह अनित्य कहलाती है।

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर,

कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।

❖ *कबीरदास*

काव्य फुहार

स्वामी विवेकानंद

❖ सुमन चट्टोपाध्याय
मौसम विज्ञानी-'बी'
प्रादेशिक मौसम केंद्र कोलकाता

जीवन के लक्ष्य को मिली उचित दिशा
निकल गई मन से असत् भावना की निशा।
सम्पूर्ण धरती पर हुआ नव अरुणोदय
हे वीर संत स्वामी अपार करुणामय !
शांति मिलेगी कीजिए मन का उत्तरण
अंतर स्वच्छ होने से मिलेगा देव दर्शन ।
अनाथ भूखों को करो अन्न वस्त्र का दान
इस तरह बना लो अपना सारा जहान ॥
मिलेगी मुक्ति जन्म चक्र से
पराभूत होगा काल
तुम्हारी वाणी शिक्षा से धरा होगी खुशहाल ।
स्वामी जी की कृपा से
जग ने जाना भारत दर्शन
धर्म का अर्थ त्याग सेवा प्रेम शुद्ध अंत करण:
पूर्व से पश्चिम सभी को मिला
शांति का संधान
हे मुनिवर उज्ज्वल ज्ञान ज्योति का करो ! कृपादान ।
विश्व को तुम्हारा मार्गदर्शन बढ़ाएगा भारत का सम्मान
अहिंसा सेवाव्रती हमारा देश करेगा जगत का कल्याण ॥
हे वीर संत भारत माँ के रत्न सर्वश्रेष्ठ संतान
अनंत ज्योतिर्लोक से हम पर कृपा करो हे महान ॥

करगिल के वीर

❖ पूनम सिंह
मौसम विज्ञानी-'ए'
प्रादेशिक मौसम केंद्र नई दिल्ली

हे मातृभूमि भारत! तुझको सतत नमन है।
जिसका पवित्र आँचल भूलोक का चमन है।
जिसकी हजारों नदियों, गिरिवर, जलाशयों से,
होती है अमिय वर्षा, जिसका धवल गगन है।
माते! तुम्हारी छवि को सब जग निहारता है।
करुणामयी, दयामय, कहकर पुकारता है।
ओजस्विता के आगे, दुश्मन भी भागते हैं।
करगिल में प्राण-रक्षा की भीख माँगते हैं।
जब दुश्मनों ने तेरे, आँचल पे दाग डाले।
तब तेरे सपूतों ने, किये मौत के हवाले।
हर नौजवान युवती, जय माँ पुकारते थे।
हर भारतीय सैनिक, दस-दस को मारते थे।
तेरी भुजाएं रग-रग में ज़ोश भर रहीं थीं।
दुश्मन की टुकड़ियों को, बेहोश कर रही थीं।
करगिल तुम्हारे चेहरे का नूर बन गया था।
भारत का बच्चा-बच्चा, सब शूर बन गया था।

काव्य फुहार

माँ की पुकार सुनकर, जन-मन कराहता था।
कैसे करें सुरक्षा, राष्ट्र सोचता था।
दुश्मन की चाल टेढ़ी, रास्ता भटक गया था।
खाने चला कबाब, तो हड्डी अटक गया था।
यह देश शूरमा का, वह भूल कर रहा था।
निज देश के हितों के, प्रतिकूल चल रहा था।

जब पाँव टिक गये तो, वे भागे जा रहे थे।
निज देश में पहुँचकर, वे दुम हिला रहे थे।
जननी के धवल आँचल में फिर हुआ उजाला।
प्रमुदित हुआ हिमालय, धोकर के दाग काला।
करगिल तुम्हारी छवि को वीरों ने है निखारा।
कर प्राणों का समर्पण, जब माँ ने था पुकारा।

नभ में हमारे पूर्वज, भयभीत हो रहे थे।
फहरे विजय पताका, आशीष दे रहे थे।
इतिहास होगा साक्षी, वीरों ने कर दिखाया।
करगिल की सरज़मी पर, दुश्मन का कर सफाया।

हे देश के सपूतो! माता की लाज रखना।
प्राणों की आहुती दे, माता का ताज रखना।

मेट्रो रेल

❖ *कालूराम शर्मा*
वैज्ञानिक सहायक
मौसम वेधशाला-जोधपुर

दिल्ली में मेट्रो रेल का देखा मैने कमाल ।
चहुँ ओर मेट्रो रेल ने मचाया धमाल।
दिल्ली में मेट्रो रेल ने सफर किया आसान ।
मेट्रो रेल की दिल्ली मे अलग ही पहचान।।
मेट्रो रेल मे सफर से होती समय की बचत।
नहीं लगती है धन की भी अतिरिक्त चपत।।
दिल्ली मेट्रो रेल के टिकटों की पहचान।
सिक्के जैसे टिकटों मे छिपा है फरमान।।
टिकट लगाते ही खुलते है स्टेशन के द्वार।
देखकर ये स्वागत आनंद होता है अपार।।
सुरक्षा में मेट्रो रेल का नहीं कोई सम।
किसी बात का मन मे नहीं रहता है गम।।
सरपट दौड़ती मेट्रो रेल करती हवा से बातें।
रूकते ही, यात्री मेट्रो की तरफ दौड़ जाते।।
सिम-सिम की तरह खुलते मेट्रो रेल द्वार ।
बंद होते दरवाजे करते सबका आभार।
ठण्डी ठण्डी हवा के बीच ध्वनि पुकार।
दरवाजों से दूर रहो यात्री समझदार।।

स्टेशन आने की सूचना का कराती भान।
दरवाजें खुलने की दिशा का कराती ज्ञान।।
महिलाओं, बुजुर्गो,विकलांगों का उचित स्थान।
देती है सीख, करो हमेशा इनका सम्मान।।
मेट्रो रेल की सेवा दिल्ली में जबरदस्त ।

काव्य फुहार

देखकर मेट्रो रेल मन हुआ मस्त।।
सफाई मे मेट्रो रेल स्टेशन बेमिसाल।
खुश हुआ मन देख स्वच्छ स्टेशन का हाल।।
बधाई हो जिन्होंने मेट्रो रेल बनाई।
दिल्ली मे यातायात की नई क्रांति आई।।

मैं गीत सुनाता हूँ

❖ नीलोत्पल चतुर्वेदी
प्रादेशिक मौसम केंद्र- कोलकाता
कनिष्ठ अनुवादक

मैं गीत सुनाता हूँ ।
प्राची से सूरज की किरणें
नभ गुड़हल सा रक्तिम कर दें
या फिर शशि की चंचल आभा
गगन कलश को मधु से भर दें
पेड़ों के कोमल पत्तों पर
टप टप गिरती बूंदों की मैं
धुन बन जाता हूँ ।
मैं गीत सुनाता हूँ ॥

मेरे चरणों को धोए सागर
हिम किरीट शोभित मस्तक पर
माटी चंदन तन कुंदन सा
न्यौछावर मन मंदिर के घंटे पर
अगणित फूलों से सुंदर विकसित
संस्कृत मानस का मैं
हंस विवेकी बन जाता हूँ ।
मैं गीत सुनाता हूँ ॥

गंगा का निर्मल जल शस्य श्यामला
कर देता वसुधा थल
गायों की पदरज से धूमिल
पवन धूसरित कर दे अविचल
पक्षी का मधुरिम कलरव
कान्हा की वंशी धुन बन जाए तब
राधा की प्रीति दिखाता हूँ ।
मैं गीत सुनाता हूँ ॥

बदरी

❖ *अवधेश प्रसाद*
मौसम विज्ञानी– ए
मौसम कार्यालय बाबतपुर

मैं बदरी , नीले गगन में तैरती
चाँद सूरज को आगोश में लेती ।
मनोहारी दृश्य, धरा का आवरण बदलती
लुभावनी परिदृश्य रगबिरंगी घटा बिखेरती।

मैं बदरी, सुबह-शाम की बेला में
इन्द्रधनुष की रंग बिखेरती ।
होकर मदमस्त मेरी अदा पर
नृत्य प्रियतमा की, मोरनी निहारती।

मैं बदरी, जब बनकर बूंद
आसमां से जमीं पर गिरती ।

काव्य फुहार

प्यास बुझाती सबकी मैं
निर्मल करती आंचल धरा की ।
मैं बदरी, नदियों झरनों को जीवन देती
कलकल छलछल का वेग वो पातीं ।
हरियाली की चादर फैला कर
धरती की मैं लाज बचाती ।

मैं बदरी -साम्य मधुर मनमोहक
बूंदों को लेकर समंदर से उठती ।
नीचे उतरती चलती धरा की ओर
भारत माता के पैरों को पखारती ।

मुझ बदरी की राह देखते
मधुर मिलन की राह बनाती ।
वायु के अश्वों पर सवार
द्वी रथों से मैं उड़ती चलती ।

इस बदरी की घनघोर घटा
पुलकित करती मेरा तन मन रे।
लुढक गए गालों पर दो मोती
यादों की बदरी घिर घिर आई रे।

अपनी बात

❖ *स्वप्ना मित्रा*
प्रशासनिक अधिकारी-।।
प्रादेशिक मौसम केंद्र कोलकाता

कहना चाहती हूँ मैं अपनी जिंदगी की बात,
खुशी और दुख भरी यादों साथ।
सुंदर जीवन बिता रही थी माँ-पिता के संग
अचानक जीवन में आया भयानक तूफान
पिता चल बसे, उम्र थी बहुत कम।

फिर कट रहा था समय खुशी से।
पता चला एक दिन मुझे है बीमारी,
मेरे खून में शामिल है बहुत मीठा,
हो गई है डायबिटीज ।

मैं बोलती हूँ मीठा, सोचती हूँ मीठा,
पर अफसोस खून की मिठास ने दिया है
शरीर में दोष।
कहे मेरे अपने न करो तनाव,
इलाज है इसका आसान
आलस मत करो चलो फिरो कैलोरी घटाओ
इस तरह बीमारी की समस्या को सुलझाओ।

जानती हूँ जब छोड़ जाऊँगी धरती
तब ही संग छोड़ेगी मेरी बीमारी मीठी ।
पर जब मैं रहती हूँ ऑफिस में साथियों संग
भूल जाती हूँ अपनी सारी बीमारी की बात।
बीतेंगे दिन, सब बातें होंगी पुरानी
भूल जाएंगे सब मेरी दुख भरी कहानी।

काव्य फुहार

'मैं गधा हूँ'

❖ *आर.बी.एस नारायण*
मौसम विज्ञानी-'ए'
मौसम कार्यालय मुंबई

वातानुकूलित कक्ष में बैठ,
मैं हुकुम तो नहीं दे सकता हूँ
शरीर में कितने ही घाव हो,
दिल में चाहे दर्द हो, बता तो नहीं सकता हूँ
मजूरी करना ही मेरा धर्म है,
मैं कभी विरोध तो नहीं कर सकता हूँ
मुझे दुनियादारी नहीं आती,
क्योंकि मैं गधा हूँ जी-मैं गधा हूँ।

जिसने जब भी लात मार के भगाया,
बोझ लेकर भागते चला जाता हूँ
नमक की सौगंध, कभी चाबुक का डर,
सारी जिंदगी हमाली करता आया हूँ
बेस्ट वर्कर या राष्ट्रीय सम्मान की आशा तो,
मैं कभी नहीं कर सकता हूँ
मुझे दुनियादारी नहीं आती,
क्योंकि मैं गधा हूँ जी-मैं गधा हूँ।

राशन पर भाषण दे, अपना उल्लू
तो सीधा नहीं कर सकता हूँ
घूस, रिश्वत ले, बंगला कार
तो नहीं खरीद सकता हूँ
बोगस टेंडर या सरकारी माल खा-खाकर
मैं डकार तो नहीं ले सकता हूँ
मुझे दुनियादारी नहीं आती,
क्योंकि मैं गधा हूँ जी-मैं गधा हूँ।

छोटे क्या और बड़े क्या,
जनाब कहता हूँ सलाम दुआ करता हूँ
चूहे, छुछुंदर को भी कई बार
काला नाग समझ कर, मैं डरता हूँ
इंसानों की तरह अपना नफा नुकसान
सोचकर,
जमीर तो मैं नहीं बेच सकता हूँ
मुझे दुनियादारी नहीं आती,
क्योंकि मैं गधा हूँ जी-मैं गधा हूँ।
'ढेंचू-ढेंचू चिल्लाकर, दिल की भड़ास
निकाल लेता हूँ,
गम कम कर लेता हूँ
अच्छा लगता है,
जब कोई काम निकालने,
गधे को भी बाप बनाता है,
सच कहता हूँ
मुंबई में रखो या मोहनबारी ले चलो,
मेरी किस्मत,
सिर्फ गधा मजूरी करता हूँ
मुझे दुनियादारी नहीं आती,
क्योंकि मैं गधा हूँ जी-मैं गधा हूँ।

'देश में मेरे गणतंत्र है'

❖ *आर.डी. मेश्राम*
सहायक मौसम विज्ञानी 'ए'
प्रादेशिक मौसम केंद्र, नागपुर

सूरज की अलमस्त किरण ने,
उन्मुक्त पवन ने,
मदमस्त शेर की गर्जन ने,

काव्य फुहार

मोहक मोर की थिरकन ने,
अल्हड़ हिरणों की फुदकन ने,
कहा, देश में मेरे गणतंत्र है।

लहराते गेहूँ की बाली ने
अमराई आमों की डाली ने,
मुस्काती गोरी के गालों की लाली ने,
उधो की साली, माधो की घरवाली ने,
कहा, देश में मेरे गणतंत्र है।

फूलों की फुलवारी ने,
होली की पिचकारी ने,
बच्चों की किलकारी ने,
पान वाले पनवाड़ी ने,
गागर छलकाती पनिहारी ने,
कहा, देश में गणतंत्र है।

मंदिर के भजन की तान ने,
मस्जिद में गूंजती अजान ने,
गुरूद्वारे से आती गुरबानी ने,
चर्च के ईशु गान ने,
कहा, देश में मेरे गणतंत्र है।

जवानों के फौलादी सीनों ने,
किसानों के खेत खलिहानों ने,
वैज्ञानिकों के अनुसंधानों ने,
मजदूरों के बहते पसीने ने,
कहा, देश में मेरे गणतंत्र है।

संस्कृत भाषा

❖ *मिलन प्रसाद भट्टाचार्य*
मौसम विज्ञानी 'ए'
प्रादेशिक मौसम केंद्र- कोलकाता

देव वाणी संस्कृत भाषा की महिमा है
अपरंपार।
आदि ग्रंथ ऋग्वेद ने दी समाज को ज्ञान
किरणें अपार ॥

शास्त्रीय संगीत का व्यवहार 'पाणिनि' ने
बताया ।
'सामवेद' ने जग में पहला "संगीत' रचाया ॥

'सा' से होता है षडज, 'रे' से ऋषभ,
'गा' से गंधार, 'मा' से मध्यम ।
'प' से पंचम 'ध' से धैवत,
'नी' से निषाद, यही थे पहले सुर सप्तम ॥

यजुर्वेद ने सबसे पहले 'श्रम विभाग' को
अपनाया, उसका महत्व बताया।
अथर्ववेद ने 'आयुर्वेद शास्त्र' को जन्म दिया,
चिकित्सा विधान समझाया॥

संस्कृत भाषा की शुद्धता और नम्रता है सभी
भाषाओं के आगे।
लेकिन इसी भाषा को सीखने से आज
भारतीय दूर भागे॥
सम्पूर्ण देश में आज न्यून मात्र रह गए
संस्कृत भाषा भाषी।

काव्य फुहार

हमारी उदासीनता के कारण "देव भाषा"
आज हुई बनवासी ॥

विदेशों में संस्कृत भाषा का अभी भी है
कितना सम्मान।
विदेशी संगीत में 'संस्कृत' मिलाकर बढ़ा
दिया है इसका मान ॥

'फिलिप गिलॉस ओपेरा' ने तो संस्कृत भाषा
में 'भगवत गीता' को गाया।
'मैट्रिक्स रिवोल्यूशन' की प्रार्थना भी 'वृहद
अरण्यीक' उपनिषद से रचाया ॥

'मैडोना' ने 'साइबर राग' गीत में शामिल
किए संस्कृत के बहुत सारे मंत्र ।
'जॉन विलियम' ने तो रच ही दिया
ॐ शांति ॐ का मंत्र ॥

बैटल स्टार 'गेलाटिका' ने 'गायत्री मंत्र' से
भर दिया दुनिया में हर्ष।
हमें बहुत गर्व होता है क्योंकि इस मंत्र
का उत्स जो है भारतवर्ष ॥

संस्कृत भाषा की छाया में रचा गया हमारा
'राष्ट्रीय गीत और संगीत' ।
आओ हम भारतवासियों में करें "संस्कृत
भाषा" का ज्ञान अंकुरित ॥

संस्कृत भाषा है दुनिया की
सब भाषाओं से अनमोल
इस भाषा के हर शब्द का
'कृ' धातु से है तालमेल
श्रावण महिना की पूर्णिमा तिथि
का पुण्य दिन
भारतीय मनाते हैं "संस्कृत भाषा"
का जन्मदिन ॥

भर दे हुँकार

❖ *अपूर्वा सिंहरौल*
वैज्ञानिक सहायक
मौसम केंद्र भोपाल

चुनौतियों का अम्बार देता
चिर-परिचित संसार
हर पग ठोकर, हर पग कंकर
बार-बार हज़ार
है दुर्लभ ये मनुष्य जीवन
जानते हैं हम
तू श्रेष्ठ कृति है ईश्वर की
ये मानते हैं हम
तू दम्भी है, है अभिमानी
तू ज्ञान है, है तू ज्ञानी
तू जीत की परिभाषा
तुझसे ही जीवित आशा।

फिर क्यों चुनौतियों से
है आज तू घबरा गया ?

काव्य फुहार

तू तो शिखर पर था टिका
फिर क्यों धरा पर आ गया
क्यों आज फिर डगमगा रहा ?

पथ से पृथक हो चल रहा
तू क्यों प्रतीत होता निराश
क्यों दिख रहा हमको हताश
स्वयं को गर तू जान ले
जो निहित है तुझमें वो पहचान ले।

उठ कर गिरना, गिर कर उठना
यही सत्य, है सिद्ध यही करना
मत हो निराश, कर फिर प्रयास
भर ले हर श्वास में विश्वास ।

तू अनंत है, तू अजय है
तू जय है, तू विजय है
थर्रा जाएगी, धरा ये सारी
विश्वास कर, अब जाग जा
होगी तेरी ही जयकार
भर दे हुँकार,
भर दे हुँकार ।

नन्हा पाखी

❖ *सुषमा सिंह*
जलमौसम अनुभाग
महानिदेशक का कार्यालय

क्या बोले ये नन्हा पाखी
नित कोमल पंखों को फैला कर
अब मुझको उड़ने दो मां,
अब तो मुझको उड़ने दो
नील गगन में पंख फैला कर
नभ मुझको छूने दो मां,
नभ मुझको छूने दो ।

देखों मां ये मेरे डैने,
कितने सुडौल हैं कितने पैने
क्यों मुझे रोक देती हो मां,
नित अंबर से मिलने को
अब मुझको उड़ने दो मां,
अब तो मुझको उड़ने दो
देखो तो मैं कितना बड़ा हुआ,
देखो अब तो मैं कितना बड़ा हुआ
तुम कहो तो नभ छू आऊं,
पाताल की भी मैं लू थाह।

अब तो मैं भी उड़ सकता हूं,
नभ को भी छू सकता हूं
अब मुझको उड़ने दो मां,
अब तो मुझको उड़ने दो
नाजुक कोमल हैं पंख तुम्हारे,

काव्य फुहार

नन्हे पाखी कुछ धीर धरो
नभ छूने का वक्त अभी नही है,
कुछ रुको और संयम धरो
नन्हे पाखी कुछ धीर धरो ।

जब सुदृढ़ होंगे पंख तुम्हारे,
विस्तृत गगन हो समक्ष तुम्हारे
अनंत नभ में उड़ते जाना,
धरती गगन जहां मिलते हों
उसको भी छू कर आना,
नन्हे पाखी कुछ धीर धरो,
नन्हे पाखी कुछ धीर धरो।

सातवाँ पे कमीशन

❖ *कृष्ण कुमार गुप्ता*
सहायक
प्रादेशिक मौसम केंद्र- कोलकाता

जिसका हम सभी को है
बेसब्री से इंतजार,
लाखों सरकारी कर्मचारी
जिसके लिए बेकरार
दूर करेगा जो हम सब के
दस वर्षों का फ्रस्ट्रेशन,
वह और कोई नहीं, है सातवाँ पे कमीशन!

जब से नये पे कमीशन की घोषणा हुई ,
सरकारी बाबुओं के मन में
कल्पनाएं शुरू हुई
मेरा कितना बढ़ेगा अब सब का
यही प्रश्न है,
जिधर भी देखो सभी केलकुलेशन
में मग्न हैं!

इंटरनेट का इसमें
बहुत बड़ा योगदान है,
क्योंकि सपने दिखाने में
यह बड़ा महान है
नया नया फार्मूला और
पे कैलकुलेटर इसकी शान है,
उसे पता है इसमें लाखों बाबुओं की
अटकी जान है !

अभी से ही सबका
बजट बनने लगा है,
कोई ए सी तो कोई
कार की सोचने लगा है
मालूम नहीं पे कमीशन
क्या रंग दिखाएगा,
कहीं बाबुओं का सपना
'मुंगेरीलाल का हसीन सपना'
तो नहीं रह जाएगा।

काव्य फुहार

याद बहुत आओगे

❖ सरिता जोशी
हिंदी अधिकारी
मौविमनि का कार्यालय

तुम चले जाओगे
लेकिन यहाँ भी रह जाओगे।

हमारे अहसासों में
हमारी यादों में
हमारे दिल में
इक घरोंदा बना जाओगे।

तुम चले जाओगे
लेकिन यहाँ भी रह जाओगे।

हमारी बातों में
उन मुलाकातों में
बहते जजबातों में
इक कसक छोड़ जाओगे।

तुम चले जाओगे
लेकिन यहाँ भी रह जाओगे।

चिड़ियों की चहक में
फूलों की महक में
मोरों के पंख में,
तोतों के रंग में
तुम नज़र आओगे।

तुम चले जाओगे
लेकिन यहाँ भी रह जाओगे।

पत्तों की सरसराहट में
गिलहरियों की सुगबुगाहट में
दीवारों के सूनेपन में
अपना चित्र छोड़ जाओगे।

तुम चले जाओगे
लेकिन यहाँ भी रह जाओगे।

मौसम भवन के आँगन में
इस विशाल प्रांगण में
चाहते न चाहते हुए भी
अपने पैरों के निशाँ छोड़ जाओगे।

तुम चले जाओगे
लेकिन याद बहुत आओगे।

❖ (यह कविता श्रीमती एम. अनुराधा वरिष्ठ अनुवादक को समर्पित है जो दिसंबर- 2016 में हिंदी अनुभाग से लगभग 33 वर्ष की सेवा के उपरांत सेवानिवृत्त हुईं।)

यात्रा वृत्तांत

श्रवणबेलगोला, बेलूर और हेलबेड

❖ डॉ के.वी बालसुब्रहमण्यन

हमारा देश प्राकृतिक और सांस्कृतिक रुप से बहुत से सुंदर और आकर्षक स्थानों से समृद्ध है जो विश्वभर से आने वाले लोगों को मंत्रमुग्ध करता है। हमारा देश उन देशों में से है जिसके पास समृद्ध ऐतिहासिक विरासत, धरोहर, स्मारक, किले, तट, धार्मिक स्थल, पर्वतीय स्थल हैं जो विश्व के कोने-कोने से लोगों को भारत आने के लिए आकर्षित करते हैं। भारत विविधता में एकता के लिए जाना जाता है जो विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, और धर्मों के लोगों से समृद्ध है जो यहाँ पर अच्छे पर्यटन का बड़ा कारण हैं। बहुत से धर्मों और भाषाओं से समृद्ध होने के कारण, हमारा देश हस्तकला, लोक नृत्य, मेलों, त्योहारों, संगीत, शास्त्रीय नृत्य, पोशाक, खाने की आदतों, जीवन शैली, भाषा आदि की विविधताओं से भरा हुआ है जो दुनिया भर के लोगों के दिलों में भारत भ्रमण की इच्छा को जगाता है ।

पहले मैसूर नाम से जाने जाने वाले कर्नाटक प्रदेश का वर्तमान नामकरण 01 नवंबर 1973 को हुआ था । कृष्णा, कावेरी और गोदावरी समाए इस कर्नाटक की भौगोलिक स्थिति कुछ ऐसी है जो पर्यटकों को अपनी ओर बरबस ही आकृष्ट कर लेती है। नदियों और समतल धरातल के बीच निरंतर आने वाली छोटी-बड़ी पहाड़ियां, प्रकृति का वह मोहक दृश्य निर्मित करती हैं जो किसी को भी अपनी ओर खींच लेने का सामर्थ्य रखती है। यही कारण है कि देशी-विदेशी पर्यटक इस प्रदेश की तरफ बरबस ही खिंचे चले आते हैं।

उद्यानों का शहर - बंगलुरू, प्राकृतिक सौंदर्य का खजाना-कुर्ग, मैसूर, सेंट फ़िलोमेना चर्च, अब्बे झरना, जोग झरना, गोल गुम्बद, चित्रदुर्ग किला, ताल कावेरी, फ़ैंटेसी पार्क, महाराजा पैलेस, श्रवणबेलगोला, श्रीरंगपट्टनम, वृन्दावन गार्डन, चिडियाघर, बड़ाव लिंग हम्पी, रेल संग्रहालय, शिमोगा महल, बुल मन्दिर, कई वन्य जीव अभ्यारण्य आदि कर्नाटक के देखने लायक पर्यटन स्थलों में से कुछ हैं।

अगर आप कुछ ही दिनों की यात्रा पर बंगलुरू आ रहे हैं तो श्रवणबेलगोला, बेलूर और हेलबेड में आने के लिए एक दिन जरूर रखें। इन स्थानों को एक दिन की यात्रा में शामिल किया जा सकता है। इन तीन स्थानों में से प्रत्येक अलग अलग कारणों के लिए भी प्रसिद्ध है। श्रवणबेलगोला एक साहसिक यात्रा होगी और बेलूर और हेलबेड भारतीय पत्थर की मूर्तिकला

❖ प्रादेशिक मौसम केंद्र -चेन्नै में मौसम विज्ञानी "बी" के पद पर कार्यरत है

के प्रदर्शन के स्थान हैं। श्रवणबेलगोला, बेलूर और हेलबेड हसन जिले (बंगलुरू से 196 किलोमीटर) कर्नाटक में हैं। हम वहाँ कर्नाटक राज्य पर्यटन विकास निगम (http://kstdc.nic.in) बस से जा सकते हैं। वोल्वो, ए/सी बस में एक दिन का पैकेज भी ले सकते हैं ।

हम को सुबह सुबह सात बजे बंगलुरू से निकल जाना चाहिए जिससे रात को 2130 बजे तक हम वापस आ सकते हैं। यात्रा के लिए बहुत तैयारी करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि किसी भी कर्नाटक राज्य पर्यटन विकास निगम के काउंटर से यात्रा टिकट प्राप्त कर सकते हैं, यहां तक कि यात्रा के दिन भी टिकट मिल सकती है। यह बसें बंगलुरू निगम सर्किल के पास बादामी हाउस से संचालित होती है। यह वास्तव में सस्ती, भरोसेलायक और सुरक्षित यात्रा है। कर्नाटक के भीतर और आसपास के पर्यटक स्थलों को देखने के लिए यह निगम 25 यात्रा पैकेज देता है। http://www.karnatakatourism.org साइट पर अधिक जानकारी के लिए देख सकते हैं। यदि हम टैक्सी से जाते हैं तो स्थानों की यात्रा करने के लिए अधिक समय मिल सकता है।

बंगलुरू से लगभग 30 किलो मीटर की दूरी पर लगभग एक घंटे की यात्रा के बाद हम नीलमंगला नामक एक स्थान पर एक टोल गेट पर आ जाएंगे। यहाँ हम हनुमानजी की एक विशाल मूर्ति देख सकते हैं। नीलमंगला के बाद हम श्रवणबेलगोला तक पहुंचने के लिए मंगलौर हाईवे से जाना होता है। यहाँ से यह लगभग 120 किलोमीटर दूर है और गाड़ी से हम तीन घंटे में पहुँच सकते हैं। श्रवणबेलगोला (चित्र-1) के और करीब, जब हम आते हैं तो लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर गोमतेश्वर, बाहुबली की प्रतिमा हम देख सकते हैं |

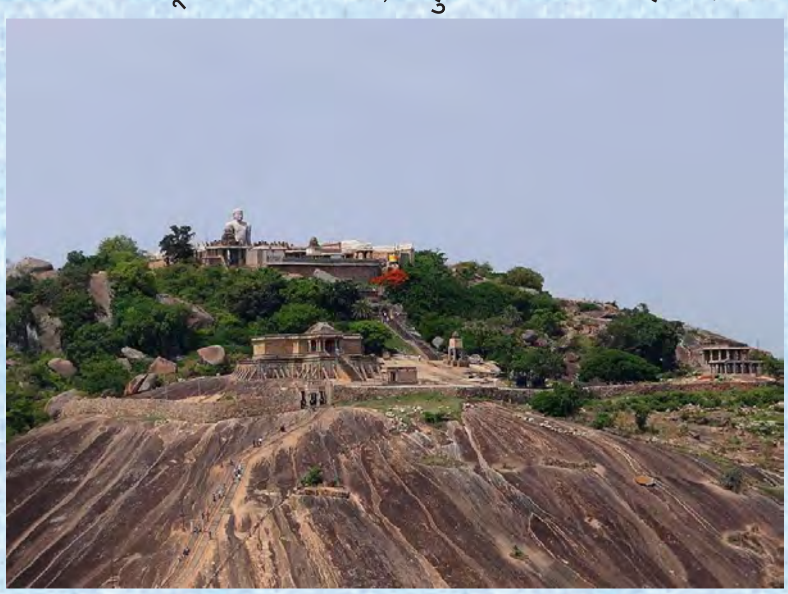

चित्र 1 : श्रवणबेलगोला

हम यहाँ दोपहर के पहले पहुँचें तो बेहतर है और गर्मियों में 1000 बजे से पहले श्रवणबेलगोला पहुँचना चाहिए क्योंकि बाहुबली की मूर्ति देखने के लिए 620 सीढ़ियों को चढ़कर 3400 फुट के पहाड़ के ऊपर जाना पड़ेगा (चित्र 2) । सूरज के चरम तक बढ़ने के साथ सीढ़ियाँ गर्म हो जाएँगी और ऊपर चलना कठिन होगा। पहाड़ पर गरम सीढ़ियों से बचने के लिए लोग जुराब पहन कर जाते हैं।

चित्र 2 : पहाड़ी सीढ़ियां

इस शहर का नाम श्रवणबेलगोला इसलिए रखा गया है कि शहर के मध्य में एक तालाब है जिसका नाम बेला-कोला है जिसका मतलब है सफेद तालाब (चित्र 3)। श्रवणबेलगोला में 58 फुट की ग्रेनाइट की बाहुबली की प्रतिमा है जो एक ही पत्थर की मूर्ति है। यह दुनिया की सबसे ऊंची अखंड पत्थर की मूर्ति मानी जाती है। गोमतेश्वर मंदिर यहाँ की विंद्यगिरि नामक पहाड़ी पर है। इस पहाड़ के सामने चंद्रगिरी नामक एक और पहाड़ है। दोनों पहाड़ों के बीच बेला-कोला तालाब है।

चित्र 3 : बेला कोला

भगवान गोमतेश्वर (भगवान बाहुबली) भगवान आदिनाथ नामित प्रथम जैन तीर्थंकर के बेटे थे। भगवान आदिनाथ के 99 अन्य बेटे भी थे और जब उन्होंने अपने राज्य का त्याग किया, तो दो भाइयों बाहुबली और भरत के बीच एक बड़ी लड़ाई शुरु हो गई। भरत इस लड़ाई मे हार गया, लेकिन बाहुबली को अपने भाई की हार से कोई खुशी महसूस नहीं हुई । इसके बाद उन्होंने अपने भाई को राज्य दे दिया और फिर आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया ।

गोमतेश्वर की प्रतिमा गंगा राजवंश के राजा राजमल्ला के मंत्री चामुण्डराया द्वारा ***982*** और ***983*** के बीच की अवधि के दौरान बनी थी। श्रवणबेलगोला के शहर के कई जैन मंदिर और ऐतिहासिक स्थल प्रसिद्ध हैं । ऐसा माना जाता है कि आचार्य भद्रबाहु और उनके शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य ने यहाँ ध्यान साधना की। चंद्रगिरी में और कई भिक्षुओं ने पांचवीं शताब्दी ईस्वी के बाद से वहाँ ध्यान साधना की है ।इसमें राष्ट्रकूट वंश के अंतिम राजा मान्यकेतु के स्मारक भी शामिल हैं।

पहाड़ी के ऊपर चढ़ने के कारण हम थक जाते हैं और पहाड़ में केवल पानी मिलता है और वह भी शीर्ष के निकट। नीचे उतरने पर गिरिपीठ में फल का रस, नारियल पानी आदि ले सकते हैं। यहां से हमें बेलूर जाना चाहिए जो लगभग 90 किलोमीटर की दूरी पर है । श्रवणबेलगोला से एक घंटे की ड्राइव पर बेलूर है। बेलूर मूल होयसल राज़ाओं की राजधानी थी। जगह का मुख्य आकर्षण चेन्नकेशव मंदिर (चित्र-4) है और यह मंदिर विष्णुवर्धन द्वारा बनाया गया है। कन्नड़ भाषा में चेन्नकेशव का मतलब है सुन्दर केशव है।

चित्र 4 : चेन्नकेशव मंदिर

यह होयसाल का मंदिर है जहां सक्रिय पूजा आज तक हो रही है। सबसे पहले उन्होंने इस मंदिर के प्रोटोटाइप का निर्माण किया था जिसमें 20 साल लग गए। प्रोटोटाइप के आधार पर

सभी मूर्तियों के साथ बड़े आकार में मंदिर बनाया गया और इसे पूरा होने में 103 साल लगे। मंडप के अंदर स्तंभों का एक आकर्षण है और सबसे लोकप्रिय एक नरसिंह स्तंभ है जो एक समय में इसकी बॉल बेयरिंग पर घूमता था। वहाँ अद्वितीय अड़तालीस खंभे हैं और उन में से 42 मंदिर परिसर में हैं। मंडप के बीच में चार केंद्रीय स्तंभ हैं शेष 38 बाहर हैं। हम इन चार केंद्रीय स्तंभों में मदनिकाओं की मूर्ति देख सकते हैं। उन्हे शिलाबालिका बही कह सकते हैं। ये नर्तकों, संगीतकारों और ड्रमर आदि की मूर्तियाँ हैं।

कुछ मदनिकाएँ आम तौर पर पर्यटकों में लोकप्रिय हैं जैसे दर्पण सुंदरी (दर्पण के साथ सौंदर्य), "तोते के साथ महिला", "शिकारिका" और भस्म-मोहिनी।

हेलबेड और बेलूर एक दूसरे से 16 किलोमीटर की दूरी पर है । हेलबेड को जहां ओल्ड सिटी के नाम से जाना जाता है तो दक्षिण के निवासी बेलूर को दक्षिण की काशी के नाम से सम्बोधित करते हैं। बेलूर शहर यागची नदी के किनारे बसा हुआ है और अनेक प्राचीन मंदिरों के चलते ये शहर धर्म की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। जबकि हेलबेड होयसाला राज्य की गौरवान्वित शाही राजधानी हुआ करती थी जिसे पुराने दिनों में "द्वारसमुद्र" के रूप में जाना जाता था। आज ये शहर राजस्व, गौरव और खंडहर की भूमि है। कर्नाटक के ये दोनों ही शहर बेहद प्राचीन हैं और यहां मौजूद ज्यादातर स्मारक या तो खंडहर में तबदील हो गए हैं या फिर हेरिटेज साइटों में।

इतिहास और वास्तु में रूचि रखने वालों को यहाँ का भ्रमण अवश्य करना चाहिए।

यात्रा वृत्तांत

प्लीज टॉक इन ऑफिशियल लेंगवेज

❖ एम.अनुराधा

भारत के सुदूरपूर्व में बंगाल की खाड़ी में स्थित अंडमान व निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्टब्लेयर में भ्रमण करने की इच्छा बचपन से ही रही और आखिर वह दिन आ ही गया जब छुट्टी यात्रा रियायत (एल टी सी) पर पोर्टब्लेयर जाने का मौका मिला । मन में कल्पना के सपने सँजोए दिल्ली से चेन्नै द्वारा पोर्टब्लेयर जाने की एयर इंडिया की टिकट आरक्षित करवाई। एक दिन पहले पता चला कि दिल्ली से चेन्नै जाने वाली उड़ान वाया बंगलुरू होकर जानी थी जिसके कारण आगे जाने वाली पोर्टब्लेयर की उड़ान के छूट जाने की आशंका थी। असमंजस की स्थिति में एयर इंडिया के टोल फ्री नम्बर से एक दिन पहले की चेन्नै जाने वाली उड़ान में आरक्षण करवाया ताकि अगले दिन की पोर्टब्लेयर की उड़ान समय पर पकड़ सकें। रात गुजारने के लिए आनन-फानन में चेन्नै कार्यालय का गेस्ट हाउस आरक्षित करवाया। इस दौरान पोर्टब्लेयर में घूमने फिरने के लिए एक टैक्सी ड्राइवर का पता लगाकर वहाँ की व्यवस्था के बारे में पूछताछ करनी चाही,चूँकि वे तमिल भाषी थे इसलिए मैंने अंग्रेजी में और थोड़ी बहुत तमिल व तेलुगु में बात करनी चाही तो उन्होंने सहज भाव से कहा कि "वाई यू आर नॉट टाकिंग इन ऑफिशियल लेंगवेज हिंदी" यह सुनकर मैं भौंचक्की रह गई कि जहाँ एक ओर हिंदीतर भाषी लोग हिंदी जानते हुए भी अपने राज्य में हिंदी नहीं बोलते हैं और कई बार हिंदी बोलने में समस्या भी आती है वहीं दूसरी ओर लोगों को इस बात की जानकारी है कि अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की राजकाज की भाषा हिंदी है और संभवतः पर्यटकों द्वारा बहुत अधिक संख्या में पोर्टब्लेयर में भ्रमण करने के कारण भी परस्पर विचार-विनिमय की भाषा हिंदी ही रही होगी। यहाँ यह कहना उल्लेखनीय होगा कि भारत सरकार की राजभाषा नियम 1976 के अनुसार पूरे भारत को 'क' 'ख' और 'ग' तीन क्षेत्रों में बाँटा गया है और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह को हिंदी भाषा के बोले जाने और लिखे जाने की प्रधानता के आधार पर 'क' श्रेणी में रखा गया है। पोर्टब्लेयर में काफी संख्या में तमिल,तेलुगु,बंग्ला भाषी लोग आकर बस गए हैं। 572 टापुओं वाले द्वीप समूह में केवल 33 द्वीप ऐसे हैं जहाँ पर रिहाइश है और बाहर से आने वाले पर्यटकों को मात्र 8 या 9 टापुओं में जाने की अनुमति है। चारों तरफ समुद्र होने के कारण आवागमन केवल समुद्री

❖ मुख्यालय में वरिष्ठ अनुवादक के पद पर कार्यरत हैं

जहाज से ही सम्भव है।

जिस टैक्सी ड्राइवर से भ्रमण के लिए ऑफिशियल लेंगवेज में फोन पर बातचीत की थी वही ड्राइवर पोर्टब्लेयर के एयरपोर्ट पर मिल गया और उसने एकदम से हमें पहचान भी लिया मानों वह हमें बहुत पहले से जानता हो या इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि तेलुगु, तमिल भाषियों के चेहरे,रंगत आदि में समानता होने के कारण पहचानने में उसे अधिक आसानी रही होगी। उसने अपना नाम मुर्गेसन बताया। सबसे पहले वह हमें हमारे कार्यालय के गेस्ट हाउस लेकर गया, जहाँ पर हमने ठहरने के लिए दिल्ली से ही कमरा आरक्षित करवा रखा था। एयरपोर्ट से गेस्ट हाउस का रास्ता करीब 2-3 कि.मी. रहा होगा। गेस्ट हाउस पहुँचने तक के रास्ते में उस ड्राइवर ने हमसे जो बातें हिंदी में की उतनी अच्छी हिंदी तो शायद हम भी नहीं बोल पाते। स्थानीय हिंदी और राजभाषा हिंदी का मिलाजुला रूप हमें मुर्गेसन की बातचीत से पता चला। जितनी सहजता और सरलता से उसने हमसे बातचीत की अर्थात सम्प्रेषण की भावना इतनी अधिक मुखर थी कि उसकी कही हुई हर बात आसानी से एकदम समझ आ रही थी। सीधी सरल हिंदी भाषा में मुर्गेसन ने पूरे चार दिनों का कार्यक्रम बता दिया। दिखने में एकदम किसी तमिल फिल्म के विलियन की तरह दिखने वाले मुर्गेसन को देखकर कहीं से भी ऐसा नहीं लग रहा था कि वह हमसे हिंदी में फर्राटेदार बात कर पाएगा । गेस्ट हाउस के केयरटेकर ने भी सरल हिंदी में बात की। उन सबकी बातें सुनकर किसी भी तरह से ऐसा नहीं लग रहा था कि भूमि से करीब 2000 किमी दूर किसी द्वीप में बैठे हम स्थानीय लोगों के साथ ऐसे फर्राटे से हिंदी बोल रहे थे मानों दिल्ली के ही किसी स्थान पर बैठे हों।

उस दिन पोर्टब्लेयर के स्थानीय जगहों पर ही घूमने का कार्यक्रम बनाया । एक तरह से हमने पूरे चार दिनों के लिए एयरपोर्ट से लाने, पोर्टब्लेयर के स्थानों को देखने, द्वीपों पर जाने और वापिस एयरपोर्ट छोड़ने के लिए मुर्गेसन से ही अनुबंध कर लिया था। एक तरह से सारी जिम्मेदारी मुर्गेसन की ही थी। पोर्टब्लेयर में कौन कौन से स्थान देखने हैं, कहाँ पर दिन का खाना खाना है, कहाँ पर रात का खाना खाना है, किस द्वीप में जाना है सारी समय सारणी मुर्गेसन की ही जिम्मेदारी थी। यहाँ तक कि कब एटीएम से पैसे निकालने हैं यह जिम्मेदारी भी मुर्गेसन की ही थी। जिस एटीएम की लाइनों और बैंको की लाइनों में खड़े होकर पैसे निकालने के लिए पूरे दिल्ली शहर में हाहकार मचा हुआ था। ऐसे समय में पोर्टब्लेयर जैसे शहर में जितने भी एटीएम थे, सभी में पैसे निकालने की सुविधा थी और बैंको में भी पैसे निकालने की सुविधा थी।यह बहुत ही राहत भरा माहौल था कि एक अनजाने

शहर में बिना नए नोट के भी सभी कुछ आराम से चल रहा था। एक तो चीज वहाँ पर बड़ी सस्ती और खाने पीने की चीजे गेस्ट आउस के बाहर ही उपलब्ध थी और ए टी एम और बैंकों में रूपये निकालने की भी सुविधा थी। उस दिन गेस्ट हाउस के कमरे में ही थोड़ा सुस्ता कर हमने स्थानीय भ्रमण का कार्यक्रम बनाया। दिन में 3 बजे के लगभग सेल्युलर जेल जाने का कार्यक्रम बनाया। सेल्युलर जेल यहाँ का मुख्य आकर्षण है। 50/-रू. का टिकट खरीदकर हम लोग अंदर चले गए। 50/-रू. का टिकट भी ऑफिश्यल लैंगवेज में ही बात कर रहा था क्योंकि वह हिंदी भाषा में मुद्रित था। सेल्युलर जेल हमारे देश के सवतंत्रता संघर्ष की जीती जागती मिसाल है। यहाँ का बहुचर्चित लाइट एंड साउड शो 1989 में शुरू हुआ जो अभी तक (हिंदी और अंग्रेजी) दोनों भाषाओं में जारी है। स्वतंत्रता संग्राम के सर्वाधिक यातनादायक जेलों में से एक सेल्युलर जेल है जो खुले परिसर में किस्से कहानियों को ओमपुरी जैसे कुछ अभिनेताओं की हृदयस्पर्शी आवाज (जेल के पुरातन पीपल पर) धरती पर गुलामी का दंश झेलना और स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा अमानवीय जुल्मों का शिकार होना.. ऐसे शूरवीर शहीदों को नमन जिन्होंने देश की आजादी के लिए अमानवीय अत्याचारों को सहते हुए अपने प्राणों की आहुति दी। हमारे जिन स्वतंत्रता सेनानियों को यहाँ की जेल में भेजकर उसे काले पानी की सजा का नाम दिया उसी जेल में छोटी-छोटी काल कोठरियों को देखना एक रोमांचकारी अनुभव रहा।

अगले दिन बारातांग जाने का कार्यक्रम बनाया। बारातंग के जंगली वन के बाहर एकत्रित हो गए। कहा जाता है कि बारातांग में अंडमान की मूल जनजाति जलावर अभी भी वहाँ निवास करती है जिनको सुरक्षित रखने के लिए बहुत अधिक सावधानी बरती जाती है। कहा जाता है कि वे सब एक साथ मिलकर हमला करते हैं इसलिए वहाँ की पुलिस ने बारातांग के जंगली वन से गुजरने से पहले एक पुलिस पोस्ट बनाया है। सुबह 06 बजे से पहले सभी प्रकार के वाहन गाड़ियाँ आदि वहाँ पर एकत्रित हो जाते हैं और वाहनों के आगे पीछे पुलिस की गाड़ियाँ चलती हैं। भयावह जंगल से करीब तीन घंटे का रास्ता तय कर हम लोग समुद्री किनारे पर पहुँच गए। वहाँ से फिर से समुद्री जहाज के द्वारा टापू पर जाना था। उस समुद्री जहाज की एक खासियत यह देखी कि वह जहाज इतना बड़ा था कि उसमें बस ट्रक, कार, अन्य प्रकार के वाहन और आम जनता सभी सफर कर रहे थे क्योंकि इस टापू पर जाने के लिए कोई ओर साधन नहीं था। केवल समुद्र के द्वारा ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाया जा सकता था। समुद्री जहाज से यात्रा करने के बाद एक टापू पर हम पहुँचे । जहाँ पर हमें नाश्ता कराया गया वहाँ पर दुकानों पर नारियल का पानी बहुत अधिक बिक रहा था क्योंकि

लोग गर्मी से बेहाल थे और नारियल का पानी पीकर अपनी प्यास बुझा रहे थे। वहाँ पर हमने कीचड़ वाला ज्वालामुखी (मड वोल्केनो) देखा जो अभी भी उबल रहा है। वहाँ पर कुछ देर रहने के बाद हम लोग मोटर बोट से गुफाएँ देखने चले गए। इस यात्रा में लगभग 3 घंटे का समय लगा। वहाँ पर भी सभी दुकानदार, बस चलाने वाले, मोटर बोट चलाने वाले, समद्री जहाज चलाने वाले सभी स्थानीय लोग बहुत अच्छी हिंदी बोल रहे थे जिससे लोगों को किसी प्रकार की दिक्कत नहीं हो रही है। वापिस समुद्री जहाज से आकर फिर से हमने पुलिस के काफिलों के साथ वापिस आने की यात्रा शुरू की और लगभग 3 घंटे के बाद उस भयावह जंगल से बाहर आ गए। यह पथ यात्रा रोमांचित करने वाली थी। बस से तीन घंटे के सफर के बाद हम लोग वापिस पोर्टब्लेयर अपने गंतव्य स्थान पर पहुँच गए। इस प्रकार मुर्गेसन द्वारा बताए गए कुछेक टापुओं का भ्रमण करने के बाद हम लोग पोर्टब्लेयर के हवाई अड्डा पर आ गए। चार दिनों तक हमारे साथ यात्रा करने वाले पोर्टब्लेयर के निवासी मुर्गेसन की आँख नम हो गई और उसने कहा "अगली बार फिर से जल्दी आना।"

इन सभी स्थानों का लुत्फ उठाते हुए पोर्टब्लेयर में हिंदी का अदभुत नज़ारा देखने को मिलता है।वहाँ के तमिल, मलयालम, बंग्ला और कन्नड़ भाषी लोग धाराप्रवाह हिंदी बोलते हैं। संप्रेषण और दैनिक कामकाज में संपर्क भाषा हिंदी ही है। पोर्टब्लेयर से लगभग एक सौ सत्तर किलोमीटर दूर रंगत एक ऐसा पिछड़ा इलाका है जहाँ ठीक से नागरिक सुविधायें भी नहीं हैं। वहाँ हिंदी इतनी अधिक सुनाई पड़ती है जितनी दिल्ली में भी किसी समारोह में शायद सुनाई नहीं पड़ती । पोर्टब्लेयर में हिंदी साहित्य कला परिषद और हिंदी भवन है। भारतीय विज्ञान सर्वेक्षण ने भी इसकी पुष्टि की है कि अंडमान की मूल जनजातियाँ तेजी से हिंदी अपना रही हैं। भारत की मुख्यधारा से काफी दूर बंगाल की खाड़ी में स्थित अंडमान निकोबार द्वीप समूह दुनिया की कुछ दुर्लभ जनजातियाँ का बसेरा है। यहाँ पर जो हिंदी भाषा का बोलबाला है उसके अनुसार तो अगला विश्व हिंदी सम्मेलन यहीं पर करना चाहिए।

प्राकृतिक सौंदर्य के बीच बसा छोटा सा शहर जहाँ आँखों में परस्पर परिचय और सम्मान की भावना दिखती है ... पोर्टब्लेयर प्रतिकूल परिस्थितियों में भारतीयों की जीवंतता की एक कहानी है। हिंदी भाषा का जो प्रचार-प्रसार मैंने वहाँ पर देखा, उसके लिए किसी समारोह या हिंदी दिवस में शपथ लेने की भावना नहीं थी बल्कि अपने आप ही हिंदी में बात करने की ललक, राजभाषा को जीवित रखने की जो परम्परा उनमें थी, वह देखते ही बनती थी और ये मेरे लिए तो अत्यंत गर्व का विषय था क्योंकि मैं भी लगभग 34 वर्षों से हिंदी की सेवा कर रही हूँ..........

संवैधानिक प्रावधान

भारत के संविधान में राजभाषा से संबंधित भाग-17

अध्याय 1--संघ की भाषा

अनुच्छेद 120. संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा - (1) भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा

परंतु, यथास्थिति, राज्य सभा का सभापति या लोक सभा का अध्यक्ष अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो हिंदी में या अंग्रेजी में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृ-भाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा ।

(2) जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो "या अंग्रेजी में" शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो ।

अनुच्छेद 210: विधान-मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा - (1) भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, राज्य के विधान-मंडल में कार्य राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा

परंतु, यथास्थिति, विधान सभा का अध्यक्ष या विधान परिषद् का सभापति अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो पूर्वोक्त भाषाओं में से किसी भाषा में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा ।

(2) जब तक राज्य का विधान-मंडल विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो " या अंग्रेजी में " शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो :

परंतु हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में, यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले"पंद्रह वर्ष" शब्दों के स्थान पर "पच्चीस

वर्ष" शब्द रख दिए गए हों :

परंतु यह और कि अरूणाचल प्रदेश, गोवा और मिजोरम राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले " पंद्रह वर्ष " शब्दों के स्थान पर " चालीस वर्ष " शब्द रख दिए गए हों ।

अनुच्छेद 343. संघ की राजभाषा

(1) संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

(2) खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था :

परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

(3) इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात, विधि द्वारा

(क) अंग्रेजी भाषा का, या

(ख) अंकों के देवनागरी रूप का,

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

अनुच्छेद 344. राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति--

(1) राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर, आदेश द्वारा, एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से

मिलकर बनेगा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे और आदेश में आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया परिनिश्चित की जाएगी।

(2) आयोग का यह कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपति को--

(क) संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग,

(ख) संघ के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर निर्बंधनों,

(ग) अनुच्छेद 348 में उल्लिखित सभी या किन्हीं प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा,

(घ) संघ के किसी एक या अधिक विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने वाले अंकों के रूप,

(ङ) संघ की राजभाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच या एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच पत्रादि की भाषा और उनके प्रयोग के संबंध में राष्ट्रपति द्वारा आयोग को निर्देशित किए गए किसी अन्य विषय, के बारे में सिफारिश करे।

(3) खंड (2) के अधीन अपनी सिफारिशें करने में, आयोग भारत की औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का और लोक सेवाओं के संबंध में अहिंदी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंगत दावों और हितों का सम्यक ध्यान रखेगा।

(4) एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे और दस राज्य सभा के सदस्य होंगे जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों और राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

(5) समिति का यह कर्तव्य होगा कि वह खंड (1)के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों की परीक्षा करे और राष्ट्रपति को उन पर अपनी राय के बारे में प्रतिवेदन दे।

(6) अनुच्छेद 343 में किसी बात के होते हुए भी, राष्ट्रपति खंड (5) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात उस संपूर्ण प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश दे सकेगा ।

हो उमड़-घुमड़ कर आई रे घटा

❖ भरत व्यास

कारे-कारे बदरा की छाई-छाई रे घटा
जब सनन पवन को लगा तीर
बादल को चीर निकला रे नीर
झर-झर झर-झर अब धार झरे
ओ धरती जल से माँग भरे
ओ उमड़-घुमड़ कर ...

नन्हीं-नन्हीं बूँदनियों की
खनन-खनन खन खन्जरी
बजाती आई बजाती आई
देखो भाई बरखा दुल्हनिया
छुक-छुक छुक-छुक सैंया
आज डारूँ तोरे गलवा में बैंया
मैं तो नाचूँ तेरे संग-संग
सैंया हो सैंया हो सैंया
हो सावन का सन्देसा लेकर
निकली जोगन घर से
जो कोई इसके प्यार को तरसे
वहीं नवेली बरसे
कारे-कारे बादरवा की
झनन-झनन झन झाँझरी
बजाती आई है देखो
भाई बरखा दुल्हनिया
हो उमड़-घुमड़ कर ...
मीठी-मीठी मस्त पवन की
सनन-सनन सन बाँसुरी
बजाती आई देखो

साहित्य में मौसम से जुड़ी सुंदर अभिव्यक्तियाँ

भाई बरखा दुल्हनिया
हरी-हरी चुनरी साजे
कलियों का कँगना बाजे
देख के अपनी बरखा रानी
की मीठी मुस्कान रे
सावन के दूल्हे की
चमक उठी शान रे
गोरी-गोरी बिजुरिया की
चमक-चमक चम पंखड़ी
चमकाती आई देखो
भाई बरखा दुल्हनिया
हो उमड़-घुमड़ कर ...

रंग-बिरंगी झोली भरके
भरन-भरन भण्डार रे
लुटाती आई देखो भाई
बरखा दुल्हनिया
धरती ने गठरी खोली
भरी-भरी अपनी झोली अनमोली भैया
खेलो-खेलो ख़ुशियों की
होली हो होली हो होली
धन-धन हमरी धरती
सबके जीवन के ये
अधूरे सपने पूरे करती
देखो-देखो घर-घर हमारे
लहर-लहर आनन्द की
लहराती आई देखो
भाई बरखा दुल्हनिया
हो उमड़-घुमड़ कर ...

साहित्य में मौसम से जुड़ी सुंदर अभिव्यक्तियाँ

ओ वर्षा के पहले बादल मेरा सँदेसा ले जाना

ओ वर्षा के पहले बादल मेरा सँदेसा ले जाना ।
अँसुवन की बूँदन बरसाकर, अँसुवन की बूँदन बरसाकर,
अलकानगरी में तुम जाकर ख़बर मेरी पहुँचाना ।
ओ वर्षा के पहले बादल मेरा सँदेसा ले जाना ।

मालभूमि और अमरकूट से विंध्याचल नर्मदा को जाना,
विदिशा नगरी और देवासक होकर आगे पाँव बढ़ाना ।
आग विरह की जहाँ भी पाना, आग विरह की जहाँ भी पाना,
बरस-बरस कर उसे बुझाना
ओ वर्षा के पहले बादल मेरा सँदेसा ले जाना ।

देख अँधेरा, देख अँधेरा,
पिया मिलन को चलेगी छुप कर कोई गोरी,
बस तुम बिजली चमकाकर खोल न देना, खोल न देना ,
खोल न देना उसकी चोरी ।
विरहन को तुम जहाँ भी पाना, उसे कभी न जलाना ।
ओ वर्षा के पहले बादल मेरा सँदेसा ले जाना ।

उज्जयनी में महाकाल का मंदिर जब तुम पाओ,
पुजारियों का नाच देख कर अपना मन बहलाओ ।
पर तुम उनके अंग ढँग को देख अटक ना जाओ,
पर तुम उनके अंग ढँग को देख अटक ना जाओ ।
क्षिप्रा में ना चम्बल में ना कुरुक्षेत्र में रुकना,
जंगल में ना गंगा की लहरों को चूमने झुकना ।

अटल हिमालय पे चढ़कर फिर यूँ मुड़ना कैलाश की ओर,
ज्यों चंदा को देख के प्यारे, गगन को चूमे जाये चकोर ।
अलका में फिर ढूँढ़ उसे तुम, मेरा सँदेसा सुनाना,
ओ वर्षा के पहले बादल मेरा सँदेसा ले जाना ।

साहित्य में मौसम से जुड़ी सुंदर अभिव्यक्तियाँ

❖ *मेघदूत से कौन परिचित नहीं .... दक्षिण पश्चिमी मॉनसून का शब्द चित्रण बहुत ही खूबसूरती से किया गया है ।*

कुछ कहना है.......

❖ सरिता जोशी
सह संपादक

खेल, जी हाँ ...जब हम कोई भी खेल खेलते हैं तो उसमें एक की विजय होती है तो दूसरे की पराजय। दो स्थितियाँ हैं एक विजय की और दूसरी पराजय की । अब मुख्य बात यह है कि जिसकी जीत हुई उसने क्या सीखा और जिसकी हार हुई उसने क्या सीखा । जीवन को यदि हम एक खेल के रूप में लें तो हमारी भारी भरकम समस्याओं का निदान बड़ी आसानी से हो सकता है। हमारी उलझनें कब चुटकी में सुलझ जाएँगी, हमें आभास भी नहीं होगा। हमारा नजरिया मिनटों में नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर परिवर्तित हो जाएगा। ऐसा मेरा मानना है और मुझे विश्वास है कि आप भी इसे मानने लगेंगे ।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए, उसे सफल व सार्थक बनाने के लिए केवल जीत काफी नहीं है। या फिर जिसकी हार हुई है वह यह मान कर न बैठ जाए कि अब उसका जीवन निरर्थक हो गया है। पराजित व्यक्ति को न तो दुखी होना चाहिए और न ही नकारात्मक सोच के शिकंजे में फसना चाहिए। हमारे व्यक्तित्व में नकारात्मकता का समावेश नहीं होना चाहिए उससे हमारी गति, हमारा विकास अवरूद्ध होगा और हमारे जीवन में निष्क्रियता व्याप्त हो जाएगी। वहीं... विजयी व्यक्ति को भी अत्यधिक प्रसन्न नहीं होना चाहिए और न ही उसमें अहंकार का भाव आना चाहिए । हम खुद को जितना जानेंगे, जितना समझेंगे उतना ही हमारे जीवन में संपूर्णता आएगी।

सबसे अहम बात यह है कि खेल से जो व्यक्ति सीख रहा है चाहे वह हारने वाला है या जीतने वाला वास्तव में जीत उसी की हो रही है। आप अपने जीवन में आने वाली बाधाओं से, कठिन परिस्थितियों से जितना सीखेंगे उतना ही आप कुशल बनते जाएँगे और इससे आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। आपकी सोच सकारात्मक होगी जो विषम परिस्थितियों में आपके लिए संजीवनी का काम करेगी। हमें अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। हर पल सीखते रहना चाहिए। अच्छा करने.... कुछ नया करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। गीतकार शैलेंद्र की पंक्तियाँ याद आ रही हैं-

तू जिंदा है, तू जिंदगी की जीत पर यकीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर ।

सामान्य लेख

जीवन की सार्थकता

❖ एम.आर. कालवे

हम सभी ने अपना होश संभालने के बाद से ही यह सुना है, कि हमें मनुष्य जीवन चौरासी लाख योनियों के बाद मिलता है और जिसे ईश्वर ने सबसे ज्यादा बुद्धि से सम्पन्न किया है। इससे स्पष्ट है कि ईश्वर का यह मानवरूपी जन्म एक ऐसा वरदान है जिसे किसी विशेष कार्य के प्रयोजन से ही दिया गया है। हमारे भारतीय प्राचीन ग्रंथों, पुराणों के अनुसार और वैज्ञानिक शोधों से यह मालूम होता है, कि ब्रह्मांड के विभिन्न ग्रहों के निर्माण के बाद मात्र पृथ्वी पर ही अनेक भौतिक व रासायनिक क्रियाओं के पश्चात जीवन योग्य संभावनाएं पाई गई जिसमे मुख्यत: पानी, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन एवं अन्य गैसे थी जिसके फलस्वरूप पहले एककोषीय जीव बने उसके उपरांत इनके द्विगुणित होने पर विभिन्न प्रकार के बहुकोषीय जीव जंतुओं, पेड़ पौधों जैसी योनियों का जन्म हुआ। मानव रूपी जन्म भी इसका एक उदाहरण है।

जीवन अर्थात जन्म और मृत्यु के मध्य का समय। पुरातन काल और पौराणिक इतिहास के ग्रंथो से ऐसा भी माना जाता है कि सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति "ॐ" शब्द के नाद से ही प्रारम्भ हुई है। ॐ शब्द तीन अक्षरों अ, उ और म से बना है। जिसमें "अ" का अर्थ है, उत्पन्न होना या प्रारम्भ होना। "उ" का अर्थ उठना अर्थात विकास होना है। तथा "म" का तात्पर्य है, मौन/शांत हो जाना अर्थात ब्रम्हलीन हो जाना। अत: ॐ शब्द में जीवन का पूर्ण सार छुपा हुआ है, जिसमें जीवन की उत्पत्ति (जन्म/बचपन) के बाद जवानी (उठना/विकास) और अंत में बुढ़ापा (मौन/ शांति) आता है । मानव, चाहे वह नर हो या मादा जन्म के पश्चात उसके बाल्यकाल का समय (जन्म से 20 वर्ष तक) अपनो को पहचानने, अंजानी नई नई बातों को जानने की जिज्ञासा, आरम्भिक शिक्षा तथा खेलकूद आदि में जल्द ही व्यतीत हो जाता है। इसके बाद एक अवस्था ऐसी आती है जब मनुष्य शिक्षा प्राप्त कर स्वयं के पैरो पर खड़े होने के बाद जीवन के विभिन्न पहलुओं के विषय में जानकारी हासिल करने की चेष्टा करते हुए जीवन के उस असली शुरूआती दौर में पहुंच जाता है, जहां उसे जीवन के वास्तविक अर्थ को समझने की आवश्यकता होती है।

मेरा मानना है कि ईश्वर से प्राप्त बहुमूल्य जीवन को जानने की पहली सीढ़ी के इस पड़ाव में मनुष्य जीवन जीने की कला सीखता है और इस समय यह जरूरी हो जाता है कि वह

❖ मुख्यालय के सूचना प्रणाली सेवाएँ प्रभाग में मौसम विज्ञानी "ए" के पद पर कार्यरत हैं

स्वयं के साथ अपने परिवार, समाज, अपने कार्य क्षेत्र और देश की भलाई के लिए स्वत: के अंदर निहित ज्ञान और शक्ति से हमारी सभ्यता, हमारे नैतिक मूल्यों, अपने बडे बुज़ुर्गों और भारतीय आध्यात्मिक जीवन आदर्शों के मार्ग पर चलकर आपसी सदभाव, कुशल व्यवहार, सहिष्णुता और कर्तव्यपरायणता आदि गुणों को अपने व्यवहार में लाए चाहे उसने किसी भी वर्ग, धर्म या संप्रदाय में जन्म लिया हो तथा जीवन को जिंदादिली के साथ जीने की कला को सीखें। शांति, धैर्य और सहनशीलता के ये गुण आपकी कायरता नहीं, वीरता है जो शीतलता प्रदान कर आपकी कार्य क्षमता बढाने में मदद करती है। एक आदर्श व्यक्ति के रूप में उसके अपने समाज और देश के कल्याण के लिए किए गए प्रयत्न से उसका यह मूल्यवान जीवन अवश्य सार्थक व सफल हो जाएगा ।

जिंदगी जिंदादिली का नाम है

जीवन कितना भी लम्बा क्यों न हो यह महत्वपूर्ण नहीं है, किंतु जीवन कितना सार्थक है यह महत्व का विषय है। हमारा जीवन ईश्वर का वरदान है जिसका हर क्षण अति मूल्यवान है। समय के चक्र का हर पल अति सूक्ष्म है किंतु इसमें असीमित संभावनाएं निहित है इसके लिए इसे खुशी से जीना चाहिए। जीवन में प्राप्त खूबसूरत पलों का सार्थक उपयोग हम किस प्रकार करें यह हमें ही खोजना होगा। इसलिए हमें अच्छी सोच की मानसिकता का निर्माण कर पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों तथा महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण व प्राप्त करने के लिए जागकर जीना होगा तब हम अपने को शायद सफल जीवन के परम लक्ष्य के निकट खड़ा पायेंगें।

“जिंदगी एक सफर है सुहाना यहाँ कल क्या हो किसने जाना”

जीवनचक्र के दो मुख्य पहलू सुख और दुख होते हैं। इन दोनों पहलूओं के मध्य सामंजस्य बनाने और सुख दुख के अंतर से हटकर समय का मूल्यांकन करने से हमारा जीवन सार्थक हो सकेगा जिसका हमें जीवनपर्यंत सामना करते हुए चलना होता है। प्रथम पहलू सुख का अर्थ है, आपका शरीर निरोगी हो और आप के जीवन में आवश्यक धन सम्पदा, अच्छा परिवार, अच्छी शिक्षा, अच्छा खानपान व रहनसहन, कार्य में सफलता और सामाजिक आदर आदि प्राप्त हो और ऐसी स्थिति में आप अपने जीवन का कुछ समय आनंद तथा खुशहाली के वातावरण में व्यतीत करते है, यही जीवन का सुख है।

वहीं जीवन के दूसरे पहलू दुख का अर्थ है, हमारे जीवन के उपर्युक्त सुख के प्रकारों में कहीं न कहीं कमी या व्यवधान आना जैसे-धन की कमी, शारीरिक रूप से स्वास्थ्य में खराबी या

बीमारी, परिवार में एकजुटता में कमी, शिक्षा में कमी, कार्य में असफलता और सम्मान में कमी, पर्याप्त खानपान और रहनसहन में कमी आदि आदि परिस्थितियाँ हमें जीवन में कभी न कभी झेलने पर मजबूर होना पड़ता है, जिसे हम जीवन का दुख मान लेते हैं। यह हमारे अंदर किसी अमंगल का डर पैदा कर देता है और हमारी मानसिकता को थोड़े समय के लिए निराशा का भाव उत्पन्न कर पूरी तरह से भ्रमित करके हमें विचलित कर देता है। किंतु यह जीवनचक्र की सच्चाई है इसे हमें सहजभाव से लेकर तथा जीवन का छोटा सा कष्ट समझ कर मुस्कुराते हुए स्वीकार करके और उसी में जीवन का परम आनंद खोजते हुए जीवन जीने की कला सीखनी चाहिए। "'किसी ने सही कहा है; आगे सुख है तो पीछे दुख है हर दुख में एक सुख है"'

अत: यह सिद्ध होता है कि ईश्वर ने जीवन में असीमित अपेक्षाएं पालने की प्रवृत्ति भी दी है इसी कारण हम सुख में आनंदित और दुख के पलों को बड़ा संघर्ष मानकर स्वीकार करते हैं। परंतु दोनो ही एक दूसरे के पूरक हैं। हम सभी सौभग्यशाली हैं कि भगवान ने हमें जो बहुमूल्य जीवन दिया है उसे हम अपने अच्छे और भले कर्मों के द्वारा कर्तव्यों का पालन करते हुए परिपूर्ण करें और जीवन आनंद के साथ मुस्कुराते हुए गुजारें। बुरे कर्मो या कार्यों को नकारें और उनसे सबक लेकर अच्छे कार्य करें क्योकिं हम जानते है कि बुरे काम का बुरा नतीजा ही होता है जो आपके जीवन को दुखी कर देता है। आज हम यह संकल्प और प्रण करें कि हम हमारे जीवन के हर मोड़ पर आने वाले सुख और कष्ट के पलों को वास्तविकता से हंसते मुस्कुराते हुए व्यतीत करेंगे जिससे हमें अपने भावी जीवन को सुधारने, संवारने और समझने में मदद मिल सके और जिससे हमें जीवन की सम्पूर्णता के छुपे रहस्य की अनुभूति हो सके।

अत: जीवन को मुस्कुराते हुए और कष्टों पर विजय पाते हुए जिंदादिली के साथ जिंए तब हमारा जीवन आनन्ददायक हो जाएगा।

जीवन में सकारात्मक सोच

प्राकृतिक रूप से मानव के स्वभाव में सभी तरह के भावों का समावेश होता है, वह हमेशा एक जैसा व्यवहार नहीं कर सकता। जिसके कारण कभी-कभी जीवन में पारिवारिक और आर्थिक जिम्मेदारियों को पूरा करते-करते वह स्वाभाविक रूप से निराशा, चिड़चिड़ाहट और थकावट महसूस कर अपने अंदर नकारात्मकता का भाव पैदा करने लगता है। ऐसी परिस्थिति में वह यह भी सोचता है कि जीवन यात्रा बहुत कठिन है। मनुष्य प्राकृतिक स्वभाववश जीवन के इस कठिन समय में आत्मविश्वास की कमी के फलस्वरूप अपनी निर्णय क्षमता खो देता

है तथा निराशा के भाव में अपने आप को ईश्वर के साथ जोडकर आस्तिक होने की संज्ञा देता है किंतु असलियत में उसे स्वयं के साथ ईश्वर पर भी विश्वास नही होता। इस स्थिति से छुटकारा पाने के लिए हमें जीवन के प्रति सकारात्मक सोच को बढ़ावा देकर अपने आत्मबल व ज्ञान से विषय की गंभीरता को समझते हुए अपने स्वभाव के अनुरूप रूचिकर कार्य जैसे:- संगीत सुनना, खेलकूद करना, किताबें पढ़ना, योग आदि से मन को व्यस्त कर तथा नकारात्मकता के भाव को दूर कर जीवन में हो रहे बदलावों को सकारात्मकता से लेकर वर्तमान में जीना चाहिए जिससे कठिन और निराशा से भरे पल जल्द ही समाप्त हो जाएंगे।

जिंदगी प्यार का गीत है जिसे हर दिल को गाना पड़ेगा"

मनुष्य यदा कदा ज्यादा धन, शोहरत तथा हर सुख सुविधा को शीघ्र पाने की लालसा में इतना अंधा हो जाता है कि वह अपनों को भूलकर और पागल होकर दर दर भटकता रहता है और जीवन के वास्तविक सुख शांति और सुकून से वंचित हो जाता है। धन की चाहत में अपनों से दूर जाने से अच्छा है कि जीवन में दो चार सुख भले ही कम हों परंतु संतुष्टि होनी चाहिए। *"संतोष परमं सुखं"* अर्थात संतोष में ही सच्चा सुख है, अतः जीवन की सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब संतुष्टी के साथ आत्म कल्याण की सोच हो और जिसने जीवन को इस सोच से जिया उसे जीवन के आनंद की अनगिनत सुखद अनुभूति पाने से कोई नहीं रोक सकता। कहने का तात्पर्य यहां यह है कि निराशा और असहाय होने के बजाए हमें अपने अच्छे कर्मों पर विश्वास रखते हुए जीवन को जिंदादिली से जीना चाहिए क्योंकि ये पल हमें हमारी चेतना की ओर उन्मुख कर आत्मबल बढ़ाने और अतिरिक्त ऊर्जा प्रदान कर हमारे मन मंदिर में जीवन भर आशा के संचार रूपी दिए को जलाते रहते हैं।

"'ये जीवन है इस जीवन का यही है, यही है, यही है, रंग रूप,
थोड़े गम हैं थोडी खुशियां यही है, यही है छांव धूप"

जैसा हम जानते है प्रत्येक क्षण एक जैसा नही हो सकता, कोई पल आनंद देता है तो कोई पल अवसाद। हर कष्टप्रद पल का सामना इस आशा के साथ करना चाहिए जैसे रात के बाद दिन का उजाला होना। आत्मविश्वास को जागृत करने के लिए अनेक उपाए किए जा सकतें हैं जैसे सर्वप्रथम आरोग्यमय बनने और तन मन को चुस्त दुरुस्त बनाए रखने का प्रयास। प्रतिदिन ॐ के उच्चारण से उत्पन्न नाद से करें जो शरीर की सभी इंद्रियों में ऊर्जा का संचार करता है।

ईश्वर ने हमें जीवन दिया इसलिए बुरी आदतों को छोड़कर शरीर को संयमित दिनचर्या, खान-पान, गहरी व सुखद नींद के साथ संतुलित रखकर नियमित व्यायाम, योग और ध्यान करें जिससे शरीर के सभी अंग तेज एवं सक्रिय रहेंगे। इससे किसी भी कार्य में पूर्णत: केंद्रित होने, याददाश्त को बढ़ाने और क्रोध को काबू करने आदि से हमारे अंदर संयम और सहनशीलता का भाव आता है। फलस्वरूप हम गंभीर और मजबूत बनते हैं। यदि हमारा तन मन स्वस्थ्य और निरोगी काया होगी तब हम सबसे सुखी और सबसे धनी इंसान होंगे। इसके अतिरिक्त जब भी समय मिले मधुर संगीत सुनें जिससे हम मन को भटकाने की बजाय आराम पहुंचा सकते हैं।

"कल क्या होगा किसको खबर"

जीवन है एक पहेली- जिंदगी के अनेक रूपों के विषय में सोचने पर यह अहसास होता है कि आखिर जीवन की सच्चाई क्या है। क्या वास्तव में जीवन एक पहेली है या फिर इम्तिहान। कभी जीवन को अकेले जीने की चाहत होती है तो कभी लगता है सामाजिक होना भी जरूरी है अन्यथा जीवन एकाकी और नीरस हो जाएगा।

निष्कर्ष यह निकलता है कि जीवन को सार्थक बनाने के लिए सबके प्रति कृतज्ञता का भाव रख और चेहरे पर सदैव मुस्कान के साथ परिवार और समाज में सबको साथ लेकर चलना और अपने से छोटों और बड़े बुजुर्गों का विशेष ख्याल रखना चाहिए जिससे जीवन का सच्चा सुख मिलता है। जिंदगी की इस पहेली को सुलझाते समय सुख और दुख अवश्य मिलेंगे फिर क्यों न इसे खुशी से सुलझाया जाए, हो सकता है इसमें कुछ ज्यादा ही आनन्द मिले।

"जिंदगी कैसी है पहेली हाय, कभी तो रुलाए कभी ये हंसाए"

आइए, जीवन की पहेली को सरलता से सुलझाने और जीवन को सार्थक बनाने के लिए कुछ जीवनपयोगी बातों पर विचार करते है; विश्व में ऐसे अनेक महापुरुष, विद्‌वान विचारक, राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक, अभिनेता और सामाजिक कार्यकर्ता आदि हैं जिन्होंने जीवन में आत्म-विश्वास के बल पर और समय के महत्त्व को समझ अपने-अपने क्षेत्रों में अनेक कार्य किए और विश्व में महान सफलताएँ प्राप्त की।

हमारे समाज व आस-पास भी ऐसे ही अनेक लोग मिल जाएंगे जिन्होंने जीवन के असली रहस्य को पहचाना और देश के लिए महान कार्य किए। आज हमारा भी कर्तव्य बनता है कि अपने मूल्यवान जीवन को सार्थक बनाएं और सफलता की चरम सीमा को पाने का प्रयत्न करें जिससे हमारे साथ आने वाली भावी पीढ़ी भी अपने जीवन को खुशी और जिंदादिली से

जीकर देश की भलाई में कुछ योगदान करें। जीवन को सार्थकता प्रदान करने हेतु निम्नलिखित कुछ विशेष उपयोगी बातों पर गौर करें;

- मानव में निहित गुण तथा हंसमुख चेहरा ही उसका सच्चा श्रृंगार होता है। सभी का आदर करें तभी आपका आदर सभी करेंगे। सबका दिल जीतने के लिए स्वभाव को मधुर व प्रेम युक्त बनाएं।
- चरित्रवान बनें, कारण चरित्र गया तब धन ऐश्वर्य सब कुछ चला जाता है। सद्आचरण प्रस्तुत करें, क्योंकि यह गुण रत्नों से अधिक मूल्यवान होता है।
- आलस्य और चिड़चिड़ापन तथा क्रोध को त्यागें, इससे शक्ति का ह्रास होता है, अपनी शक्ति का उपयोग बुद्धिमत्ता से करें चिंतामुक्त रहें और दूसरों की अच्छाईयों को स्वीकार कर अपनी कमजोरियों को छोडने का सोचें।
- लालच को छोड़ ईमानदार, उदार और शांत बनें जिसमें सच्ची संतुष्टि है। ज्ञानवर्धक साहित्य पढें, क्योंकि यही वह सच्चा साथी है जो हमें सत्य मार्ग पर ले जाने में सहायक होता है।
- किसी भी पहाड़ जैसी कठिन परिस्थिति का सामना बुद्धीयुक्त साहस और धैर्य से करना पर्याप्त होता है न कि बल प्रयोग से। मन में दृढ निश्चय और प्रेम भाव से किए गए कार्य में सफलता तत्काल मिलती है।

उपर्युक्त सभी बातें जीवन को सार्थक बनाने में बहुत हद तक उपयोगी साबित हो सकती है। सामाजिक और नैतिक ज्ञान की बातों पर मंथन कर विश्वास के साथ चलें और समाज में एक आदर्श प्रस्तुत कर अपने जीवन को आनंद और जिंदादिली के साथ सिर उठाकर जिएँ।
ईश्वर से प्राप्त अपने एकमात्र जीवन को यदि हम अपने अच्छे कर्मों और व्यवहार से सार्थक बना दें तो हम सबका जीवन अवश्य सफल हो जाएगा। हमारे शरीर की पाँचों इंद्रियों में एक संतुलन बनाना हमारा प्रथम कार्य होना चाहिए तभी हम एक सर्व गुणों से सम्पन्न मानव कहलाएंगे। इसके लिए आध्यात्मिक जीवन का सहारा लिया जा सकता है। आध्यात्मिक होने का अर्थ सन्यास, वैराग्य आदि से नही है। अध्यात्म हमें जीवन को सही जीने की कला सिखाता है। आध्यात्मिक शास्त्र जैसे गीता आदि हमारे लिए एक तरह से मार्गदर्शक का कार्य करता है जिससे हमारे तन मन, बुद्धि, अहंकार आदि के प्रयोग में सही दिशा मिल सके।
धर्म कोई भी हो सभी को अध्यात्म से जुड़कर परिवार और समाज के लिए भलाई के कार्य करना चाहिए। आध्यात्मिक जीवन का रास्ता ऐसा है जो यह संदेश देता है कि जीवन के हर सम तथा विषम क्षणों का आनंद वर्तमान में रहकर और मुक्त भाव से सभी महत्वाकांक्षाओं

पर विजयी होकर प्राप्त करना चाहिए। भूत और भविष्य काल में उलझ कर बहुमूल्य जीवन को सपनों के बंधन में रखने से अच्छा वर्तमान में रहकर जीवन को जिंदादिली के साथ जिएं ताकि हम आज की खुशी पाने से वंचित ना रह सकें। समय गतिमान है यह रुकता नहीं है अतः हर पल को सार्थक बनाते हुए अभी जियें क्योंकि यह पल दुबारा नहीं आएगा।

जीवन को सार्थक बनाने का सही आशय यही है कि हम जीवन के हर पल या समय को बिना गवाएं सबकी भलाई के लिए उपयोगी कार्य करते रहें जिसके लिए ईश्वर ने हम सभी को पृथ्वी पर मानव रूप में सभी चौरासी लाख योनियों में सबसे ज्यादा बुद्धि देकर जन्म दिया है। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम इस जीवन को व्यर्थ न जाने दें।

महान भारतीय आध्यात्मिक शास्त्र गीता में एक बहुत ही बड़ा ज्ञान भरा संदेश दिया गया है जिसका उपयोग हर समय कर्म के संदर्भ में किया जाता है: *'कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"* अर्थात किसी फल की अपेक्षा ना करते हुए अपने कर्म को करते रहना चाहिए। यदि हम इस संदेश को अपने मन मस्तिष्क में समाहित कर यह मानसिकता बनाएँ कि हम कोई भी कर्म करते समय उसके परिणाम की आशा नहीं करेंगे तब जीवनपर्यंत हम अच्छे कार्यों को करने की प्रति सदा प्रेरित रहेंगे। इससे हमारा आत्म विश्वास बढ़ेगा और हम अपने जीवन को सच्चे मन से सार्थक बना सकने में सफल हो सकेंगे और जीवन की यह सार्थकता समाज और देश के कल्याण कार्य को समर्पित करें तभी हम अपनी आत्मा को परम सुख प्रदान कर सकेंगे।

अपने मिशन में कामयाब होने के लिए,

आपको अपने लक्ष्य के प्रति एकचित निष्ठावान होना पड़ेगा ।

❖डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

सामान्य लेख

उन्हें कहें, जाने के लिए

❖ प्रकाश चिंचोले

'जब देखो आपका तबादला हो जाता है, बाकी लोग इतने सालों से यहाँ पड़े है, क्या उनकी ओर किसी का ध्यान जाता है'! धर्मपत्नी जब यह शब्द बाण छोड़ती है, चुप रहना पड़ता है। कैसे समझाएं? मन में यही प्रश्न घूमता रहता है।

'बाहर से इतनी सारी महिलाओं का तबादला हुआ है, अपने छोटे छोटे बच्चों को छोड़ कर आईं हैं, वे सब कैसे सहन करती होंगी '? इतना कहने पर वह थोड़ा शांत तो हो जाती है, छोटा सा मुँह बना लेती है, लेकिन चेहरे से झलकने वाली परेशानी को छुपा नहीं सकती। कुछ महिलाओं का स्थानांतरण कर दिया जाता है और उदाहरण दिया जाता है पुरुषों को कि जब महिलाएं स्थानांतरण स्वीकार कर सकती हैं तो आप इसे क्यों स्वीकार नही कर सकते?

'क्यों नहीं कर सकते, जरूर कर सकते है।' कहना आसान है, लेकिन महिलाओं को किन परेशानियों से गुजरना पड़ता है, वे ही महसूस कर सकते हैं, जिन्होंने स्थानांतरण शब्द के अर्थ का वास्तव में अनुभव किया हो। इस पीड़ा को किसी तरह शब्दों में वर्णन करना शायद आसान नहीं है। 'यह मेरी छोटी बेटी की तस्वीर है, आजकल उसकी नानी उसे संभाल रही है, जिसे खुद सहारे की जरुरत है।' महिला द्वारा अपने मोबाइल में कैद एक चित्र को जब वह दूसरी महिला को दर्शाती है, मन अनायास ही सोचने को मजबूर हो जाता है। इसी प्रकार के अनुभव से गुजरने वाली दूसरी महिला भी कहने लगती है, 'आजकल पतिदेव का मूड भी ठीक नहीं रहता, जबसे घर से दूर आए हैं, पता नहीं कब घर वापस लौटने को मिलेगा।' इस तरह मिलती-जुलती व्यथाएं दस्तक दे जाती हैं या गूंजती रहती हैं, इन्हें केवल शांत होकर महसूस किया जा सकता हैं।

स्थानांतरण कोई नया विषय तो नहीं है, लेकिन यह विषय औरों को प्रोत्साहित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है! जरूरत है, जिनका स्थानांतरण हुआ है, उनका साहस, धैर्य बढ़ाना, ताकि वे भी अपनी मंजिल तक पहुंच सकें, कठिन परिस्थितियों में आसानी से अपना रास्ता तय कर सकें।

समय अपनी रफ़्तार से गुज़रता है। पतियों की अनुपस्थिति में धर्मपत्नियों की सहनशक्ति और आत्मविश्वास भी बढ़ रहा है। एक दिन एक महिला अधिकारी से फोन पर बातचीत के

❖ प्रादेशिक मौसम केंद्र नागपुर में मौसम विज्ञानी "ए" के पद पर कार्यरत हैं

बाद पत्नी को समझ आ गया कि किस विषय पर चर्चा हो रही है। और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा, 'प्रमोशन के साथ स्थानांतरण जल्दी ही होने की संभावना है, अतः मैडम परेशान है।'

'उन्हें कहें, जाने के लिए', पत्नी ने तुरंत ही थोड़े शब्दों में जैसे हल बता दिया हो। आने वाली परेशानी को वह इस तरह व्यक्त करेगी, कभी सोचा न था।

कहना आसान होता है, 'जब मैंने सहन किया है फिर क्यों न दूसरा भी सहन करें।' समझना जरूरी है, आखिर क्यों ऐसे विचार आते है? कई लोग भी ऐसा ही सोचते हैं, ऐसे मार्ग को सही कहते हैं, अर्थात इस विचारधारा से सहमत हैं।

'ही फॉर शी', एक पुरुष द्वारा महिलाओं की परेशानी को देखना, उसका अनुभव करना और फिर सिर्फ अपने तक सीमित रखना, क्या सही होगा?

स्त्री का सम्मान, देश का सम्मान है। तो फिर यह छोटा सा संदेश सिर्फ उनके लिए है जो संवेदनशील हैं क्योंकि आप भी उनकी मदद करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है, चाहे घर में हों या बाहर या फिर दफ्तर में।

जो सोचते हैं कि घर से बाहर रहकर लोग खुश रहते हैं, वे शायद गलतफहमी में जी रहे हैं। घर परिवार के साथ जो जीते हैं, शायद ज्यादा चिंतामुक्त वातावरण में जीते हैं। अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं।

एक दिन, अपने घर, अपनी मंजिल पर वे अवश्य पहुंच जाते हैं, जो अपने घर जाने के लिए बेताब होते है। जहाँ इंतजार करने वाला कोई होता है, बात कुछ और ही होती है।

संभव है मन में यह सुविचार जागृत हो 'मैंने दुःख सहन किया, अब किसी और के नसीब में ऐसा दिन न आएं।'

"उन्हें कहें जाने के लिए" दो वर्षों की अपनी तथा आस पास के मौसम की दास्तां है। किसी भी माध्यम से उत्साह को कम करने का यह प्रयास नहीं है क्योंकि जिंदगी आगे बढ़ने का नाम है। मुझे यक़ीन है, समय के साथ परिवर्तन संभव है। क्रांति करुणा भाव से भी आती है। जरूरत है तो सिर्फ सकारात्मक सोच की ।

घर से दूर किसी अनजान जगह पर अनजान राहों में, कभी चकाचौंध कर देने वाले रोशनी में, तो कभी अमावस जैसे अंधकार में, अकेले सफ़र कर मंजिल पाना, कठिन महसूस हो सकता है। कामना करते हैं, आपका सफर भी शानदार हो।

सामान्य लेख

मच्छरों का महासम्मेलन

❖ रेवा शर्मा

मेरे हाथ न जाने कितने मच्छरों के खून से रंगे हैं। यानि तमाम गुडनाइट, ऑल आउट, कछुआ अगरबत्ती आदि के निष्प्रभावित होते ही, ताली पीट पीट कर न जाने कितने मच्छरों का सर कलम किया। इसमें मेरी कोई बहादुरी नहीं, बस मच्छर ही खून चूस कर इतना नशे में आ जाते हैं कि उतनी फुर्ती से उड़ नहीं पाते और शिकार हो जाते हैं। है तो यह एक छोटा सा मच्छर...पर आतंक इतना मचा रखा है कि अच्छों अच्छों की छुट्टी कर रखी है। पूरे संसार में इसने अपना आतंक मचा रखा है। सभी डरते हैं एक अदना से या कहें ऐयारी मच्छर से। डिस्कवरी चैनल पर शार्क का खूंखार रूप देख कर दिल सिहर उठता है। उसके खूंखार नुकीले, तीखे, आरीनुमा दाँत दिल दहलाने को काफी हैं। ये मछलियों को अपना भोजन बनाती है तो समझ में आता है किंतु जॉज़ जैसी फिल्मों में इंसानों को अपना शिकार बनाते देख अजब सा खौफ पैदा होता है। किंतु यह भी सच है कि हिंसक खतरनाक जीवों से औसतन साल में कुछेक ही दुर्भाग्यवश इसका शिकार होते हैं। ज्यादा हादसे गाय, बैल, भैंस आदि के साथ होते हैं। उन हादसों से मरने वाले लोगों की संख्या थोड़ी ज्यादा है परंतु सबसे ज्यादा लोग मच्छरों की वजह से मारे जाते हैं। मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया ऐसी खतरनाक बीमारियाँ है जिनसे इंसान काफी तादात में मारे जाते हैं। अब आप ही अंदाज़ा लगाइए एक अदना से मच्छर की ताकत का।

जैसे जैसे इंसान प्रगति पथ पर आगे बढ़ता गया और मच्छर से मुक्ति पाने के नए नए तरीके इजाद करता गया तो मच्छर भी कुछ कम प्रगतिशील नहीं रहे। वे भी दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करने लगे। आखिर वो दिन भी आया जब इंसान ने देखा कि मच्छर गुड नाइट, ऑल आउट, मच्छर मारने वाले रैकेट के इर्द गिर्द डांस करता मेरा मज़ाक उड़ा रहा है। उनकी तिलमिला कर रख देने वाली हँसी की आवाज कानों के भीतर तक गूँज जाती है। इसी उधेड़बुन में मुझे झपकी आ गई। जिन मच्छरों के रिश्तेदारों के खून से मेरे हाथ रंगे हैं वे मच्छर मुझे कभी माफ न करेंगे। यह कसक उनके दिलों में हमेशा बरकरार रहेगी। अपने शहीद भाई बंधुओं की शहादत को वे कभी बेकार न होने देंगे, इस भाव को रखते हुए एक बुजुर्ग मच्छर ने महासम्मेलन आयोजित करने का प्रस्ताव रखा जिसमें उन मच्छरों को श्रद्धांजलि दी जा सके और बचाव के उपाय किए जा सके । युवा मच्छरों में जोश तो बहुत

❖ मुख्यालय में वरिष्ठ हिंदी अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं

आया यह प्रस्ताव सुनकर स्थान के चयन के विषय में वे थोड़ा चिंतित हुए। आखिर वे कहाँ बेखौफ एक स्टैंडर्ड के स्थल का चयन कर पाएंगे जहाँ बेरोकटोक उनका कार्यक्रम हो सके। अन्ततः एक स्मार्ट सी नई कार का चयन किया गया। यह विचार एक युवा मच्छर का था जो अक्सर कार में आया जाया करता था। कार के ए सी वाले स्थान पर उसने अपना फ्लैट भी बुक कर रखा था। वहाँ कोई ज्यादा रोक टोक रहती नहीं। दूसरे मच्छरों को भी यह विचार भा गया।

आखिर एक कार में महासम्मेलन होने जा रहा है यह कोई मामूली बात नहीं। नहीं तो उन्होंने गंदे नालों या रूके ढके पानी में ही छोटी छोटी बैठकें अटैंड की थी। यह आइडिया आकर्षक लगा सबको। सभी प्रजातियों के मच्छरों को निमंत्रण भेजा गया। मलेरिया, डेंगू चिकनगुनिया फैलाने वाले मच्छर विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। नियत दिन सब वहाँ इकट्ठे हो गए। कार के फर्श पर, पंखें में , ए सी में अच्छी खासी भीड़ हो गई। जिसे जहाँ जगह मिली वह वहीं छिप गया। कोई सीट पर कूदे, तो कोई मच्छर रियर व्यू मिरर में स्वयं को निहार निहार कर भाव विभोर होते दिखे। उन्होंने खुद को बड़ा सेफ पाया।

आखिर एक दिन साँझ ढले महासम्मेलन आरंभ हुआ। सबसे पहले बुजुर्गवार मच्छर ने शहीद मच्छरों को श्रद्धांजलि दी और सब मच्छरों ने प्रण किया कि उनकी शहादतें व्यर्थ न जाएँगी हम इंसानों की नाक में दम करके ही रहेंगे। सभी मच्छरों ने तालियाँ बजा बजा कर इस बात का समर्थन किया। तालियों की इसी गड़गड़ाहट के बीच मच्छरों का विचार मंथन सत्र का आरंभ हुआ । अधिकाँश मच्छरों की समस्या यह भी अब गुडनाइट, ऑल आउट आदि जैसी मच्छर मार दवाइयों पर उन्होंने लगभग विजय प्राप्त कर ली है पर लोग अब मच्छरदानी में घुस कर सोते हैं। अतः उन पर कैसे विजय पाई जाए। साथ बैठे दूसरे मच्छर ने विस्तार एवं धैर्यपूर्वक समस्या सुनी और कहा कि देखो भइया इसमें दो राय नहीं है कि मच्छरदानी में एक मच्छर का घुसना बहुत ही टेढ़ी खीर है पर उसके लिए थोड़ा धैर्य चाहिए। मच्छरदानी के आस पास लेटे रहो थोड़ी ही देर में तुम्हें अंदर जाने का रास्ता मिल जाएगा। फिर नाश्ता पानी के तुरंत बाद मच्छरदानी की जाली पर ऐसे जा चिपको कि नजर में न आओ। यहाँ अत्यंत सावधानी बरतनी बहुत जरूरी है।

एक युवा मच्छर जो अक्सर कार में आया जाया करता था उसकी भेंट उन मच्छरों से भी हुई जो काफी समय से कारों को अपनी आश्रयस्थली बनाए हुए थे किंतु उनकी भी अपनी समस्या थी । एक मच्छर ने कहा कि यह ठीक है कि कार काफी सेफ है, यहाँ गली गली मच्छरों को धुँए से मारने वाली गाड़ी का खौफ नहीं है। मच्छर मारने वाली दवाइयाँ को कार

में नहीं लगा सकते। पर जब हमारे मित्र साइट सीइंग के लिए निकलते हैं, खिड़कियों से बाहर के दृश्य देख रहे होते हैं कि एक खूनी पंजा आता है और पट्ट से उन्हें वहीं चेप देता है और वही खिड़की पर लगे लगे उनके प्राण पखेरू उड़ जाते हैं।

एक दूसरे मच्छर ने सिर हिला कर अपनी सहमति दी और बोला कि मैं तो बाल बाल बचा वो तो ड्राइवर का हाथ थोड़ा ढीला पड़ा और मैं जान बचा कर बच निकला। बड़ी मुश्किल है।

एक जोशीले मच्छर ने मंच संभाला और सबको टिप्स देने लगा। वह काफी अनुभवी था। उसने जोशीले अंदाज में कहा कि आप लोग अपने दिमाग का भी थोड़ा इस्तेमाल करना सीखें। साइट सीइंग करो पर कार चल रही हो तो तब करो। तुम रेड लाइट के होते ही घूमने निकलते हो तो ड्राइवर को तो लंबी लाइटों पर अपना टाइम पास करना ही होता है तो वह तुम लोगों का शिकार करना आरंभ कर देता है।

देखो रेड लाइट पर सब इधर उधर हो जाओ। कोई नज़र न आओ जैसे ही ग्रीन लाइट हो घूमो फिरो जहाँ मरजी। उस समय तुम नीचे पैरों में जाकर काटा करो; मजाल है कि तुम्हारा बाल भी बाँका हो जाए।

अच्छा! शेष मच्छरों ने हैरानी जताई। एक मच्छर बोला मैं अपने रिश्तेदार के घर जा रहा था। उत्साह से मैं खिड़की पर बाहर के नजारे देख रहा था कि बस झट से शीशा नीचे करके मुझे आधे रास्ते में ही उतार दिया। मैं इसका बदला लेकर ही रहूँगा।

अध्यक्ष महोदय ने सबको अपनी प्रेरणामयी वाणी में संदेश दिया कि देखो तुम अपने आप को कमज़ोर अदना सा मच्छर न समझो। तुम में असीम संभावनाएं हैं, ऐयारी के गुण है। यह इंसान चाँद पर अपना पैर रख चुका है, समुद्र की गहराइयों को नाप रहा है पर तुम्हारे आगे वह बेबस है। मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया से वह कितना भयभीत होता है। अपने प्राण तक गंवा बैठता है।

तो साथियों, इंसान डाल डाल, तो तुम पात पात हो। यह मिशन जारी रखो। तुम सबको नित नई नई चुनौतियों का सामना करना है। इतिहास से सीख लेनी है अपनी गलतियों को दोहराना नहीं। इंसान को अपनी मुट्ठी में रखना। सभी मच्छर नारा लगा रहे थे 'हर ज़ोर जुल्म की टक्कर में, संघर्ष हमारा नारा है।' इस गूँज से मेरी निद्रा टूटी। हे भगवान! मच्छर अब क्या सपनों में भी अपना आशियाना बसाने लगे हैं। अगली सुबह ऑफिस जाने के लिए कार स्टार्ट की तो मच्छर ने स्वागत किया। मच्छर झूम झूम कर गाना गाने लगे।

हे भगवान ! कहीं वो महासम्मेलन मेरी गाड़ी में ही तो नहीं हुआ था...............

सामान्य लेख

सफेद शेर की कहानी- मेरी जुबानी

❖ डॉ.गुरुदत्त मिश्र

एक समय था मध्य प्रदेश के रीवा-सीधी वन खण्डों में सफेद शेरों की दहाड़ अक्सर सुनाई देती रहती थी, विंध्याचल की कैमूर पर्वत श्रृंखला के सघन वनों में दुनिया के दुर्लभ और अद्‌वितीय वन्य प्राणी सफेद शेरों का प्राकृतिक आवास और क्रीडा स्थल था । रीवा, सीधी और शहडोल के हजारों वर्ग किलोमीटर भू-क्षेत्र में इनका आवास था। वर्ष 1951 में सीधी जिले के गोपद-बनास तहसील में शेर-शेरनी का एक जोड़ा नरभक्षी हो गया था, इस जोड़े का उत्पात कैमूर-केहचुआँ के जंगलों के आसपास बसे गाँवों में लगातार जारी था, प्रजा परेशान थी। लाचार प्रजा ने रीवा के महाराजा गुलाब सिंह के राज दरबार में गुहार लगाई।

इन नरभक्षी शेरों को पकडने के लिए रीवा महाराजा गुलाब सिंह एवं उनके पुत्र मार्तण्ड सिंह ने बरगडी में शिविर लगाया। नरभक्षी शेरों की टोह में भटकते हुए 27 मई 1951 को महाराजा को एक पीले रंग पर काली पट्टी वाली शेरनी मिली, इसके साथ नौ माह के चार बच्चे भी थे, इनमें तीन बच्चे तो सामान्य थे लेकिन एक बच्चा सफेद चमडी का था जिस पर भूरी पट्टियाँ थी, रीवा महाराज ने इस अदभूत प्राणी को पिंजरों में कैद करवा लिया। इस सफेद शेर शावक का नाम ‘मोहन’ रखा गया और इसकी वंश वृद्धि के लिए लगातार प्रयास किए गए किन्तु कामयाबी नहीं मिली।

मोहन

सुकेशी

रीवा नरेश ने दूरदृष्टि से काम लेते हुए पीले रंग की सुकेशी नाम की शेरनी भी सफेद शेर के साथ गुफ्तगु के लिए छोड दी और जोड़े में अंतरंगता कायम हो गई , इससे तीन बार बच्चे जन्में लेकिन सभी बच्चे साधारण ही निकले । सफेद शेर की नस्ल बचाने के लिए रीवा

❖ मौसम केन्द्र, भोपाल में मौसम विज्ञानी “ए” के पद पर कार्यरत हैं

महाराज ने सुकेशी को मोहन से अलग कर,मोहन और सुकेशी से उत्पन्न एक शेरनी "राधा" को मोहन के पास छोड दिया। राधा और मोहन के संगम से अक्टूबर 1958 में चार सफेद शावकों का जन्म हुआ। बाद में इसी जोड़े से 1960 में तीन बच्चे पैदा हुए इनमें दो सफेद और एक पीला था। 1962 में फिर इनके दो सफेद बच्चे पैदा हुए इस तरह सफेद शेरों की वंश वृद्धि होती गई और वे रीवा -सीधी से निकलकर पूरी दुनिया में पहुँचे।

राधा

विश्व में पाए जाने वाले सभी सफेद शेर इसी मोहन के वंशज है। रीवा महाराज ने सफेद शेर का एक बच्चा अमेरिका के राष्ट्रपति आइजन हॉवर को भेंट किया । जून 1963 में चंपा-चमेली सफेद शेरों का जोड़ा इंगलैंड पहुँचाया गया। कोलकाता के चिड़ियाघर को भी नीलाद्रि और हिताद्रि नाम का जोड़ा दिया गया । दिल्ली के चिड़ियाघर में भी राधा-मोहन से पैदा शावकों को भेजा गया। रीवा के महाराजा ने राधा-मोहन और सुकेशी को जीवनपर्यन्त अपने पास रखा।

इस तरह इस अद्‌भुत प्राणी का विस्तार होता गया और इसकी चिड़ियाघरों में संख्या बढकर 70 हो गईं। अब सफेद शेर एक गौरवशाली अतीत बनकर रह गया। जंगलों में शेरों का

विनाश करने की नादानी भी इन्ही राजा महाराजाओं ने की जो बाद में इनकी वंश- वृद्धि के लिए प्रयत्नशील देखे गए । वन और वन्य प्राणी संरक्षक अधिनियम 1972 के अमल में आने से पहले राजाओं एवं अंग्रेजों द्वारा शिकार की खुली प्रतिस्पर्धाओं के कारण जंगलों में सफेद शेरों का विनाश हो चुका था। बाघ भी बचे तो इक्का-दुक्का। भोपाल के वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में 19 जून 1991 को रेशमा नाम की इकलौती सफेद शेरनी की हत्या श्यामू नाम के पीले शेर ने कर दी थी।

उसके बाद एक नर सफेद शेर रह गया रूस्तम। प्राणी विशेषज्ञों ने रूस्तम और रेशमा को पास-पास रखा तो दोनों में प्यार हो गया तो जून 1991 को इनके बीच की जाली हटा दी गई। जाली हटी तो रेशमा-श्यामू के निकट आई और श्यामू ने लपक कर उसकी गर्दन अपने जबड़ों में जकड़ ली और रेशमा की मौत हो गई । कुछ समय तक एकाकी जीवन बिताते हुए रूस्तम ने भी दम तोड़ दिया।

रेशमा

रेशमा को 1988 में भुवनेश्वर के नन्दन वन से भोपाल वन विहार लाया गया । रूस्तम रीवा के मोहन का वंशज था । अब मूल निवास स्थान रीवा के जंगलों में इनके पुनर्वास की पहल की जा रही है। मुकुंदपुर चिड़ियाघर में अब इन शेरों का पुनर्वास हो रहा है। यदि यह प्रयास सफल हो जाता है तो एक बार फिर कैमूर विंध्याचल की पर्वत श्रृंखलाओं में सफेद शेर की दहाड़ गुँजायमान होगी।

हिंदी दिवस

भारत मौसम विज्ञान विभाग
मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय
लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2016 की रिपोर्ट

भारत मौसम विज्ञान विभाग के महानिदेशक के कार्यालय, नई दिल्ली में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2016 समारोहपूर्वक मनाया गया । इस समारोह के आयोजन के लिए मौसम विज्ञान के महानिदेशक ने डॉ. एस. के. पेशिन वैज्ञानिक 'जी' (ई.एम.आर.सी.ओज़ोन) की अध्यक्षता में समारोह समिति का गठन किया । समारोह समिति की बैठक दिनांक 05.08.2016 को हुई जिसमें गत वर्ष की भाँति हिंदी पखवाड़ा के दौरान नीचे लिखी छह प्रतियोगिताएं आयोजित करने का निर्णय लिया गया -

क्र.सं.	प्रतियोगिता का नाम	प्रतियोगिता की तिथि
1.	हिंदी निबंध	01.09.2016
2.	हिंदी रूपांतरण	01.09.2016
3.	हिंदी टाइपिंग	02.09.2016
4.	हिंदी श्रुतलेखन	05.09.2016
5.	हिंदी आशुभाषण (तत्काल)	06.09.2016
6.	हिंदी वाद-विवाद	07.09.2016

उक्त छह प्रतियोगिताओं के लिए प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं दो प्रोत्साहन पुरस्कारों हेतु क्रमशः 3000/-रू., 2500/-रू., 2000/-रू. एवं 1500/-रू. की राशि के दो प्रोत्साहन पुरस्कार नकद देने का निर्णय लिया गया । हिंदीत्तर भाषी कार्मिकों को विशेष रुप से प्रोत्साहित करने हेतु उनके प्राप्तांकों के 10 प्रतिशत अंक बोनस के रुप में देने का निर्णय लिया गया ।

हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान आयोजित की गई हिंदी निबंध, हिंदी रूपांतरण, हिंदी टाइपिंग, हिंदी श्रुतलेखन, हिंदी आशुभाषण एवं हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिताओं के संबंध में संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है -

1. **हिंदी निबंधः-** यह प्रतियोगिता दिनांक 01.09.2016 को आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता के दो विषय (1) अनियोजित शहरीकरण से उत्पन्न आपदाएं तथा (2) हिंदी के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान रखे गए।इस प्रतियोगिता में कुल 27 प्रतियोगियों

ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता के मूल्यांकनकर्ताओं के नाम इस प्रकार हैं :-

1. श्री नरेन्द्र निगम, वैज्ञानिक 'ई', आर.एस.एम.सी.
2. सुश्री रेवा शर्मा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुभाग
3. श्री मुकेश कुमार गुप्ता, स.मौ.वि., संगठन अनुभाग

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम - श्री सुरेन्द्र प्रताप सिंह, वैज्ञानिक 'बी' एन.डब्ल्यू.पी.

द्वितीय - श्री ललित कुमार, उच्च श्रेणी लिपिक, सामान्य अनुभाग

तृतीय - श्री ओस्कर कुजूर, प्रशासनिक अधिकारी-।।, राष्ट्रीय भूकम्प विज्ञान केंद्र

प्रोत्साहन -। श्री वेद प्रकाश बावलिया, सहायक मौसम विज्ञानी-।, कल्याण अनुभाग

प्रोत्साहन -।। श्री लक्ष्मीकांत, सहायक मौसम विज्ञानी-।।, प्रकाशन अनुभाग

2. हिंदी रूपांतरण प्रतियोगिता:- यह प्रतियोगिता दिनांक 01.09.2016 को आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में कुल 24 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता के मूल्यांकनकर्ताओं के नाम इस प्रकार हैं :-

1. श्री शिव गणेश, वैज्ञानिक 'ई', सूचना प्रणाली एवं सेवाएं प्रभाग
1. सुश्री रेवा शर्मा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुभाग
2. श्रीमती एम.अनुराधा, वरिष्ठ अनुवादक, हिंदी अनुभाग

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम - श्री रामहरि शर्मा, वैज्ञानिक सहायक, राष्ट्रीय ओज़ोन केंद्र

द्वितीय - श्री राजेश कुमार-I, सहायक मौसम विज्ञानी-II, जल मौसम प्रभाग

तृतीय - श्री धनसिंह, वैज्ञानिक सहायक, प्रकाशन अनुभाग

प्रोत्साहन -I श्रीमती नीति डी. मल्हन, सहायक, सामान्य अनुभाग

प्रोत्साहन -II श्री राजकुमार वर्मा, सहायक मौसम विज्ञानी-II, प्रकाशन अनुभाग

3. हिंदी टाइपिंग प्रतियोगिता :- यह प्रतियोगिता दिनांक 02.09.2016 को आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में 12 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता के मूल्यांकनकर्ताओं के नाम इस प्रकार हैं :-

1. श्री राम बाबू वर्मा, निदेशक,उपग्रह मौसम प्रभाग
2. श्रीमती सरिता जोशी, हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुभाग
3. श्री गगनदीप, प्रशासनिक अधिकारी-III, प्रा.मौ.केंद्र, नई दिल्ली

इस प्रतियोगिता में नीचे लिखे प्रतियोगी विजयी रहे :-

प्रथम - श्री गौरव, अवर श्रेणी लिपिक, सामान्य अनुभाग (बिल)

द्वितीय - सुश्री रीतु मान, अवर श्रेणी लिपिक, प्रा.मौ.केंद्र, नई दिल्ली

तृतीय - श्री गोपी चंद, सहायक, प्रकाशन अनुभाग

प्रोत्साहन -I श्रीमती जयालक्ष्मी, अवर श्रेणी लिपिक, मौविउमनि (उ.वा.उ.) नई दिल्ली

प्रोत्साहन -II श्रीमती सुषमा हतवाल, सहायक, बजट अनुभाग

4. **हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता : -** यह प्रतियोगिता दिनांक 05.09.2016 को आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में 26 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता के मूल्यांकनकर्ताओं के नाम इस प्रकार हैं :-

1. श्री आर.पी.लाल, वैज्ञानिक 'ई', प्रा.मौ.केंद्र, नई दिल्ली
2. सुश्री रेवा शर्मा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी
3. श्रीमती सरिता जोशी, हिंदी अधिकारी

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम - श्री रामनाथ गुप्ता, स.मौ.वि.II, मौविउमनि (उ.वा.उ.) नई दिल्ली

द्वितीय - श्री रतन लाल श्रीवास्तव, सहायक मौसम विज्ञानी-II, उपग्रह मौसम प्रभाग

तृतीय - श्री सुभाष चंद्र शर्मा, सहायक मौसम विज्ञानी-I, जल मौसम प्रभाग

प्रोत्साहन -I श्री दिनेश कुशवाहा, मैकेनिक ग्रेड-I, मौविउमनि (उ.वा.उ.) नई दिल्ली

प्रोत्साहन -II श्री सुमेश वर्मा, सहायक मौसम विज्ञानी-II, आयोजना अनुभाग

5. **हिंदी आशुभाषण (तत्काल) प्रतियोगिता :-** यह प्रतियोगिता दिनांक 06.09.2016 को आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में 10 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता

के मूल्यांकनकर्ताओं के नाम इस प्रकार हैं :-

1. श्री ए.के.शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ', प्रा.मौ.कैंद्र, नई दिल्ली
2. श्री वी.के.सोनी, वैज्ञानिक 'ई', पर्यावरण मौसम निगरानी
3. डॉ. ए.के.मित्रा, वैज्ञानिक 'डी', उपग्रह मौसम प्रभाग

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम - श्रीमती नीलम, वैज्ञानिक सहायक, आई.एस.एस.डी.

द्वितीय - श्री सतपाल सिंह, उच्च श्रेणी लिपिक, सामान्य अनुभाग

तृतीय - श्री अजय ठुकराल, वैज्ञानिक सहायक, संगठन अनुभाग

प्रोत्साहन -। श्री शंकर प्रसाद, सहायक मौसम विज्ञानी-।, मौविउमनि (उवाउ), नई दिल्ली

प्रोत्साहन -।। श्री कुलदीप सिंह रावत, सहायक मौसम विज्ञानी-।।, मौविउमनि (उ.वा.उ.) नई दिल्ली

6. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता दिनांक 07.09.2016 को आयोजित की गई । इसका विषय था- भारत में वस्तु सेवा मूल्य कर (GST) आवश्यक है?

इस प्रतियोगिता में 11 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता की मूल्यांकन समिति के सदस्यों का विवरण इस प्रकार है :-

1. डॉ. सुरेन्दर कौर, वैज्ञानिक 'एफ', जल मौसम प्रभाग
2. श्री जे.एल. गौतम, वैज्ञानिक 'ई', भूकंप विज्ञान केंद्र

3. सुश्री रेवा शर्मा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुभाग

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम - श्री कुँवर अजय सिंह, वैज्ञानिक सहायक, सूचना संचार एवं उपकरण प्रशिक्षण केंद्र

द्वितीय -श्री ललित कुमार शर्मा, वैज्ञानिक सहायक, सूचना संचार एवं उपकरण प्रशिक्षण केंद्र

तृतीय - श्री बी.एस. डागर, सहायक मौसम विज्ञानी-।।, सुरक्षा अनुभाग

प्रोत्साहन -। श्रीमती पूनम सिंह, सहायक मौसम विज्ञानी-।।, प्रा.मौ.केंद्र, नई दिल्ली

प्रोत्साहन -।। श्री अजय कुमार, सहायक मौसम विज्ञानी-।।, मौविउमनि (उवाउ) नई दिल्ली

हिंदी दिवस समारोह-2016

भारत मौसम विज्ञान विभाग के मुख्यालय में हिंदी दिवस समारोह 26 सितम्बर 2016 को आयोजित किया गया । रंग बिरंगे फूलों से सजे और संगीतमय वृष्टि सभागार में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया । हिंदी दिवस समारोह की अध्यक्षता महानिदेशक महोदय डॉ. के.जे. रमेश जी ने की । इस समारोह की खास बात यह थी कि हमारे देश के वरिष्ठ कवि गज़लकार श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी जी इस समारोह के मुख्य अतिथि थे । वृष्टि सभागार में उपस्थित सभी लोगों का सुश्री रेवा शर्मा ने स्वागत, अभिवादन और अभिनन्दन किया । समारोह का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ । इसके पश्चात माँ सरस्वती का आशीर्वाद लेते हुए सरस्वती वंदना की गई । सरस्वती वंदना को मधुर स्वर दिया श्री एम.आर.कालवे, श्रीमती पूनम सिंह, श्रीमती जिगा कौल, श्री अशोक कुमार और साथियों ने ।

सरस्वती वंदना के उपरांत हिंदी दिवस समारोह समिति के अध्यक्ष डॉ.एस.के. पेशिन, वैज्ञानिक 'जी' ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा एक वर्ष के दौरान हिंदी अनुभाग द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों के बारे में संक्षेप में बताया ।

इसके बाद सुश्री रेवा शर्मा ने माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह द्वारा देशवासियों को भेजे गए संदेश को सभी श्रोताओं को पढ़ कर सुनाया । श्री एस. के.कुंडु; वैज्ञानिक 'जी', उपमहानिदेशक (प्रशासन एवं भंडार) ने भी श्रोताओं को सम्बोधित किया । राष्ट्रीय ओज़ोन केंद्र(ई.एम.आर.सी.) के वैज्ञानिक'जी' डॉ.एस.के.पेशिन तथा श्री रामहरि शर्मा, वैज्ञानिक सहायक को भी बधाई दी जिन्हें 14.09.2016 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित हिंदी दिवस समारोह के दौरान भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी महोदय के करकमलों से 'मौसम-मंजूषा' में प्रकाशित लेख के लिए क्रमश: हिंदीतर भाषी व हिंदी भाषी वर्ग में राजभाषा गौरव सम्मान (तृतीय) मिला । इसके बाद इस समारोह के मुख्य अतिथि कवि श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी जी को सम्मानित किया गया ।

इसके बाद श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी जी ने राजभाषा हिंदी के विषय में अपने उदगार प्रस्तुत किए और अपनी रचनाएं सुनाई । अपनी भाषा की महता पर प्रकाश डाला । अपनी दोहे, मुक्तक गज़ल व छंदमुक्त कविता से उन्होंने पूरे सभागार को मंत्रमुग्ध कर लिया । उनकी उपस्थिति से समारोह को चार चॉद लग गए हों जैसे ।

यह सुनहरा अवसर था विभागीय हिंदी गृह पत्रिका 'मौसम-मंजूषा' के 23वें संस्करण के विमोचन का । अत: 'मौसम-मंजूषा' के 23वें संस्करण का विमोचन महानिदेशक महोदय तथा मंच पर आसीन महानुभावों द्वारा किया गया ।

महानिदेशक महोदय ने मुख्य अतिथि श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी जी को स्मृति चिहन भेंट किया और शुभकामनाएं दीं । इसके बाद हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को महानिदेशक महोदय ने नकद पुरस्कार और प्रमाण-पत्र प्रदान किए । वर्ष 2015-2016 में हिंदी में सबसे अधिक पत्राचार करने के लिए केंद्रीय विमानन मौसम प्रभाग (सी.ए.एम.डी.) के प्रमुख श्री आर. सुरेश, वैज्ञानिक 'एफ' को राजभाषा चलशील्ड प्रदान की गई। अखिल भारतीय विभागीय हिंदी निबंध लेखन योजना प्रतियोगिता 2016 के दिल्ली स्थित के कार्यालयों के विजेताओं को भी प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए ।

तदुपरांत वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी और वरिष्ठ अनुवादक श्रीमती एम.अनुराधा को सांस्कृतिक कार्यक्रम के संचालन के लिए मंच पर आमंत्रित किया । सांस्कृतिक कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. देवेन्द्र प्रधान, पूनम सिंह, एम. आर. कालवे और अशोक ने देशभक्ति के सुंदर गीत गाकर सभी को देशभक्ति की भावना से ओत प्रोत कर दिया। इसके बाद पंडित बिरजू महाराज की रचना 'रास रचत बृज में नंदलाला' पर बालिकाओं द्वारा मनभावन कथक नृत्य प्रस्तुत किया गया । और फिर मौसम के शब्दों से जुड़ी 'मौसम गीतमाला का आयोजन किया गया जिसमें 'बरखा' और 'बहार' दो दीमें थी । उन्हें मौसम से जुड़े शब्दों के गीत गाने के लिए दिए गए । दर्शकों ने इसका भी खूब आनंद उठाया । राग मालकौंस पर आधारित 'आनंदों धारा बोहिछे' रविंद्र संगीत डॉ. देवेन्द्र प्रधान द्वारा प्रस्तुत किया गया ।

फिर हमेशा की तरह साहित्यिक नाटक प्रस्तुत किया गया । बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार भारतेंदु हरिशचंद्र के नाटक 'अंधेर नगरी चौपट राजा' का मंचन विभागीय कलाकारों द्वारा किया गया। इस नाटक के कलाकारों के अभिनय ने इसे चार चाँद लगा दिए।

और सांस्कृतिक कार्यक्रम का समापन किया गया सामूहिक गीत 'होली' से। सभी दर्शकों ने करतल ध्वनि से कलाकारों और सांस्कृतिक कार्यक्रम को सराहा ।

इसके उपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रम के सभी कलाकारों को महानिदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। धन्यवाद ज्ञापन के उपरांत कार्यक्रम का समापन हुआ ।

हिन्दी के विरोध का कोई भी आन्दोलन राष्ट्र की प्रगति में बाधक है।

❖ सुभाष चन्द्र बोस

हिंदी दिवस

उपकार्यालयों में हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा-2016 का समारोहपूर्वक आयोजन - रिपोर्ट

❖ संकलन - प्रमोद कुमार
सहायक
हिंदी अनुभाग

मौविअमनि (अनु.) पुणे में दिनांक 16.09.2016 से 29.09.2016 तक हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा-2016 समारोहपूर्वक मनाया गया । हिंदी पखवाड़ा 2016 समारोह का शुभारम्भ अपर महानिदेशक (अनुसंधान) श्री बी.मुखोपाध्याय द्वारा किया गया । हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । क्रमश: हिंदी निबंध प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता, हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता, सरल सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी गीत/ लोकगीत/ गजल/ भजन गायन प्रतियोगिता एवं अंताक्षरी प्रतियोंगिता आयोजित की गई ।

मौविअमनि (अनु.) पुणे में दिनांक 14.09.2016 को हिंदी दिवस समारोह मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. नितीन मोरे, भाषा विज्ञानी/ लेखक/प्रशिक्षक आदि उपस्थित रहे। हिंदी पखवाडे 2016 के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए ।

प्रादेशिक मौसम केंद्र, कोलकाता में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2016 समारोहपूर्वक मनाया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण और मसौदा लेखन प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, स्वरचित हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । परिणाम इस प्रकार है :-

1. हिंदी निबंध प्रतियोगिता

प्रथम - सुश्री प्रियम सिंह, अवर श्रेणी लिपिक
द्वितीय - श्री संजीव बसाक, सहायक
तृतीय - श्री मिलन प्रसाद भट्टाचार्या, स.मौ.वि.।।
प्रोत्साहन -।। श्री चंद्रभानु कुमार, सहायक
प्रोत्साहन -।। श्री प्रदीप कुमार गौड, अ.श्रे.लि.
प्रोत्साहन -।।। श्री कृष्ण कुमार गुप्ता, सहायक

2. हिंदी टिप्पण और मसौदा लेखन प्रतियोगिता

प्रथम - श्री संजीव बसाक, सहायक

द्वितीय - श्री कृष्ण कुमार गुप्ता, सहायक

तृतीय - सुश्री प्रियम सिंह, अवर श्रेणी लिपिक

प्रोत्साहन -। श्री मिलन प्रसाद भट्टाचार्या, स.मौ.वि.।।

प्रोत्साहन -।। श्री प्रदीप कुमार गौंड, अ.श्रे.लि.

प्रोत्साहन -।।। श्री तपन कुमार कुंडू, स.मौ.वि-।।

3. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

प्रथम - श्री सैकत घोष, अ.श्रे.लि.

द्वितीय - श्रीमती स्वप्ना मित्रा, प्रशा.अधिकारी-।।

तृतीय - श्री सुमन चट्टोपाध्याय, स.मौ.वि-।।

प्रोत्साहन -। श्री रंजन सरकार, स.मौ.वि-।।

प्रोत्साहन -।। श्री प्रशांत कुमार सरदार, स.मौ.वि-।।

प्रोत्साहन -।।। श्री अजय मंडल, अ.श्रे.लि.

4. हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता

प्रथम - श्री शंकर साहा, स्टाफ ड्राइवर

द्वितीय - श्री अशोक राय चौधरी, स.मौ.वि-।

तृतीय - श्री सत्यव्रत दत्ता, स.मौ.वि-।।

प्रोत्साहन -। श्री तपोमय हाजरा, वै.स.

प्रोत्साहन -।। श्री देवव्रत बंद्योपाध्याय, स.मौ.वि-।।

प्रोत्साहन -।।। सुश्री प्रियम सिंह, अवर श्रेणी लिपिक

प्रादेशिक मौसम केंद्र, कोलकाता में दिनांक 14.09.2016 को हिंदी दिवस समारोह मनाया गया । हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर सरस्वती वंदना द्वारा कार्यक्रम आरंभ किया गया। हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान श्री नीलोत्पल चतुर्वेदी, कनिष्ठ अनुवादक द्वारा माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह का संदेश पढ़कर सुनाया गया ।

हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए ।

प्रादेशिक मौसम केंद्र, नागपुर में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस दिनांक 01.09.2016 से समारोहपूर्वक मनाया गया । हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान हिंदी टंकण, हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन, हिंदी निबंध, हिंदी वाद विवाद, हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । परिणाम इस प्रकार है :-

1. हिंदी टंकण प्रतियोगिता

प्रथम	श्री एस.ए.पवार
द्वितीय	श्री डी.एस.पाटील
तृतीय	श्री पूर्णिमा भाजे
प्रोत्साहन	श्री आर.बी.इंगले

2. हिंदी टिप्पण और मसौदा लेखन प्रतियोगिता

प्रथम	श्री भारती पारवे
द्वितीय	श्री एम.आर.कान्होलकर
तृतीय	श्री डी.एस.पाटील
प्रोत्साहन	श्री एल.बी.जोशी

3. हिंदी निबंध प्रतियोगिता

प्रथम	श्री पी.एस.चिंचोले
द्वितीय	श्री आर.एन.यादव
तृतीय	श्री डी.एस.पाटील
प्रोत्साहन	श्रीमती मीना पिल्ले

4. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

प्रथम	श्री ए.वी.गोडे
द्वितीय	श्रीमती नीलिमा निनावे
तृतीय	श्री यू.के.पांडे
प्रोत्साहन	श्री जी.एम.शहारे

5. हिंदी स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता

प्रथम	श्री जी.एम.शहारे
द्वितीय	श्री आर.एन.यादव
तृतीय	श्री पी.एस.चिंचोले
प्रोत्साहन-I	श्रीमती नीलिमा निनावे
प्रोत्साहन-II	श्री एस.एस.खडसे

प्रादेशिक मौसम केंद्र, नागपुर में हिंदी दिवस समारोह मनाया गया । हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर न्यू इंगलिश हायरस्कूल की श्रीमती ज्योति लाटा, विभागाध्यक्ष मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे । प्रादेशिक मौसम केंद्र नागपुर के श्री एच.ए.के.सिंह, उपमहानिदेशक द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलन करके समारोह का शुभारंभ किया गया । हिंदी दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा मौसम केंद्र, भोपाल को चलशील्ड प्रदान की गई और भाषण प्रस्तुत किया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार वितरण किए गए । प्रादेशिक मौसम केंद्र, नागपुर में हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया ।

प्रादेशिक मौसम केंद्र, मुम्बई मौसम कार्यालय,सांताक्रूज,आर.एस.आर.डब्ल्यू विलेपार्ले में 14 सितम्बर,2016 से 28/09/2016 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस वर्ष-2016 में अधीनस्थ मौसम कार्यालयों डी.डब्लयू.आर. भुज, मौ.का.औरंगाबाद, रत्नागिरी, सूरत, नासिक,दहानु,सोलापुर,राजकोट,भावनगर,बरोड़ा,परभणी,डीसा,नलिया,पोरबंदर,वेरावल,महाबलेश्वर, लातूर,कोल्हापुर,कांडला,द्वारका,ओखा,सातारा,सांगली,कराड़,नांदेड़,दीव में भी हिन्दी दिवस बड़े उत्साह से मनाया गया ।

प्रादेशिक मौसम केंद, कोलाबा मुंबई,में पखवाड़े का शुभारंभ 14/09/2016 को हिन्दी दिवस के साथ किया गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन

किया गया । इस दौरान हिंदी निबंध प्रतियोगिता,सामान्य-ज्ञान,सुलेख-अनुवाद,हिन्दी टंकण का आयोजन किया गया। 28 सितंबर को हिंदी दिवस के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ पखवाड़े का समापन किया गया। कार्यक्रम में हिंदी कविता-पाठ, गीत-गायन,फ़िल्मी अंताक्षरी, तात्कालिक- भाषण का समावेश रहा ।मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशकजी के हाथों से 2015 के दौरान केंद्र एवं मौसम कार्यालयों में हिन्दी में हुई प्रगति एवं अन्य गतिविधियों के लिए मौसम कार्यालय,भावनगर को राजभाषा सम्मान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार प्रभारी अधिकारी, श्री.एच.बी.भट्ट,स.मौ.वि-11 ने ग्रहण किया। अन्य प्रतियोगिताओं में उत्तीर्ण अधिकारियों/कर्मचारियों को भी पुरस्कारों से सम्मानित किया गया ।

प्रादेशिक मौसम केन्द्र,चेन्नै में हिन्दी दिवस / हिन्दी पखवाड़ा 15 से 29 सितंबर 2016 तक मनाया गया । बंगलुरु, हैदराबाद, तिरुवनंतपुरम और चक्रवात चेतावनी केन्द्रों मे भी विभिन्न प्रतियोगिताओं आयोजित की गई ।

चेन्नै में समापन समारोह 29.09.16 को आयोजित किया गया । श्री.एस.बि.तंपी, मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री. के. मुत्तुकृषनन, अतिरिक्त

महानिदेशक, पत्र सूचना कार्यालय चेन्नै इस समारोह के मुख्य अतिथि रहे। श्रीमती. चंद्रा रंगन, हिन्दी संपर्क अधिकारी ने सरकारी कामकाज में हिन्दी की प्रगति पर वार्षिक रिपोर्ट पेश की। इस समारोह में हिंदी भाषण, हिंदी गीत प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विजेताओं को नकद पुरस्कार वितरित किए गए। राष्ट्रीय गान के साथ समारोह समाप्त किया गया ।

प्रादेशिक मौसम केंद्र, गुवाहाटी में दिनांक 01.09.2016 से 14.09.2016 तक समारोहपूर्वक मनाया गया । हिंदी पखवाड़ा/ हिंदी दिवस 2016 के दौरान छह प्रतियोगिताएं क्रमश: निबंध लेखन प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता,तत्कालिक भाषण प्रतियोगिता, श्रुतलेख एवं सुलेख प्रतियोगिता आयोजित की गई ।

प्रा.मौ.केंद्र, गुवाहाटी में दिनांक 14.09.2016 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह समापन के दौरान उक्त छह प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए ।

खगोल विज्ञान केंद्र, कोलकाता में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2016 का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाडे के दौरान हिंदी निबंध, स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

खगोल विज्ञान केंद्र, कोलकाता में दिनांक 15.09.2016 को निदेशक महोदय श्री संजीब सेन जी की अध्यक्षता में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें प्रा.मौ.केंद्र, कोलकाता के उपमहानिदेशक डॉ. संजीब बंध्योपाध्याय, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और श्री नीलोत्पल चतुर्वेदी, कनिष्ठ अनुवादक भी उपस्थित रहे । समारोह का शुभारंभ माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी द्वारा भेजे गए संदेश पाठ पड़ने के साथ किया गया। हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2016 के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि द्वारा प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए । सभी प्रतियोगियों को उनके उत्साहवर्धन के लिए उपहार दिए गए ।

मौसम केंद्र, रांची में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2016 समारोहपूर्वक मनाया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, स्वरचित हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसका परिणाम इस प्रकार है :-

1. हिंदी निबंध प्रतियोगिता

प्रथम - श्री विवेक कुमार, वैज्ञानिक सहायक

द्वितीय - श्री पांडव कुमार, अवर श्रेणी लिपिक

तृतीय - श्री सुकुमार मित्रा, सहायक मौसम विज्ञानी-।।

प्रोत्साहन श्री आर.के.मिंज, सहायक मौसम विज्ञानी-।

3. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

प्रथम - श्री सतीश चंद्र मंडल, सहायक मौसम विज्ञानी-।।

द्वितीय - श्री मुकुन्द कुमार, अवर श्रेणी लिपक

तृतीय - श्री भरत राम, बहु कार्योपयोगी कर्मचारी

प्रोत्साहन श्री दिनेश गोप, बहु कार्योपयोगी कर्मचारी

4. हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता

प्रथम - श्री संजय कुमार सिंह, वैज्ञानिक सहायक

द्वितीय - श्री उपेन्द्र श्रीवास्तव, सहायक मौसम विज्ञानी-।।

तृतीय - श्री के.आर.आर.सिंह, सहायक मौसम विज्ञानी-।।

प्रोत्साहन श्री संजय कुमार, सहायक मौसम विज्ञानी-।।

मौसम केंद्र, रांची में दिनांक 14.09.2016 को वैज्ञानिक 'ई' श्री बी.के.मंडल की अध्यक्षता में हिंदी दिवस समारोह मनाया गया । हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को निदेशक महोदय द्वारा प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए ।

मौसम केंद्र, रांची में हिंदी पखवाड़ा 2016 पर आयोजित प्रतियोगिताओं के दौरान वहां के स्थानीय हिंदुस्तान समाचार पत्र में छपी खबर की फोटो प्रति भी प्रस्तुत की है ।

मौसम कार्यालय, इम्फाल में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2016 का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाडे के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

हिंदी मसौदा लेखन प्रतियोगिता, हिंदी सुलेख प्रतियोगिता, मौसम विषयक अंग्रेजी शब्दों का हिंदी अनुभाद (हिंदीतर भाषी के लिए) प्रतियोगिता, हिंदी आशु भाषण प्रतियोगिता, हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । परिणाम इस प्रकार रहा :-

1. हिंदी मसौदा लेखन प्रतियोगिता

प्रथम - श्री दीपांकर सिंह, वै.स.

द्वितीय - श्री विवेक कुमार, वै.स.

तृतीय - श्री मलय पाल, वै.स.

प्रोत्साहन श्री वाई.बी.सिंह, स.मौ.वि-I.

2. हिंदी सुलेख प्रतियोगिता

प्रथम - सुश्री हिमाद्रि वाकतिलाल

द्वितीय - श्री सहुब आलम

तृतीय - श्री के.एस.हरैसांग

प्रोत्साहन सुश्री केलिना

3. हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता

प्रथम - श्री राणा दास वै.स.

द्वितीय - श्री मलय पाल, वै.स.

तृतीय - श्री ओ.आर.सिंह, स.मौ.वि-II.

प्रोत्साहन श्री खुमुजाम मेगडाफ, डी.आर.एम.

4. हिंदी आशु भाषण प्रतियोगिता

प्रथम - श्री मलय पाल, वै.स.

द्वितीय - श्री राणा दास वै.स.

तृतीय - श्री खुमुजाम मेगडाफ, डी.आर.एम.

प्रोत्साहन श्री एम.आई. सिंग, स.मौ.वि-II.

मौसम कार्यालय, इम्फाल में हिंदी दिवस दिनांक 14 सितम्बर 2016 को मनाया गया।

मौसम कार्यालय, इम्फाल के प्रभारी अधिकारी, श्री एस.के. नायक, स.मौ.वि-I. की अध्यक्षता

में समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री सी.वी.शाजि, कार्यकारी निदेशक, इम्फाल हवाई अड्डा एवं विशेष अतिथि के रूप में श्री भी.एस.सुरिन, सहायक-कमांडेट एवं के.औ.सु.बल को आमंत्रित किया गया । इन पाँच प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए ।

मौसम केंद्र, अहमदाबाद में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस दिनांक 05.09.2016 से 14.09.2016 तक समारोहपूर्वक मनाया गया । मौसम केंद्र अहमदाबाद में हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता, हिंदी निबंध लेखन, हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन, हिंदी स्वरचित कविता पाठ एवं हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गई ।
मौसम केंद्र, अहमदाबाद में दिनांक 14.09.2016 को हिंदी दिवस समारोह मनाया गया जिसके दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए ।

हाईड्रोजन फैक्ट्री आगरा में दिनांक 01.09.2016 से 14.09.2016 तक हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा-2016 समारोहपूर्वक मनाया गया । हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा-2016 की अध्यक्षता श्री सलाहउद्दीन, वैज्ञानिक सहायक ने की । हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

1. हिंदी टंकण प्रतियोगिता

प्रथम	श्री अरूण शर्मा, अवर श्रेणी लिपिक
द्वितीय	श्री प्रेम सिंह, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय	श्री तारा चन्द राठौर,वैज्ञानिक सहायक
प्रोत्साहन	श्री जवाहर लाल, एम.टी.एस.

2. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

प्रथम	श्री सुरेश चन्द, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय	श्री लक्ष्मण सिंह, एम टी एस औद्योगिक
तृतीय	श्री बहादुर सिंह- प्रथम, एम टी एस औद्योगिक
प्रोत्साहन-I	श्री जयदेव सिंह, एम टी एस औद्योगिक
प्रोत्साहन-II	श्री पूरन चन्द, एम टी एस, गैर औद्योगिक

3. हिंदी अन्ताक्षरी प्रतियोगिता

प्रथम	श्री सुरेश कुमार, एम टी एस, औद्योगिक
द्वितीय	श्री बैजना, एम टी एस

4. हिंदी सुलेख प्रतियोगिता

प्रथम	श्री सुरेश चन्द, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय	श्री चन्द्रशेखर पाराशर, एम.टी.एस., बाढ मौ.कार्यालय आगरा
तृतीय	श्री जवाहर लाल, एम.टी.एस.
प्रोत्साहन-I	श्री रूप सिंह, एम टी एस

5. हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता

प्रथम	श्री हरी चन्द, एम.टी.एस.
द्वितीय	श्री तारा चद राठौर, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय	श्री चन्द्रशेखर पाराशर, एम टी एस, बाढ मौ.कार्यालय आगरा
प्रोत्साहन-I	श्री त्रिपुरारी, एम टी एस
प्रोत्साहन-I	श्री ओम प्रकाश सिंह, मैकेनिक असि.
प्रोत्साहन-I	श्री योगकन्द्र सिह, एम टी एस औद्योगिक
प्रोत्साहन-I	श्री दीवान सिंह, एम टी एस औद्योगिक

हा.फै.आगरा में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस दिनांक 14.09.2016 को मुख्य अतिथि श्री प्रकाश चन्द्र, सहायक मौसम विज्ञानी-I की अध्यक्षता में समापन समारोह मनाया गया । हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए ।

बाढ़ मौसम कार्यालय जलपाईगुड़ी में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया । बाढ मौसम कार्यालय जलपाईगुड़ी में हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता, हिंदी विलोम शब्द और पर्यायीवाची शब्द लेखन प्रतियोगिताएं अहिंदी भाषी कार्मिकों द्वारा आयोजित की गई ।

बाढ मौसम कार्यालय जलपाईगुड़ी में दिनांक 14.09.2016 को हिंदी दिवस समारोह मनाया गया जिसके दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए ।

मौसम केंद्र, बंगलुरू में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस-2016 मनाया गया । हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान निम्नलिखित हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । हिंदी दिवस समारोह का आयोजन श्री एस.एम.मैत्रि, वैज्ञानिक 'ई' की अध्यक्षता में किया गया जिसमें श्रीमती शोभा द्वारा भक्ति गीत के साथ शुरू किया और श्रीमती प्रतिभा द्वारा स्वागत भाषण किया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार वितरण किए गए ।
मौसम केंद्र, बंगलुरू ने हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के फोटो चित्र भी प्रस्तुत किए गए ।

मौसम केंद्र, रायपुर में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस दिनांक 14.09.2016 से 28.09.2016 तक समारोहपूर्वक मनाया गया । हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान हिंदी वाद विवाद, हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन, हिंदी स्वरचित कविता पाठ एवं हिंदी टंकण प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । परिणाम इस प्रकार है :-

1. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

प्रथम	श्री अखिलेश कुमार
द्वितीय	श्री आर.जी.हेडाऊ
तृतीय	श्री गोपाल राव
प्रोत्साहन	श्री राजेश मिश्रा

2. हिंदी निबंध प्रतियोगिता

प्रथम	श्री कुलदीप सिंह सिद्धू
द्वितीय	श्री एस.के.भोई
तृतीय	श्री अखिलेश कुमार
प्रोत्साहन	श्री आर.जी.हेडाऊ

3. हिंदी टिप्पण और मसौदा लेखन प्रतियोगिता

प्रथम	श्री आर.जी.हेडाऊ
द्वितीय	श्री राजेश मिश्रा

तृतीय श्री कुलदीप सिंह सिद्धू

प्रोत्साहन श्री अखिलेश कुमार

4. हिंदी स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता

प्रथम श्री राजेश मिश्रा

द्वितीय श्री अखिलेश कुमार

तृतीय श्री कुलदीप सिंह सिद्धू

प्रोत्साहन श्री एस.के.भोई एवं श्री जे.आर.साह

5. हिंदी टंकण प्रतियोगिता

प्रथम श्री राजेश मिश्रा

द्वितीय श्री आर.जी.हेडाऊ

तृतीय श्री कुलदीप सिंह सिद्धू

प्रोत्साहन श्री एस.यू.नंदनवार

मौसम केंद्र, रायपुर में दिनांक 28.09.2016 को डॉ. प्रकाश खरे, निदेशक की अध्यक्षता में हिंदी दिवस समारोह मनाया गया । हिंदी दिवस समारोह के दौरान मुख्य अतिथि वरिष्ठ शिक्षा गुणवता अभियान के व्याख्याता श्री मनहरण सिंह छत्री उपस्थित रहे । मौसम केंद्र रायपुर के डॉ. एम.राजावेल, निदेशक द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलन करके समारोह का शुभारंभ किया गया । इस समारोह में मुख्य अतिथि को डॉ. प्रकाश खरे, निदेशक द्वारा पुष्पगुच्छ, शॉल और नारियल भेंट किया गया । पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार वितरण किए गए ।

मौसम केंद्र, रायपुर में हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान दिनांक 26.09.2016 से 27.09.2016 तक दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें व्याख्यानदाताओं ने व्याख्यान दिए गए ।

मौसम केंद्र, जयपुर में दिनांक 01.09.2016 से 15.09.2016 तक हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा-2016 श्री नगराले, वैज्ञानिक 'डी' की अध्यक्षता में मनाया गया । इस समारोह के आयोजन पर मुख्य अतिथि श्री रमेश चंद गुप्ता, वैज्ञानिक 'ई' एवं निदेशक मौसम केंद्र, जयपुर की अध्यक्षता में समापन समारोह का आयोजन किया गया । हिंदी दिवस/ हिंदी पखवाड़ा-2016 के दौरान क्रमश: हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी

श्रुतलेखन प्रतियोगिता, हिंदी आशु भाषण, हिंदी रूपांतरण एवं हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, आयोजित की गई । परिणाम इस प्रकार है :-

1. हिंदी निबंध प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा

प्रथम श्री भूपेश कुलहरि

द्वितीय श्री आनंद सिंह राजावत

तृतीय श्री मुकेश चौहान

प्रोत्साहन श्री अजय भारद्वाज

2. हिंदी टंकण प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा

प्रथम श्री ओ.पी.कुमावत

द्वितीय श्री महेंद्र सिंह

तृतीय श्री रूप नारायण कुमावत

प्रोत्साहन श्री अजय भारद्वाज

3. हिंदी श्रुतलेखन

इस प्रतियोगिता के विजयी प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार **हैं**

प्रथम श्री आनंद सिंह राजावत

द्वितीय श्री विनीत अग्रवाल

तृतीय श्री रूप नारायण कुमावत

प्रोत्साहन श्री मुकेश चौहान

4. हिंदी आशु भाषण

इस प्रतियोगिता के विजयी प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं

प्रथम श्री विनीत अग्रवाल

द्वितीय श्री रूप नारायण कुमावत

तृतीय श्री मनोज कुमार वर्मा

प्रोत्साहन श्री अजय भारद्वाज

5. हिंदी रूपांतरण

इस प्रतियोगिता में नीचे लिखे प्रतियोगी विजयी रहे

प्रथम श्री भूपेश कुलहरि

द्वितीय श्री आनंद सिंह राजावत

तृतीय श्री मनोज कुमार वर्मा

प्रोत्साहन श्री विनीत अग्रवाल

6. हिंदी वाद-विवाद

इस प्रतियोगिता में निम्नलिखित प्रतियोगी विजयी रहे

प्रथम श्री भूपेश कुलहरि

द्वितीय श्री मनोज कुमार वर्मा

तृतीय श्री विनीत अग्रवाल

प्रोत्साहन श्री विजय घई

मौसम केंद्र, जयपुर में दिनांक 15.09.2016 को समापन समारोह आयोजित किया गया । समापन समारोह के दौरान प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि महोदय द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए ।

मौसम केंद्र,भोपाल में दिनांक 01.09.2016 से 14.09.2016 तक हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2016 समारोहपूर्वक मनाया गया । हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2016 के दौरान नीचे लिखी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई ।

1. **स्वरचित हिंदी कविता पाठ : -** यह प्रतियोगिता दिनांक 01.09.2016 को आयोजित की गई ।

संयोजक :- श्री ए.के.दास, मौ.वि.'ए'

प्रथम सुश्री अपूर्वा सिंहरौल

द्वितीय श्री के.के.देवांगन

तृतीय श्री आर के सिंह

2. **हिंदी निबंध : -** यह प्रतियोगिता दिनांक 02.09.2016 को आयोजित की गई ।

संयोजक :- श्री योगेश श्रीवास्तव, मौ.वि.'ए'

प्रथम श्रीमती सुरभि पुरोहित

द्वितीय श्री सुमित परौहा

तृतीय श्री विवेक पाण्डेय

3. **हिंदी अंताक्षरी : -** यह प्रतियोगिता दिनांक 06.09.2016 को आयोजित की गई ।

संयोजक :- श्री आर.के.अग्रवाल एवं श्री आर.के.सिंह

प्रथम श्रीमती सुरभि पुरोहित

द्वितीय श्री उदय सर्वटे

तृतीय श्री योगेश श्रीवास्तव एवं श्रीमती प्रीति श्रीवास्तव

4. **हिंदी तात्कालिक भाषण : -** यह प्रतियोगिता दिनांक 09.09.2016 को आयोजित की गई ।

संयोजक :- श्री आर.एम.शेवरे, मौ.वि.'ए'

प्रथम डॉ जी.डी. मिश्रा,

द्वितीय श्री प्रदीप गुप्ता,

तृतीय श्री राजेश अग्रवाल,

5. **हिंदी गीत गायन : -** यह प्रतियोगिता दिनांक 09.09.2016 को आयोजित की गई ।

संयोजक :- श्री ए.के.दास, मौ.वि.'ए'

प्रथम श्री अशीमदास

द्वितीय श्री आर.आर.त्रिपाठी

6. **हिंदी शुद्ध लेखन : -** यह प्रतियोगिता दिनांक 09.09.2016 को आयोजित की गई ।

संयोजक :- श्री के.के.देवांगन, मौ.वि.'ए'

प्रथम श्री हरीशंकर पाण्डेय

द्वितीय सुश्री अपूर्वा सिंहरौल

तृतीय श्री शैलेन्द्र नायक

7. **हिंदी प्रश्नोत्तरी : -** यह प्रतियोगिता दिनांक 12.09.2016 को आयोजित की गई ।

संयोजक :- डॉ. जी.डी.मिश्रा, मौ.वि.'ए'

प्रथम श्री विवेक छलोत्रे

द्वितीय श्री सुमित परौहा

तृतीय श्री आर.के.सिंह

मौसम केंद्र, भोपाल में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस दिनांक 14.09.2016 को समापन समारोह मनाया गया । समापन समारोह के दौरान मुख्य अतिथि तथा डॉ अनुपम कश्यपि, निदेशक, मौसम केंद्र की अध्यक्षता में सर्वप्रथम द्वीप प्रज्जवलन करके समारोह का शुभारंभ किया गया । सरस्वती वंदना का गायन श्री यू.एम.सर्वटे द्वारा किया गया । डॉ अनुपम कश्यपि, निदेशक अध्यक्ष द्वारा माननीय गृह मंत्री राजनाथ जी का संदेश पढ़कर सुनाया । स्वागत भाषण जी.डी. मिश्रा, हिंदी संपर्क अधिकारी द्वारा पढ़ा गया । कार्यक्रम का संचालन

श्रीमती सुरभि पुरोहित एवं मिस अपूर्वा सिंहरौल द्वारा किया गया । हिंदी पखवाड़े का समापन डॉ. जी.डी.मिश्रा संपर्क हिंदी अधिकारी द्वारा किया गया । मुख्य अतिथि तथा अध्यक्ष महोदय द्वारा विजेताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए ।

पवन सूचक गुब्बारा वेधशाला- वेरावल में हिंदी दिवस दिनांक 14.09.2016 को समारोहपूर्वक मनाया गया । हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ और काव्य गोष्ठी आयोजित की गई ।

मौसम केंद्र -गंगटोक में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस हमेशा की तरह उत्साह और जोश के साथ समारोहपूर्वक मनाया गया ।

प्रभारी निदेशक मौसम केंद्र -गंगटोक ने हिंदी दिवस के अवसर पर सभी कार्मिकों से अधिकतम कार्य हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित किया । हिंदी पखवाड़ा 2016 के दौरान हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन, हिंदी निबंध,हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई ।

खास खबर

सम्मान

- महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने दिनांक 14 सितम्बर, 2016 को राष्ट्रपति भवन में मौसम - मंजूषा के 22वें संस्करण में प्रकाशित डॉ एस. के. पेशिन वैज्ञानिक 'जी के लेख "अंटार्कटिका पर ओज़ोन" को हिंदीत्तर भाषी वर्ग में *राजभाषा गौरव सम्मान* *(तृतीय)* प्रदान किया । यह पूरे विभाग के लिए अत्यंत गर्व की बात है।

- महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने दिनांक 14 सितम्बर, 2016 को राष्ट्रपति भवन में मौसम - मंजूषा के 22वें संस्करण में प्रकाशित श्री रामहरि शर्मा, वैज्ञानिक सहायक के लेख "वायुमंडल की सैर" को हिंदी भाषी वर्ग में राजभाषा गौरव पुरस्कार (तृतीय) प्रदान किया। यह पूरे विभाग के लिए अत्यंत गर्व की बात है।

खास खबर

- प्रादेशिक मौसम केंद्र- नागपुर को नगर राजभाषा कार्यावयन समिति (का-2), नागपुर , गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2015-16 में प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "ऋतु रंग" के लिए *विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार* प्रदान किया गया ।

- प्रादेशिक मौसम केंद्र- नागपुर को नगर राजभाषा कार्यावयन समिति (का-2), नागपुर , गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2015-16 में राजभाषा कार्यावयन के लिए *विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार* प्रदान किया गया ।

संसदीय निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति द्‌वारा निरीक्षण

➢ माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्‌वारा दिनांक 10 सितम्बर 2016 को मौसम केंद्र हैदराबाद का निरीक्षण किया गया। यह निरीक्षण डॉ सत्यनारायण जटिया जी की अध्यक्षता में हुआ।

इस निरीक्षण में मौसम केंद्र हैदराबाद की ओर से श्री वाई . के रेड्डी , वैज्ञानिक 'एफ' और प्रादेशिक मौसम केंद्र-चेन्नै से श्री एस. बी तम्पी , वैज्ञानिक 'एफ' ने भाग लिया तथा डॉ. देवेन्द्र प्रधान वैज्ञानिक 'जी' और वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय नई दिल्ली की ओर से भाग लिया। इस निरीक्षण के दौरान वरिष्ठ अनुवादक श्रीमती एम. अनुराधा भी उपस्थित रही ।

श्री लक्ष्मी नारायण यादव, सांसद - लोकसभा का स्वागत करते हुए
श्री वाई . के रेड्डी , वैज्ञानिक 'एफ' मौसम केंद्र हैदराबाद

निरीक्षण के दौरान अधिकारीगण

मौसम केंद्र हैदराबाद द्वारा तैयार प्रदर्शनी

➢ माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 16 सितम्बर,2016 को विमानन मौसम कार्यालय चेन्नै का निरीक्षण तिरूपति में किया गया । यह निरीक्षण डॉ सुनील बलीराम गायकवाड की अध्यक्षता में हुआ।

डॉ सुनील बलीराम गायकवाड का स्वागत करते हुए श्री एस.बी तम्पी, वैज्ञानिक 'एफ'

डॉ सुनील बलीराम गायकवाड निरीक्षण की अध्यक्षता करते हुए

इस निरीक्षण में मौसम कार्यालय - चेन्नै की ओर से श्री पी. ए. वासुदेवन नम्पूतिरि , वैज्ञानिक 'डी' और प्रादेशिक मौसम केंद्र-चेन्नै से श्री एस. बी तम्पी , वैज्ञानिक 'एफ' ने भाग लिया तथा मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय नई दिल्ली की ओर से महानिदेशक महोदय डॉ. के. जे. रमेश और वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने भाग लिया। इस निरीक्षण के दौरान हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी भी उपस्थित रही ।

निरीक्षण के दौरान अधिकारीगण

मौसम कार्यालय - चेन्नै द्वारा तैयार प्रदर्शनी

➢ माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 15.10.2016 को प्रादेशिक मौसम केंद्र, कोलकाता का निरीक्षण किया गया । यह निरीक्षण डॉ प्रसन्न कुमार पाटसाणी जी की अध्यक्षता में हुआ।

डॉ प्रसन्न कुमार पाटसाणी जी अध्यक्षता करते हुए

निरीक्षण के दौरान अधिकारीगण

इस निरीक्षण में प्रादेशिक मौसम केंद्र, कोलकाता की ओर से श्री संजीब बंद्योपाध्याय, वैज्ञानिक 'एफ' ने भाग लिया तथा मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय नई दिल्ली की ओर से महानिदेशक महोदय डॉ. के. जे. रमेश और वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने भाग लिया। इस निरीक्षण के दौरान हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी भी उपस्थित रही ।

निरीक्षण के उपरांत अधिकारीगण

राजभाषयी निरीक्षण

उपकार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण

➢ वरिष्ठ हिंदी अधिकारी और हिंदी अधिकारी द्वारा दिनांक 17.10.2016 से 18.10.2016 तक कोलकाता स्थित कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण किया गया ।

➢ दिनांक 18.10.2016 को खगोल विज्ञान केंद्र, कोलकाता में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी ने 'कम्प्यूटर और हिंदी - सुविधाएं एवं उपयोग' विषय पर प्रेजेंटेशन दिया । कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण दिया गया ।

खगोल विज्ञान केंद्र, कोलकाता में हिंदी कार्यशाला

➢ मुख्यालय द्वारा दिनांक 15.12.2016 से 16-12-2016 तक को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें मुख्यालय की वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने ' राजभाषा हिंदी और मानक वर्तनी' पर, श्रीमती एम. अनुराधा वरिष्ठ अनुवादक ने 'वार्षिक कार्यक्रम' तथा वरिष्ठ अनुवादक श्री बीरेंद्र कुमार ने राजभाषा हिंदी की प्रगामी प्रयोग से संबंधित रिपोर्टों को भरने संबंधी विषयों पर व्याख्यान दिए।

हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी ने 'कम्प्यूटर और हिंदी - सुविधाएं एवं उपयोग' विषय पर प्रेजेंटेशन दिया तथा कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को कम्प्यूटर पर "वॉयस टाइपिंग" के माध्यम से हिंदी में काम करने का प्रशिक्षण दिया गया । इस कार्यशाला में 22 कार्मिकों ने भाग लिया ।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय

टूटे पे फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय ।

❖ *रहीम*

आपकी पाती मिली

आपके दिनांक 10 अक्तूबर 2016 के पत्रांक हिंदी-9/16/16 के साथ संलग्न हिंदी गृह पत्रिका 'मौसम मंजूषा' के 23वें संस्करण की प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका की नवीनतम प्रति भेजने के लिए धन्यवाद।हिंदी में अधिकाधिक कार्यालयीन कार्य को प्रोत्साहन देने के लिए तथा राजभाषा के माध्यम से वैज्ञानिक उपलब्धियों के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से उपर्युक्त पत्रिका का प्रकाशन एक प्रशंसनीय कार्य है। पत्रिका में दिए गए लेख एवं कविताएं विविधता से पूर्ण हैं तथा कुछ तकनीकी लेख अत्यंत ज्ञानवर्धक हैं। यदि तकनीकी लेखों में प्रयुक्त शब्दावली को भारत सरकार की मानक शब्दावली के अनुसार रखा जाए तो इससे पत्रिका अधिक गुणवत्तापूर्ण और स्तरीय हो सकेगी।राजभाषा हिंदी से संबंधित रचनाओं तथा गतिविधियों के चित्रों के समावेश से पत्रिका की रोचकता में और भी वृद्धि हुई है। 'मौसम मंजूषा' के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारी एवं कर्मचारी बधाई के पात्र हैं।आशा है कि आप निरंतर हिंदी में इस पत्रिका का प्रकाशन कराती रहेंगी।

संजय चौधरी

सदस्य सचिव, राकास व प्रभारी

केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान

नई दिल्ली-25

भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा प्रकाशित 'मौसम मंजूषा' के 23वें संस्करण की प्रति भेजने के लिए हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी वैज्ञानिक, तकनीकी और मनोरंजक लेखों को पढ़कर हृदय ज्ञान रूपी अमृत से भर जाता है और मन आनन्द की पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है। उसके ऊपर काव्य फुहार की वर्षा से मन रूपी गंगा शान्त और स्थिर हो जाती है। मन को इस आनन्द की पराकाष्ठा तक पहुँचाने वाली मौसम मंजूषा को इतने उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत करने के लिए मैं हिंदी अनुभाग के कर्मचारियों, हिंदी अधिकारियों, उपमहानिदेशक (प्रशासन एवं भंडार) और महानिदेशक महोदय को धन्यवाद और बधाई देता हूँ।

महोदय इस उच्चकोटि की ज्ञान-विज्ञान वाली पत्रिका के माध्यम से वैज्ञानिकों/ विशेषज्ञों (विभिन्न विषयों के विद्वानों), कवियों और लेखकों द्वारा भारत की राजभाषा का सदुपयोग किया जा रहा है जिससे उनकी महान योग्यताओं और प्रतिभाओं के प्रकाश से अज्ञानान्धकार का नाश हो रहा है। हिंदी में छपने के कारण ही इन पत्रिकाओं के ज्ञान विज्ञान से देश का प्रत्येक नागरिक लाभान्वित हो सकता है और प्रत्येक नागरिक के लाभान्वित होने से ही देश सुख, शान्ति और शक्ति से सम्पन्न हो सकता है, ऐसी समृद्धि के लिए देश के नागरिकों द्वारा सभी प्रकार का सरकारी और गैर-सरकारी कार्य भारत की राजभाषा हिंदी में होना अनिवार्य है। यही भाषा देश के प्रत्येक राज्य और नागरिक को मनकों की तरह एक सूत्र में पिरोये हुए है, देश की अखण्डता, एकता और विकास की आधारशिला है। ऐसा मैं समझता हूँ, इसलिए मौसम विभाग के विभिन्न विषयों के विद्वानों का तत्वज्ञान हिंदी में लिख कर, मौसम मंजूषा में शामिल करने के लिए, मुख्यालय को भेजने की महान कृपा करते रहें जिससे इस महान देश की जनता आपके ज्ञान से लाभान्वित हो सके। पत्रिका की उत्त्रोतर सफलता, उन्नति और लोकप्रियता की कामना करता हूँ। शुभकामनाओं सहित धन्यवाद।

जयानन्द भट्ट
पूर्व सहायक
भारत मौसम विज्ञान विभाग
पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखंड)
फोन नं- 09675365910

आपके द्वारा प्रेषित मौसम मंजूषा पत्रिका का 23वाँ संस्करण प्राप्त कर अति प्रसन्नता हुई। उसके लिए हार्दिक धन्यवाद एवम् शुभकामनाएँ। मुझे पत्रिका को करीब 7-8 वर्ष बाद पढ़ने का मौका मिला है। पत्रिका का मुख पृष्ठ और चित्र काफी सुंदर और रंगीन दिए गए हैं, इससे पत्रिका की सुंदरता को चार चाँद लग गए हैं। ज्ञान-विज्ञान की सामग्रियों से सुसज्जित पत्रिका छोड़ने का मन ही नहीं करता, जब तक कि पूरा लेख, कविता पढ़ न ली जाए। पत्रिका के सभी लेख पठनीय हैं।डॉ. गुरूदत्त मिश्रा का लेख 'सूर्य नमस्कार' आज के व्यस्त जीवन में मानव कल्याण व सुखद जीवन जीने की पुरानी परम्परा, आसन, मुद्रा,प्राणायाम को बहुत ही सुंदर व व्यवस्थित चित्र द्वारा दर्शाया गया है। उक्त अंक ज्ञानवर्धन करने में सक्षम है जिसके लिए सभी लेखक एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन में योगदान देने वाले कार्मिक बधाई

के पात्र हैं, जिन्होंने पत्रिका को संग्रहणीय स्वरूप प्रदान किया है। पत्रिका की उत्तरोत्तर सफलता व उन्नति की कामना करती हूँ। पत्रिका के आगामी अंक की प्रतीक्षा में ।

शुभकामनाओं सहित

शालिनी मखीजा

पूर्व प्रशासनिक अधिकारी

मौ.वि.उ.म.नि(उ.वा.उ.)

फोन नं- 09968264472

आपके विभाग की हिंदी गृह पत्रिका 'मौसम मंजूषा' के 23वें संस्करण की एक प्रति अकादमी को प्राप्त हो गई है। उक्त पत्रिका का अध्ययन किया गया। इसमें सम्मिलित सभी कृतियाँ अच्छी लगी। पत्रिका की लगभग सभी रचनाएँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मौसम विज्ञान और तकनीकी, सहित्य एवम् राजभाषा से जुड़ी हुई लगती हैं जो आपके विभाग की गरिमा को बढ़ाती हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख प्रेरणादायक, रोचक, ज्ञानवर्धक, विषयस्पर्शी एवं मर्मस्पर्शी हैं। जिससे आपके विभाग के स्टाफ सदस्यों का ज्ञान और हिंदी प्रेम झलकता है। हम आशा करते हैं कि आप आगे भी इस पत्रिका के आगामी अंक भी हमें भेजते रहेंगे।

जगदीश कुमार

अनुभाग अधिकारी

(अनुवाद एवं राजभाषा)

भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी

बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली

इस कार्यालय में विभागीय गृह पत्रिका 'मौसम मंजूषा' के 23वें संस्करण की प्रति प्राप्त हुई। इस कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने पत्रिका में गहरी रूचि दिखाई है।

एस. के. नायक

मौसम विज्ञानी- 'ख'

मौसम कार्यालय- इम्फाल

26 सितंबर 2016
मैं आपकी अपनी हूँ, सरल हूँ, सहज हूँ
2016

हिंदी दिवस

हिंदी दिवस

हिंदी दिवस

हिंदी दिवस

मौसम मंजूषा

संस्करण-24 वर्ष:2016-17

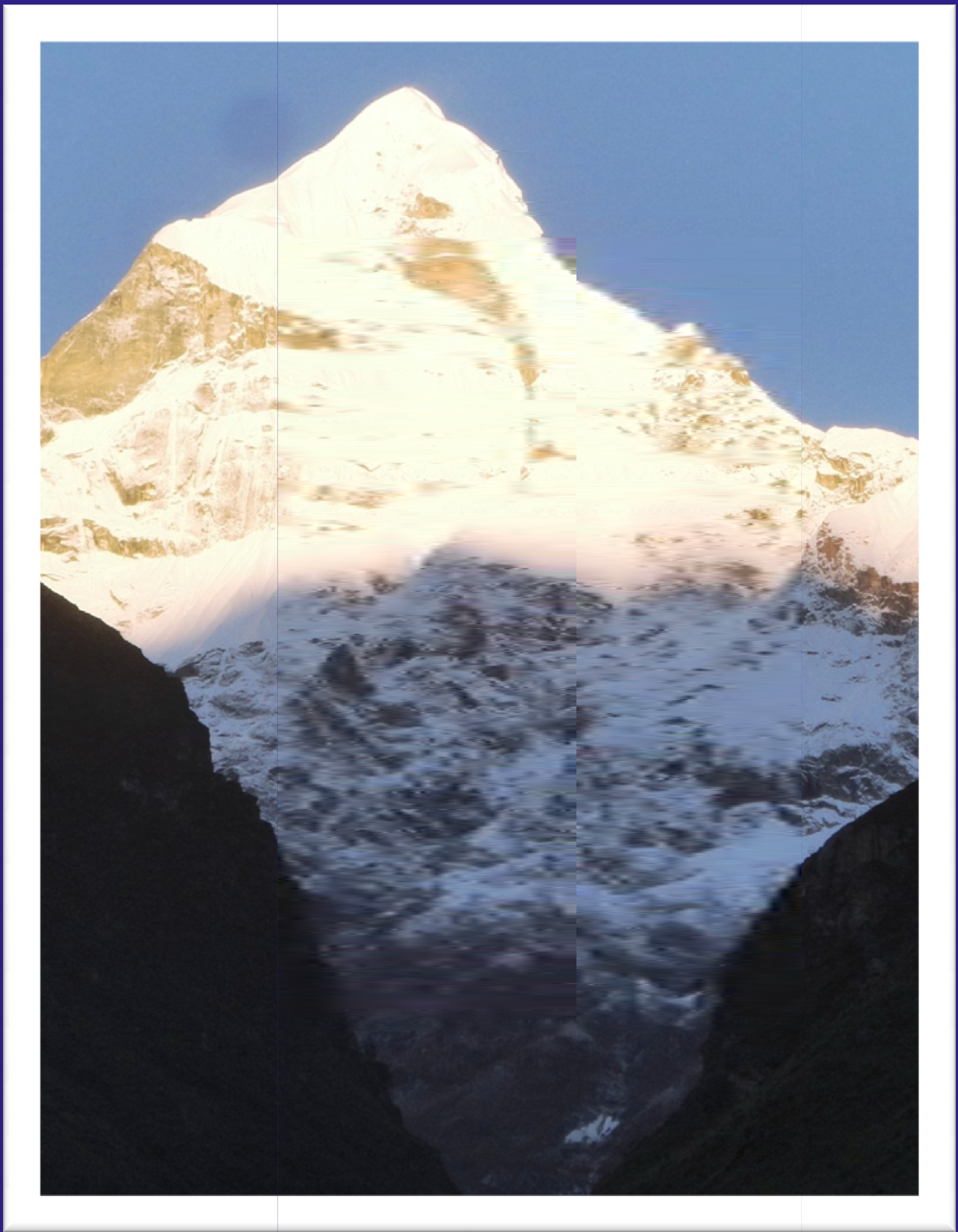

प्रकाशक

हिंदी अनुभाग

भारत मौसम विज्ञान विभाग

लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003